लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–16

अरब की लोक कथाऐं

सिद्दी कुर की कहानियों के साथ

चार्ल्स जौन टिबिट्स

1889

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

जून 2019

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-16
Book Title: Araba Ki Lok Kathayen (Folktales of Orient)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of Arabia

विंडसर, कैनेडा
जून 2019

Contents

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुईं और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र करके 2000 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। इनमें से भी सब पुस्तकों का अनुवाद नहीं मिलता और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में निम्न प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें और
2. 19वीं सदी और उससे पहले की लोक कथाओं की पुस्तकें

ये पुस्तकें पुस्तकों के रूप में ही अनुवादित हैं लेकिन कवर टू कवर नहीं। उनमें लिखी हुई केवल कहानियों का अनुवाद किया गया है।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

---

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
ऐप्रिल **2019**

अरब देश की लोक कथाऐं

ये लोक कथाऐं एक पुस्तक का अनुवाद है।[2] ओरियन्टल में अरब ईरान ईराक आदि देश आते हैं। इस पुस्तक के लेखक चार्ल्स जौन टिबिट्स अपनी इस पुस्तक के परिचय में लिखते हैं कि पूर्वीय देशों का लोक साहित्य बहुत समृद्ध है। वहाँ इसको ढूँढने या खोजने की जरूरत नहीं है बल्कि यह इतना ज़्यादा है कि उसमें से चुनना एक समस्या है। जिन हालातों में वहाँ लोग रहते हैं वहाँ उनकी पुरानी कहानियाँ बड़ी अच्छी तरह से संरक्षित हैं। उनके कहने का ढंग भी पश्चिम में कहने के ढंग से बहुत ज़्यादा अच्छा है। हालाँकि पूर्वीय और पश्चिमीय लोक साहित्य में काफी समानताऐं भी है पर फिर भी पूर्वीय लोक कथाऐं उनसे बहुत अलग हैं। इनमें तो कल्पना कूट कूट कर भरी पड़ी है। टिबिट्स की यह पुस्तक अंग्रेजी में यहाँ पढ़ी जा सकती है।[3]

जैसा कि देखने से पता चलता है कि यह पुस्तक बहुत पुरानी लिखी गयी है – सन् 1889 में। इस पुस्तक की कथाऐं फारस देश के आसपास के देशों की लोक कथाओं से ली गयी हैं। ये सारी लोक कथाऐं 1890 से ले कर 1905 तक के समय में एक सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित की गयी थी जिनमें इनके लेखकों का नाम नहीं था। पर इसकी भूमिका में सी जे टी जो लिखा हुआ पाया जाता है उसको यकीनन चार्ल्स जौन टिबिट्स से जोड़ा जा सकता है। बाद में ये कथाऐं ओरियन्टल मिथ्स ऐन्ड लैजैन्ड्स[4] के नाम से प्रकाशित की गयीं।

इनके पढ़ने से पता चलता है कि ये अरब फारस भारत और कालमिक[5] जगहों से आयी हुई हैं और इस्लाम, हिन्दू, बुद्ध और ज़ोरोस्ट्रियन धर्मों से सम्बन्धित है।

इसमें एक भाग है "सिद्दी कुर की कहानियाँ" का। वे बुद्धों के काल्मिक लोगों से आयी हैं जो आजकल कैस्पियन सागर के पश्चिमी किनारे पर रहते हैं और जो तिब्बत और मंगोलिया से बड़े मजबूत सम्बन्धों से जुड़े हुए हैं। ये कहानियाँ पहली बार इसी पुस्तक में देखी गयी हैं और यहाँ पहली बार हिन्दी में अनुवाद कर के दी गयी हैं।[6] इसमें एक कमी है कि इसकी शुरू की कथा में लिखा हे कि सिद्दी कुर ने 15 कहानियाँ सुनायीं पर इसमें कुल 11 कहानियाँ ही दी हुई हैं। मुझे पता नहीं इसकी बची हुई चार कहानियाँ और फिर आखिरी कहानी कहाँ मिलेगी। अगर किसी को कहीं मिलें तो हमें सूचित अवश्य करें। हम आपको आभारी रहेंगे। ये कहानियाँ मिलना बहुत दुर्लभ है और हिन्दी में तो मिलना असम्भव सा है।

ये कथाऐं बहुत शिक्षाप्रद हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को सीख देने के अलावा तुम लोगों का भरपूर मनोरंजन भी करेंगी।

---

[2] "Folk-lore and Legends : Oriental", by Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. 1889.
13 Folktales. Available on the following Web Site :
https://www.worldoftales.com/Oriental_folktales.html AND
http://www.sacred-texts.com/asia/flo/index.htm AND
https://fairytalez.com/cobbler-astrologer/ presented in a different order

[3] http://onlinebooks.library.upenn.edu/webbin/book/lookupname?key=Tibbitts%2C%20Charles%20John

[4] Oriental Myths and Legends

[5] Arab, Persia, India and Kalmyk

[6] [My Note : This is the first translation of Ssidi Kur Tales in Hindi. These tales are similar to our Indian Vikram Betal tales.
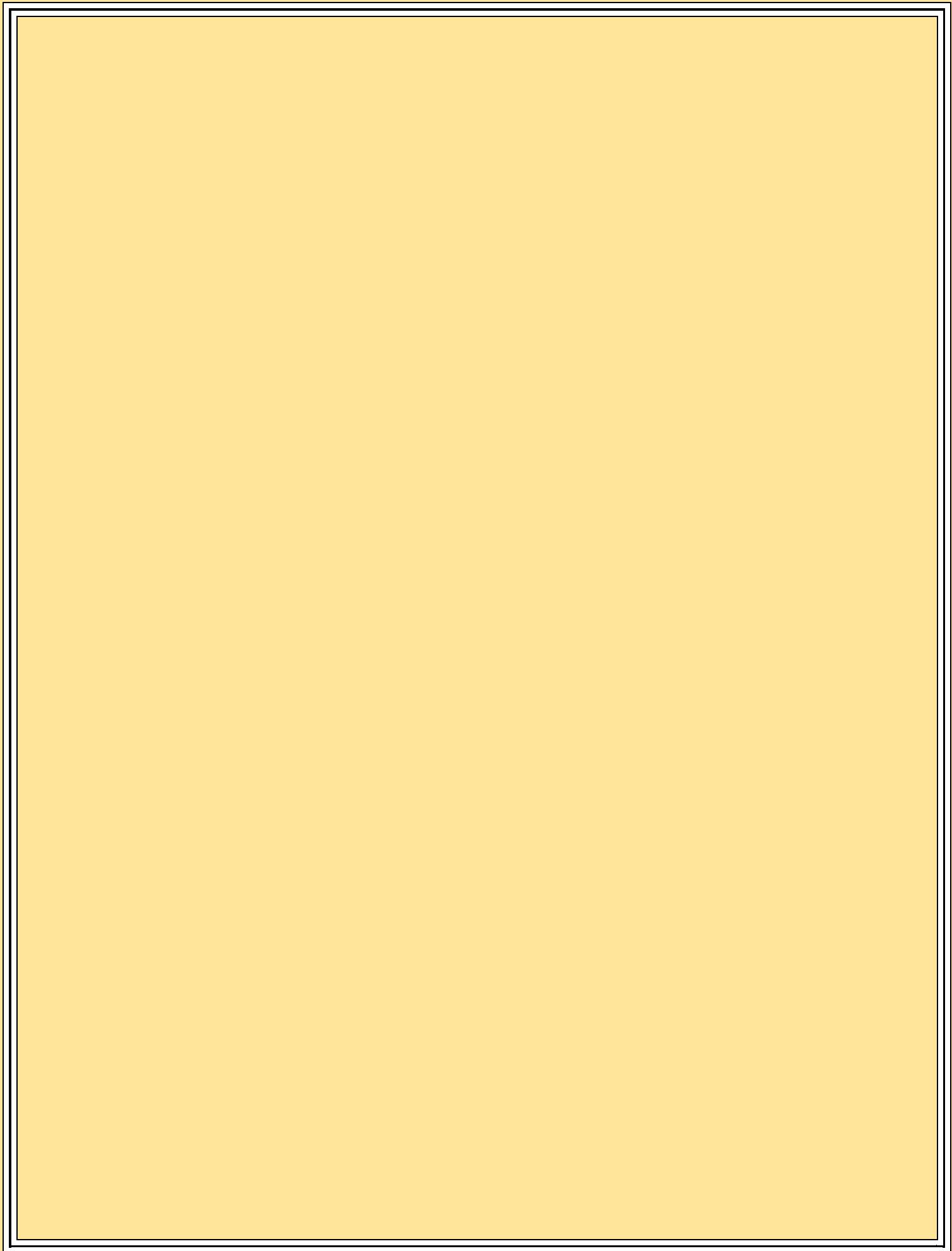
1 चमार ज्योतिषी[7]

एक बार की बात है कि इस्फाहान शहर में अहमद नाम का एक चमार रहता था। उसकी इच्छा बस यही थी कि वह अपनी ज़िन्दगी शान्ति से गुजारे और उसने ऐसा कर भी लिया होता अगर उसने एक बहुत सुन्दर लड़की से शादी न कर ली होती तो।

उस लड़की का नाम सितारा था। सितारा ने भी अहमद से शादी अपनी इच्छा से कर तो ली थी पर वह उसके सादगी भरे तरीके से रहने से सन्तुष्ट नहीं थी। वह हमेशा ही अमीर बनने के लिये और अच्छी तरह से रहने के लिये कोई न कोई बेवकूफी भरी चाल सोचती रहती।

अहमद ने भी हालाँकि उसको कभी इन चालों के लिये कोई बढ़ावा नहीं दिया पर क्योंकि वह उसको बहुत प्यार करता था तो वह उसके लिये कुछ भी करने के लिये तैयार रहता था जिसमें उसको खुशी मिले। वह उससे लड़ना बिल्कुल भी नहीं चाहता था।

एक प्यारी सी मुस्कुराहट और हाँ में सिर हिलाना ही उसके रोज के सपनों का जवाब रहता। वह खुद हमेशा ही यह सोचती थी कि वह बहुत अमीरी के लिये बनी हुई थी।

---

[7] Cobbler Astrologer (Tale No 1) – a folktale from Persia, Asia.

एक दिन ऐसा हुआ कि यही सोचते सोचते वह हमाम[8] में नहाने गयी तो वहाँ उसने एक स्त्री को बहुत ही आलीशान पोशाक और गहने पहने देखा। वह स्त्री अपनी कई दासियों से घिरी हुई थी। उसको देख कर वह उसकी तरफ देखती ही रह गयी। सितारा हमेशा से ही इस तरीके से रहना चाहती थी।

सो जैसे ही उसने उसे देखा तो उसने उसका नाम जानने की कोशिश की जो इतना गहना पहने हुए थी और जिसकी इतनी सारी दासियाँ थीं। पूछने पर पता चला कि वह तो राजा के मुख्य ज्योतिषी की पत्नी थी।

यह सुन कर वह घर लौट आयी। उसका पति घर के दरवाजे पर ही खड़ा था। वह आते ही उसके ऊपर गुस्से से बरस पड़ी।

अहमद बेचारे ने उसे बहुत बार प्यार से सहलाया मनाया ताकि वह उसके चहरे पर मुस्कुराहट ला सके या उससे कुछ मीठे शब्द बुलवा सके पर घंटों तक वह चुप ही बैठी रही जैसे उसके ऊपर दुख का कोई बहुत भारी पहाड़ टूट पड़ा हो।

आखिर वह बोली — "यह सहलाना वहलाना छोड़ो जब तक कि तुम मुझे इस बात का सबूत न दे दो कि तुम मुझे बहुत प्यार करते हो।"

[8] Hamaam means "Bathroom" where people take shower or bath.

अहमद बेचारा यह सुन कर सन्न रह गया। वह बोला — "क्या सबूत। प्यार का तुम्हें ऐसा क्या सबूत चाहिये जो मैं तुम्हें नहीं दे सकता।"

सितारा बोली — "तुम अपना यह चमार वाला धन्धा छोड़ दो यह बहुत ही नीचा और गन्दा काम है। इसके अलावा इसमें तुमको पैसा भी बहुत कम मिलता है – रोज केवल **10–12** दीनार बस। तुम अब ज्योतिषी का काम करना शुरू कर दो। उससे तुम्हारी किस्मत भी बन जायेगी और मेरी भी इच्छाऐं पूरी हो जायेंगी और मैं भी खुश रहूँगी।"

अहमद बोला — "क्या कहा तुमने ज्योतिषी? क्या तुम यह भूल गयी हो कि मैं कौन हूँ? मैं चमार हूँ। क्या तुम यह चाहती हो कि बिना कुछ पढ़े लिखे मैं एक ऐसा धन्धा करूँ जिसमें बहुत कुछ पढ़ने लिखने और सीखने की जरूरत होती है।"

पत्नी गुस्से में भर कर बोली — "मुझे इस बात की चिन्ता नहीं है कि तुम कितना पढ़े लिखे हो। मैं तो बस इतना जानती हूँ कि अगर तुमने तुरन्त ही ज्योतिषी काम शुरू नहीं किया तो बस समझ लो कि मैं कल ही तुमसे तलाक ले लूँगी।"

चमार ने उसको बहुत समझाने की कोशिश की कि वह अपनी इस हालत से ज्योतिषी कभी नहीं बन सकता पर सब बेकार। सितारा गहनों से सजी हुई और दासियों से घिरी हुई ज्योतिषी की पत्नी की सूरत अपने दिमाग से निकाल ही नहीं पा रही थी।

सारी रात वह उसी के बारे में सोचती रही। वह सपने में भी वही देखती रही। सुबह को जब वह उठी तो उसने बोल दिया कि अगर उसके पति ने उसकी बात नहीं मानी तो वह उस दिन घर छोड़ कर चली जायेगी।

अब बेचारा अहमद क्या करे। वह कोई ज्योतिषी तो था नहीं पर वह अपनी पत्नी को बहुत ज़्यादा प्यार करता था। वह तो सपने में भी उसे अलग रहने की नहीं सोच सकता था। सो उसने उससे कहा कि वह उसकी बात मानेगा।

उसके पास जो कुछ भी थोड़ा बहुत सामान था वह उसने बेचा और उसे बेच कर एक पंचांग खरीदा **12** ग्रहों की एक लिस्ट खरीदी और ज्योतिष से सम्बन्धित कुछ और चीज़ें खरीद कर वह बाजार चला गया।

वहाँ बैठ कर वह आवाज लगाने लगा — "मैं ज्योतिषी हूँ मैं ज्योतिषी हूँ मैं सूरज को जानता हूँ मैं चाँद को जानता हूँ मैं तारों को जानता हूँ। मैं **12** राशियों को जानता हूँ। मैं सबका स्वभाव बता सकता हूँ। मैं वह सब बता सकता हूँ जो होने वाला है।"

अहमद चमार को सब लोग जानते थे सो बहुत जल्दी ही उसके चारों तरफ भीड़ जमा हो गयी।

एक बोला — "अरे यह क्या दोस्त अहमद। क्या तुम्हारा दिमाग घूम गया है?"

दूसरा बोला — "क्या तुम नीचे देखते देखते थक गये हो जो अब तुम ऊपर आसमान के ग्रहों को देखने लग गये हो।"

बेचारे चमार के कानों में ऐसे और ऐसे कई और मजाक पड़ने लगे। वह इतना सीधा था कि उसको ये मजाक समझ में भी नहीं आये सो वह कहता ही रहा कि वह एक ज्योतिषी है। उसने सोच रखा था कि वह अपनी पत्नी को खुश करने के लिये कुछ भी करेगा।

एक दिन उधर से राजा का जौहरी गुजर रहा था। वह बहुत परेशान था क्योंकि उससे राजा के ताज में लगने वाला कीमती लाल[9] खो गया था। वह उसको सारे में ढूँढ चुका था पर वह उसको कहीं मिल ही नहीं रहा था।

जौहरी को यह भी पता था कि वह इस बात को राजा से बहुत देर तक नहीं छिपा सकता था सो उसको लग रहा था कि अब उसकी मौत निश्चित थी। इसी नाउम्मीदी की हालत में जब वह शहर में घूम रहा था तो वह अहमद के पास लगी भीड़ के पास पहुँचा और उसने भीड़ से पूछा कि क्या बात थी।

भीड़ में से एक आदमी हँसते हुए बोला — "तुम अहमद चमार को तो जानते हो न। उसको कहीं से प्रेरणा मिल गयी है तो वह अपना चमार का काम छोड़ कर ज्योतिषी बन गया है।"

---

[9] Translated for the word "Ruby" – it is one of the nine precious gems – see its picture above.

डूबते को क्या चाहिये तिनके का सहारा। जौहरी ने जैसे ही "ज्योतिषी" शब्द सुना तो वह अहमद के पास चल दिया।

उसके पास जा कर उसने उसको अपनी उलझन बतायी और कहा — "अगर तुमको अपनी विद्या आती है तो तुम मेरे लाल का पता बता दोगे। तुम उसका पता बता दो मैं तुम्हें सोने के **200** मुहरें दूँगा। और अगर छह घंटे के अन्दर अन्दर तुम उसका पता न बता पाये तो मैं दरबार में अपना सारा ज़ोर यह साबित करने में लगा दूँगा कि तुम ज्योतिषी व्योतिषी कुछ नहीं हो बस एक धोखा देने वाले हो।"

यह सुन कर तो अहमद के ऊपर जैसे बिजली गिर पड़ी। वह तो बस बिना हिले डुले बिना बोले खड़ा का खड़ा रह गया। वह अपनी बदकिस्मती के बारे में सोच सोच कर दुखी हो गया।

वह अपनी पत्नी के बारे में सोचने लगा जिसको वह इतना प्यार करता था और जिसने अपनी जलन और स्वार्थ के लिये उसको आज वहाँ ला कर खड़ा कर दिया था। और जिसको खुश करने की वजह से आज वह इस मुसीबत में पड़ गया था।

यह सब सोचते सोचते उसके मुँह से ज़ोर से निकला — "ओ स्त्री। तू आदमी के लिये खुशी लाने की बजाय उसके लिये रेगिस्तान के जहरीले साँप से भी ज़्यादा खतरनाक है।"

अब हुआ क्या कि राजा का लाल जौहरी की पत्नी ने चुराया था। अपनी इस चोरी का उसको बहुत पछतावा हुआ तो उसने अपनी एक दासी को अपने पति पर नजर रखने के लिये भेजा।

इस दासी ने देखा कि जौहरी एक ज्योतिषी से बात कर रहा था तो वह उसके पास तक चली आयी। और जब उसने अहमद को औरत को एक जहरीले सॉप से तुलना करते हुए सुना तो उसको विश्वास हो गया कि यह ज्योतिषी तो सब कुछ जानता है।

वह डर के मारे बदहवास सी तुरन्त ही अपनी मालकिन के पास दौड़ी गयी और बोली — "मालकिन मालकिन आपकी पोल खुल गयी है। सड़क पर बैठे एक बेकार के से ज्योतिषी को आपके बारे में सब कुछ पता चल गया है। छह घंटे बीतने से पहले पहले यह कहानी सबको मालूम पड़ जायेगी और आप बदनाम हो जायेंगी।

अगर आप अपनी खुशकिस्मती से आप अपनी जान बचा कर भाग भी पायीं तो भी आपको कोई ऐसा आदमी ढूँढना पड़ेगा जो आपके ऊपर दयालु रहे।"

उसके बाद उसने उसको वह सब कुछ बताया जो उसने बाजार में देखा और सुना था। अहमद का बोलना तो मालकिन के दिमाग पर भी इतना ही गहरा असर डाल गया जितना कि उसने उसकी दासी के दिमाग पर डाला था।

जौहरी की पत्नी ने तुरन्त ही अपना बुरका पहना और उस खतरनाक ज्योतिषी को ढूँढने चल दी। जब वह उसे मिल गया तो

वह उसके पैरों में पड़ कर बोली — "मेहरबानी करके मेरी ज़िन्दगी और इज़्ज़त बचाओ। मैं सब बता दूँगी।"

अहमद की समझ में कुछ नहीं आया तो वह बोला — "आपको मुझे क्या बताना है।"

जौहरी की पत्नी बोली — "कुछ नहीं। कुछ नहीं। जैसे तुम्हें कुछ पता ही नहीं है। जैसे तुम जानते ही नहीं कि राजा के ताज से लाल मैंने ही चुराया है।

यह मैंने इसलिये किया था ताकि मैं अपने पति को सजा दे सकूँ जो मेरे साथ बहुत ही बेरहमी का बरताव करता है। और मैंने सोचा कि इस तरह से मैं बहुत सारा खजाना भी पा लूँगी और उसको मौत की सजा दिलवा दूँगी।

पर तुम तो बहुत ही बढ़िया आदमी निकले। तुमसे तो कुछ छिपा हुआ ही नहीं है। तुमने तो उसे ढूँढ लिया और मेरा सारा प्लान चौपट कर दिया। अब मुझे तो बस तुम्हारी मेहरबानी चाहिये। मैं वही करूँगी जो तुम कहोगे।"

स्वर्ग से आया कोई देवदूत भी अहमद को इतना आराम नहीं दे सकता था जितना कि जौहरी की पत्नी ने उसे वहाँ आ कर दिया। उसने अपनी बहुत ही सादी सी शक्ल बनायी जो अब उसकी एक नयी शक्ल हो गयी थी।

वह गम्भीरता से बोला — "ओ स्त्री मुझे सब कुछ पता है जो तूने किया है और यह तेरे लिये अच्छी किस्मत की बात है कि तू

अपने पाप को स्वीकार करने के लिये मेरे पास खुद ही चली आयी है। इससे पहले कि देर हो जाये तू अल्लाह से रहम की माँग कर।

तू अभी अभी घर लौट जा और वह लाल अपने उस काउच के तकिये के नीचे रख दे जहाँ तेरा पति सोता है। उसको दरवाजे से दूर रखना और शान्त रहना तेरा जुर्म कभी किसी को पता नहीं चलेगा।"

जौहरी की पत्नी तुरन्त ही घर लौटी और वह लाल उसने अपने पति के काउच के तकिये के नीचे रख दिया। करीब एक घंटे बाद अहमद उसके पीछे पीछे गया और जौहरी से कहा कि उसने सब कुछ गुणा भाग कर लिया है।

उसकी जानकारी के अनुसार सूरज और चाँद और तारों की जगहों के अनुसार लाल आपके काउच पर रखे तकिये के नीचे रखे हैं जो दरवाजे से काफी दूर पर रखा है।

जौहरी को तो यह सुन कर लगा कि जैसे अहमद पागल हो गया है पर जैसे सूरज की एक किरन भी स्वर्ग से आयी किरन की तरह होती है। यह सुन कर वह अपने काउच की तरफ भागा और लो उसको यह देख कर आश्चर्य भी हुआ और खुशी भी हुई कि अहमद ने लाल की जगह जहाँ बतायी थी वह उसको वहीं मिल गया।

वह तुरन्त ही अहमद के पास वापस आया और उसे गले से लगा लिया। उसे उसने अपना सबसे प्यारा दोस्त और अपनी

ज़िन्दगी बचाने वाला कह कर पुकारा। उसने उसको सोने की **200** मुहरें दीं और कहा कि वह अपने समय का सबसे बड़ा ज्योतिषी था।

जब चमार ने अपनी ऐसी तारीफ सुनी तो उसकी तो खुशी का कोई ठिकाना न रहा। वह इसके लिये अपनी किस्मत के मुकाबले में अल्लाह का बहुत ऋणी था।

जैसे ही वह घर में घुसा तो उसकी पत्नी दौड़ी दौड़ी बाहर आयी और बोली — "मेरे प्यारे ज्योतिषी। आज का दिन कैसा रहा।"

अहमद ने बड़ी गम्भीरता से कहा — "यह देखो। ये **200** सोने की मुहरें हैं। मुझे उम्मीद है कि अब तुम सन्तुष्ट होगी। तुम अब फिर से मेरी ज़िन्दगी को उथल पुथल करने के लिये नहीं कहना जैसा कि मैंने आज सुबह किया है।"

कह कर उसने उसे वह सब कुछ बता दिया जो उस दिन उसके साथ हुआ था। पर उसकी इस कहानी का जो असर अहमद पर पड़ा था उससे उसकी पत्नी के ऊपर कोई दूसरा ही असर डाला।

सितारा को तो केवल सोना ही दिखायी दे रहा था जिसकी सहायता से वह अब राजा के मुख्य ज्योतिषी की पत्नी के दिल में जलन पैदा कर सकेगी।

वह बोली — "मेरे प्यारे पति थोड़ा धीरज रखो। आज का दिन तो इस अच्छे काम का पहला दिन था। काम करते रहो।

अल्लाह तुम्हें जरूर अमीर बनायेगा। फिर हम लोग अमीर हो जायेंगे और खुशी से रहेंगे।"

यह सुन कर अहमद का दिल पिघल गया और उसने फिर दूसरी बार कोशिश करने की सोची। अगले दिन वह फिर से अपना ज्योतिष का सामान ले कर बाजार चल दिया यानी अपनी ग्रहों की लिस्ट पंचांग आदि और वहाँ जा कर फिर से चिल्लाने लगा — "मैं ज्योतिषी हूँ। मुझे सूरज चाँद और सितारे सबकी चालों का पता है। मैं बता सकता हूँ कि आगे क्या होने वाला है।"

यह सुन कर उसके चारों तरफ फिर से भीड़ इकट्ठा हो गयी पर इस बार यह भीड़ उसका मजाक बनाने के लिये इकट्ठी नहीं हुई थी बल्कि आश्चर्य की वजह से हुई थी। क्योंकि उसकी लाल ढूँढने की कहानी एक ही दिन में दूर दूर तक फैल चुकी थी।

इस तारीफ ने अहमद को इस्फ़ाहान में एक बहुत बड़े ज्योतिषी के रूप में मशहूर कर दिया था।

जब सब लोग उसकी तरफ देख रहे थे तो एक स्त्री बुरका पहने हुए उधर से गुजरी। वह शहर के एक बहुत बड़े रईस की पत्नी थी और अभी अभी हमाम से नहा कर आ रही थी। वहाँ उसका एक बहुत ही कीमती हार और कान के बुन्दे खो गये थे।

वह अब बड़ी सावधानी से घर की तरफ जा रही थी उसको डर था कि कहीं ऐसा न हो कि उसके पति को यह पता चल जाये कि वह अपने गहने अपने किसी प्रेमी को दे आयी है।

अहमद के चारों तरफ भीड़ देख कर उसने वहॉ खड़े लोगों से पूछा कि वहॉ क्या हो रहा है जो इतने सारे लोग वहॉ जमा हैं। उन्होंने उसको उस मशहूर ज्योतिषी की कहानी बतायी कि कैसे वह पहले एक चमार था और फिर कैसे उसको यह दैवीय ज्ञान प्राप्त हुआ और अब कैसे वह अपने इन कागजों की सहायता से भविष्य बता सकता है।

उसके बाद उसको राजा के जौहरी और उसके लाल की कहानी बतायी। और भी कई घटनायें बतायीं जो कभी हुई ही नहीं थीं।

वह स्त्री उसके बारे में यह सब सुन कर बहुत प्रभावित हुई। वह तुरन्त ही अहमद के पास गयी और उससे बोली — "तुम्हारे जैसा ज्ञान और अनुभव वाला आदमी तो यह बात अच्छी तरह से बता सकता है कि मेरा गहना कहॉ है। मेहरबानी करके मुझे बताओ कि वे कहॉ हैं मैं तुम्हें **50** सोने की मुहरें दूँगी।"

बेचारा चमार तो यह सुन कर सन्न रह गया। वह नीचे की तरफ देखने लगा और सोचने लगा कि वह अपनी अज्ञानता की वजह से होने वाली इस बदनामी से कैसे छुटकारा पाये।

इधर जब यह स्त्री भीड़ में से गुजर रही थी तो उसका बुरका नीचे से फट गया जिसे अहमद ने देख लिया तो इससे पहले कि उससे पहले कि यह बात कोई और उसे बताये वह यह बात उसको बड़ी नम्रता से बताना चाह रहा था।

वह बोला — "मैम ज़रा नीचे छेद की तरफ देखिये।"

उस स्त्री के दिमाग में तो उस समय बस अपने गहने खोने की बात ही घूम रही थी। वह उस समय बस यह याद करने की कोशिश कर रही थी कि यह सब हुआ कैसे।

अहमद की बात सुन कर उसको कुछ होश आया तो वह खुश होती हुई बोली — "ज़रा रुको। तुम तो बहुत ही बड़े ज्योतिषी हो। मैं अभी तुम्हारा इनाम ले कर वापस आती हूँ जिसके तुम अधिकारी हो।" यह कह कर वह तुरन्त ही वहाँ से चली गयी और कुछ ही देर में लौट भी आयी।

उसके एक हाथ में हार और कान के बुन्दे थे और दूसरे हाथ में एक बटुआ था जिसमें **50** सोने की मुहरें थीं। वह बोली — "लो यह तुम्हारे लिये सोना है। तुम तो बहुत ही बढ़िया ज्योतिषी हो जिसको प्रकृति के सारे भेद मालूम हैं।

मैं तो बिल्कुल भूल ही गयी थी कि मैंने अपने गहने कहाँ रखे हैं। तुम्हारे बिना तो मैं इनको बिल्कुल भी नहीं पा सकती थी। जब तुमने मुझसे नीचे छेद की तरफ देखने के लिये कहा तो मुझे याद आया हमाम की दीवार के नीचे वाला छेद जहाँ मैंने नहाने से पहले कपड़े उतारते समय इनको वहाँ रख दिया था।

अब मैं शान्ति और आराम से घर जा सकती हूँ और वह भी केवल तुम्हारी वजह से। तुम सब अक्लमन्द आदमियों में सबसे ज़्यादा अक्लमन्द हो।"

यह कह कर वह वहॉ से अपने घर चली गयी और अल्लाह का धन्यवाद करते हुए अहमद अपने घर वापस लौट आया। उसने यह पक्का इरादा कर लिया था कि वह अब ज्योतिषी बनने की कोशिश कभी नहीं करेगा और इस पैसे के लालच में नहीं पड़ेगा।

पर उसकी सुन्दर पत्नी अभी तक राजा के मुख्य जौहरी की पत्नी को पहनावे ओढ़ावे में मात नहीं दे सकी थी सो उसने अहमद से अपनी मॉगें और धमकियॉ जारी रखीं ताकि वह अपने प्यारे पति को ज्योतिषी का काम जारी रखने के लिये उकसा सकें।

इन्हीं दिनों की बात है कि राजा के खजाने से सोने और जवाहरातों के **40** बक्से लूट लिये गये। इससे देश के खजाने का काफी हिस्सा लूट लिया गया था।

मुख्य खजांची और दूसरे औफीसर लोग बड़ी मेहनत से चोर की खोज में लगे हुए थे पर उनका कुछ पता ही नहीं चल पा रहा था। राजा ने अपने ज्योतिषी को बुलवाया और उससे कहा कि अगर उसने फलॉ फलॉ समय तक चोरों का पता नहीं चलाया तो वह और उसके मुख्य मुख्य मन्त्री लोगों को मार दिया जायेगा।

समय बीतता जा रहा था। निश्चित समय में अब केवल एक दिन बाकी बचा था। उन सबकी सब कोशिशें बेकार हो चुकी थीं। राजा के मुख्य ज्योतिषी के सारे गुणा भाग बेकार हो चुके थे। उसने अपना सारा ज्ञान लगा कर देख लिया था पर चोर का पता ही नहीं चल रहा था।

तब उनमें से एक आदमी ने कहा कि हमको उस चमार को बुलवाना चाहिये जो कुछ ही दिनों में इतना मशहूर ज्योतिषी हो गया है। हो सकता है कि वह हमें उनके बारे में कुछ बता दे। सब लोग इस बात पर राजी हो गये सो तुरन्त ही दो आदमियों को अहमद को लाने के लिये भेज दिया गया और उनसे कहा कि वे अहमद को अपने साथ ले कर ही आयें।

चमार अपनी पत्नी से बोला — "लो देखो अपनी इस इच्छा का फल। मैं अब मरने जा रहा हूँ। राजा के ज्योतिषी ने मेरे बारे में सुन लिया है और अब वह मुझे जाली ज्योतिषी बनने के जुर्म में मार देना चाहता है।"

जब वह मुख्य ज्योतिषी के महल में घुसा तो उसे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि राजा का मुख्य ज्योतिषी खुद उसको लेने के लिये बाहर चला आ रहा है।

उसने उसको अन्दर ले जा कर एक बड़ी इज़्ज़त वाली कुरसी पर बिठाया और इतनी धीमी आवाज में बोला जितनी कि वह खुद ही सुन सके — "ओ सबसे होशियार अहमद। अल्लाह के तरीकों को कोई नहीं जान सकता। जो बहुत ऊँचे होते हैं उनको नीचा देखना पड़ता है और जो नीचे होते हैं वह उनको ऊपर बिठा देता है।

यह सारी दुनियाँ सबकी अपनी अपनी किस्मत के अनुसार चलती है। आज किस्मत से नीचा देखने की मेरी बारी है और किस्मत से ऊपर उठने की तुम्हारी बारी है।"

तभी राजा का एक दूत वहाँ आ गया जिसने उनकी बातों को बीच में ही रोक दिया। उसने चमार की ज्योतिष के बारे में ऊँचा सुन कर यह चाहा कि उसको उसके सामने पेश किया जाये।

बेचारा अहमद यह सुन कर तो काँप ही गया। उसको लगा कि बस उसकी ज़िन्दगी आज तक ही की है। फिर भी राजा का हुकुम तो हुकुम था सो वह उस दूत के पीछे पीछे चल दिया। रास्ते भर वह अल्लाह से यही प्रार्थना करता जा रहा था कि वह उसे इस खतरे से निकाल ले।

जब वह राजा के सामने आया उसने राजा को जमीन तक झुक कर आदाब किया और राजा के अमीर और लम्बी उम्र की इच्छा की तो राजा ने उससे पूछा — "अहमद तुम बताओ कि मेरा खजाना किसने चुराया है।"

कुछ सोच कर अहमद ने जवाब दिया — "सरकार यह किसी एक आदमी का काम नहीं है। इस चोरी में **40** चोर शामिल थे।"

राजा बोला — "बहुत अच्छे। पर वे थे कौन और उन्होंने मेरे सोने और जवाहरातों का क्या किया।"

अहमद बोला — "हुजूर इन सवालों का जवाब मैं अभी नहीं दे सकता पर मैं आशा करता हूँ कि मैं सरकार को इन सवालों के

जवाब दे सकता हूँ। अगर आप मुझे हिसाब किताब करने के लिये **40** दिन दें।"

राजा बोला — "ठीक है। मैं तुम्हें **40** दिन देता हूँ पर जब ये दिन गुजर जायेंगे और अगर मेरा खजाना नहीं मिला तो तुम्हें अपनी ज़िन्दगी देनी पड़ेगी।"

अहमद ख़ुशी ख़ुशी घर लौट आया क्योंकि अब उसके पास इतना समय था कि वह उस जगह से भाग कर कहीं और जा सकता था जहाँ उसका मशहूर होना उसकी बदकिस्मती न बन रही हो।

जब वह घर पहुँचा तो उसकी पत्नी ने पूछा कि दरबार की क्या खबर है। वह बोला कोई खबर नहीं है सिवाय इसके कि **40** दिन के बाद अगर मैंने राजा के शाही खजाने से चुराये गये सोने और जवाहरात के **40** बक्से ढूँढ कर नहीं दिये तो मुझे मरवा दिया जायेगा।"

"लेकिन तुम चोरों को ढूँढोगे।"

"मगर कैसे। और मैं उनको कैसे ढूँढूँगा।"

"उसी तरीके से जैसे तुमने जौहरी का लाल ढूँढा था और उस स्त्री का गहना ढूँढा था।"

अहमद बोला — "क्या उसी तरीके से? ओ बेवकूफ औरत। तुझे अच्छी तरह मालूम है कि मुझे ऐसी कोई तरकीब नहीं आती। वह सब तो मैंने तुझे ख़ुश करने के लिये बहाना बनाया था।

पर इतनी तरकीब तो मुझे आती थी कि उसे ढूँढने के लिये मैंने राजा से 40 दिन माँग लिये हैं। अब इस समय में आसानी से किसी दूसरे शहर भाग जाऊँगा और जितना पैसा अभी मेरे पास है उससे और अपने पुराने काम की सहायता से हम फिर से ईमानदारी की ज़िन्दगी बिता पायेंगे।"

उसकी पत्नी बोली — "उँह ईमानदारी की ज़िन्दगी। क्या तेरा यह चमार का धन्धा मुझे मुख्य ज्योतिषी की पत्नी को बराबर में कहीं रख पायेगा। तू मेरी बात सुन ले अहमद। तू केवल राजा का खजाना ढूँढने पर अपना दिमाग लगा।

लाल और उस स्त्री के गहने ढूँढने की तरह तुझे यह एक बहुत अच्छा मौका मिला है। मैं हर समय देखती रहूँगी कि तू कहीं भाग न जाये। और अगर तूने भागने की कोशिश की तो मैं राजा के औफीसरों को खबर कर दूँगी। वे आ कर तुझे ले जायेंगे और फिर 40 दिन पूरे होने से पहले ही तुझे मार डालेंगे।

तू मुझे अच्छी तरह से जानता है अहमद कि मैं कोई बात ऐसे ही नहीं कहती। सो हिम्मत कर और इस काम को कर। किस्मत चमकने का यह मौका हाथ से न जाने दे। तू मेरी ज़िन्दगी वैसी ही बना दे जैसी कि मुझ जैसी किसी सुन्दर स्त्री की होनी चाहिये।"

चमार बेचारा तो उसकी यह स्पीच सुन कर बहुत दुखी हुआ पर उसको यह भी पता चल गया था कि उसकी पत्नी का फैसला बदला नहीं जा सकता था सो वह बोला — "ठीक है। तुम्हारी इच्छा पूरी

की जायेगी। मेरी तो बस अब यही इच्छा है कि अपनी ज़िन्दगी के बचे हुए दिन खुशी और शान्ति से गुजार लूँ।

तुम्हें मालूम है कि मैं कोई पढ़ा लिखा आदमी नहीं हूँ और न ही मुझे हिसाब की कोई जानकारी है। मेरे पास केवल 40 दिन हैं। तुम 40 दिन की 40 परचियाँ बना कर रख लो। जब मैं अपनी रोज की रात की प्रार्थना कर लूँ तो तुम मुझे रोज एक तारीख की परची पकड़ा देना ताकि मैं उसे एक शीशी में बन्द करके रख लूँ और उन्हें गिन कर यह जान सकूँ कि अब मुझे कितने दिन और ज़िन्दा रहना है।"

उसकी पत्नी यह सुन कर बहुत खुश हुई कि उसके पति ने उसकी बात मान ली है। उसने 40 तारीखें डाल कर 40 परचियाँ बनायीं और जैसा उसके पति ने उससे करने के लिये कहा था वैसा ही करने का उससे वायदा किया।

इस बीच वे चोर जिन्होंने राजा का खजाना चुराया था पहचाने जाने और फिर पकड़े जाने के डर से शहर के बाहर नहीं भाग पा रहे थे। पर उनको भी अपने ढूँढने की कोशिशों की सारी सूचना सही सही मिल रही थी।

जब राजा ने अहमद को बुलवा भेजा था तो उनमें से एक चोर महल के सामने लगी भीड़ में था। उसने जब यह सुना कि चमार ने उनकी संख्या बिल्कुल ठीक बता दी थी तो वह तो बहुत डर गया और अपने साथियों की तरफ दौड़ गया।

वहॉ जा कर उसने उनको बताया कि हम लोग तो पकड़े जा चुके हैं। इस नये ज्योतिषी अहमद ने तो हमारी संख्या भी बिल्कुल ठीक बता दी है कि हम लोग **40** चोर हैं।

उन चोरों के समूह के सरदार ने कहा — “इस बात को बताने के लिये किसी ज्योतिषी की जरूरत नहीं थी। असल में यह अहमद तो अपने सीधे होने के बावजूद बहुत ही जिद्दी किस्म का आदमी ही।

जब उसने देखा कि राजा के खजाने के चालीस बक्से चोरी चले गये हैं तो उसने सोचा कि चालीस आदमी ही इतना सारा सामान ले कर जा सकते हैं एक चोर यह काम कैसे कर सकता है।

और उसने यह गिनती ठीक ही बतायी। बस ऐसा ही कुछ हुआ। फिर भी उस पर नजर रखना जरूरी है क्योंकि उसने हमारे बारे में कुछ अजीब अजीब सी खोजें की हैं।

हममें से एक को आज रात को ॲधेरा होने के बाद उस ज्योतिषी अहमद के घर की छत पर जाना चाहिये और उसकी अपनी पत्नी के साथ बातचीत सुननी चाहिये क्योंकि वह उसको बहुत पसन्द करता है। और मुझे पूरा पूरा विश्वास है कि वह उसे अपनी सफलता की कहानी जरूर बतायेगा।”

हर एक ने उसकी बात को माना और जैसे ही रात को ॲधेरा हो गया उन **40** चोरों में से एक चोर अहमद के घर की छत पर

था। वह वहाँ उसी समय पहुँचा था जब अहमद अपनी रात की प्रार्थना खत्म करके चुका था।

प्रार्थना खत्म होने के बाद सितारा ने जैसा कि उन दोनों के बीच तय हुआ था उसको तारीख लिखा हुआ पहला कागज दिया। अहमद ने वह कागज अपने हाथ में लिया और बोला — "आह। सो 40 में से यह पहला है।"

जैसे ही छत पर बैठे चोर ने यह सुना तो वह तो डर के मारे वहाँ से उठ कर अपने साथियों के पास भाग लिया। वहाँ जा कर उसने उनको बताया कि जैसे ही वह वहाँ पहुँचा तो अहमद ने अपनी दैवीय ताकत से उसके वहाँ होने के बारे में जान लिया। उसने अपनी पत्नी से तुरन्त ही कहा "सो 40 में से यह पहला है।"

इस चोर की कहानी पर किसी ने विश्वास नहीं किया। किसी ने कहा "तुम डर गये होगे।"। किसी ने कहा "तुम्हें गलती लग गयी होगी।"

इसके बाद यह तय पाया गया कि अगले दिन रात को दो आदमी जायेंगे और वे भी उसी समय जिस समय आज वह आदमी गया था और फिर देखेंगे कि क्या होता है।

अबकी बार अगले दिन दो चोर अहमद के घर पर पहुँचे। उसी समय अहमद अपनी रात की प्रार्थना करके चुका था सो सितारा ने उसको दूसरी तारीख की परची थमायी तो अहमद बोला — "प्रिये

आज वहाँ दो हैं।" और यह कह कर उसने उसे उसी बोतल में डाल दी जिसमें उसने पहले दिन पहली तारीख की परची डाली थी।

दोनों चोरों ने यह सुना और आश्चर्य के मारे डर कर वहाँ से भाग लिये कि इसको तो पता चल गया कि यहाँ दो चोर छिपे हैं। वे भाग कर अपने साथियों के पास आये और उन्हें सब बताया जो अहमद के घर में हुआ था तो उन्होंने भी दाँतों तले उँगली दबा ली।

इस तरह तीसरे दिन तीन आदमी भेजे गये चौथे दिन चार आदमी भेजे गये और सबका कहना वही था कि उसको पता नहीं कैसे पता चल जाता है कि आज वहाँ कितने चोर हैं और वह उनकी संख्या ठीक ठीक बता देता है।

पकड़े जाने के डर से वे लोग उसके घर शाम के बाद अँधेरा हो जाने के बाद ही जाते थे। वही समय अहमद की रात की प्रार्थना का होता था और प्रार्थना के बाद सितारा उसको परची देती थी।

जैसे ही सितारा उसको परची देती थी अहमद अपनी परचियों का नम्बर गिन कर बोल देता था। यह सुन कर चोरों को विश्वास हो गया कि अहमद को उनके वहाँ होने का पता चल जाता था।

आखिरी दिन चालीसों चोर यह चमत्कार देखने के लिये अहमद के घर गये। उस दिन अहमद अपनी आखिरी चालीसवीं परची लेने के बाद चिल्लाया — "ओह आज तो यह संख्या पूरी हो गयी। आज की रात तो चालीसों यहाँ हैं।"

अब तो सारे शक दूर हो गये थे क्योंकि यह तो किसी भी तरह मुमकिन नहीं था कि अहमद को उन सबके वहॉ होने का कोई तरीका पता था। यह तो केवल दैवीय ताकत से ही मुमकिन हो सकता था कि वह रोज उनके वहॉ होने का ठीक ठीक नम्बर पता कर लेता था। यह सब जरूर उसने अपने ज्योतिष की जानकारी से सीखा होगा।

चोरों के सरदार ने भी यह मान लिया कि इतने बड़े अक्लमन्द आदमी को धोखा देना नामुमकिन है। सो उन्होंने आपस में सलाह की कि वे अहमद को अपनी सब बातें बता दें और उससे दोस्ती कर लें। इस बात को छिपाने के लिये वह अपने चुराये हुए धन में से उसको भी कुछ हिस्सा दे देंगे।

उसकी सलाह मान ली गयी और सुबह होने से एक घंटा पहले अहमद के घर का दरवाजा खटखटाया। गरीब आदमी बेचारा अपने बिस्तर से कूद कर बाहर आया। उसको लगा कि आज 40 दिन पूरे हो चुके हैं और राजा के आदमी अब मुझे सजा देने के लिये पकड़ने आये हैं सो वह चिल्लाया — “मेहरबानी करके ज़रा रुको। मुझे मालूम है कि तुम लोग यहॉ क्यों आये हो। यह एक बहुत ही बुरा और नीच काम है।”

चोरों का सरदार बेला — “तुम तो बहुत ही बढ़िया आदमी निकले। हम पूरी तरह से तुम्हारा विश्वास करते हैं कि तुम जानते हो कि हम यहॉ क्यों आये हैं। हम अपने उस काम के लिये भी कोई

दलील देने नहीं आये हैं जिसके बारे में तुम कुछ कहने जा रहे हो। लो ये दो हजार सोने की मुहरें लो ये हम तुम्हें दे रहे हैं इस शर्त पर कि तुम कसम खाओ कि इस बारे में तुम किसी से कुछ नहीं कहोगे।

अहमद बोला — "क्या कहा तुमने कि मैं यह बात किसी से न कहूँ? तुम क्या यह सोचते हो कि मैं इतनी बुरी बात को बिना शिकायत किये सहूँगा और दुनियाँ को नहीं बताऊँगा।"

चोर अपने घुटनों पर बैठते हुए बोले — "मेहरबानी करके हम पर दया करो। हमारी जान बचाओ। हम कसम खाते हैं कि हम राजा का सारा शाही खजाना वापस कर देंगे।"

यह सुन कर अहमद चौंक गया। उसने यह देखने के लिये अपनी ऑखें मलीं कि वह सो रहा था या फिर जाग रहा था। यह पक्का करने के बाद कि वह सो नहीं रहा था जाग रहा था और उसके सामने सच्चे चोर खड़े थे वह गम्भीर आवाज में बोला —

"ओ अपराधियों। तुम्हारा तो दूर तक पीछा किया जायेगा ताकि तुम मुझसे बच कर न भाग सको। क्या तुम्हें मालूम है कि मेरी पहुँच सूरज और चॉद तक है। और मुझे आसमान के हर तारे का पता है कि वह कहॉ है। अच्छा हुआ तुम समय रहते पछतावा करने के लिये आ गये इसने तुम्हें बचा लिया।

पर अभी तुम सब यहॉ से चले जाओ और जा कर राजा का शाही खजाना राजा को वापस कर दो। तुम यहॉ से सीधे चले जाओ

और खजाने के चालीसों बक्से राजा को वैसे के वैसे ही वापस कर दो जैसे तुम उनको उठा कर लाये थे।

उन सब बक्सों को ले जा कर राजा के महल से दूर जो पुराना हमाम है उसके खंडहर की दक्षिणी दीवार के पास एक फुट गहरे जमीन में गाड़ दो। अगर तुमने यह काम अभी अभी ठीक से कर लिया तो तुम्हारी ज़िन्दगी बच जायेगी।

और अगर तुमने ज़रा सा भी इधर उधर किया तो तुम्हारे और तुम्हारे परिवारों पर पहाड़ टूट पड़ेगा।"

चोरों ने वायदा किया कि वे वैसा ही करेंगे जैसा कि अहमद ने उनसे करने के लिये कहा था और वहाँ से चले गये। उनके जाते ही अहमद अपने घुटनों पर बैठ कर अल्लाह की इस कृपा का धन्यवाद देने लगा।

दो घंटे बाद राजा के सिपाही आये और उन्होंने अहमद से अपने साथ चलने के लिये कहा।

उसने कहा कि वह अपनी पत्नी से विदा ले कर अभी उनके साथ आता है। उसके लिये उसने सोच रखा था कि वह उसको अकेला छोड़ कर नहीं आयेगा जब तक कि वह यह न देख ले कि उसके किये का क्या नतीजा रहा।

उसने बड़े प्यार से उसको विदा कहा। सितारा ने भी इस इम्तिहान के मौके पर अपने आपको बहुत सँभाल कर रखा। अपने

पति को खुश रहने के लिये कहा और अल्लाह की अच्छाइयों के बारे में कुछ शब्द कहे।

पर सच बात तो यह थी कि सितारा को शक था कि अल्लाह ने उसके चमार पति को कोई सहारा दिया था। वह हमेशा यही सोचती रहती थी कि उसकी सुन्दरता तो उसकी तरफ कोई अमीर प्रेमी आकर्षित कर सकती थी जो उसको हमाम तक खूब शान शौकत से अच्छे कपड़े और कीमती गहने पहना कर और दासियों से घिरी हुई भेजता जैसे कि मुख्य ज्योतिषी की पत्नी जाती थी। उसकी छवि अभी उसकी याद से अभी तक गयी नहीं थी।

अल्लाह के नियम बड़े ठीक होते हैं। अहमद और उसकी पत्नी सितारा को जो चाहिये था वह उसके पास तैयार था। भला आदमी अहमद राजा के सामने खुश खुश खड़ा था और राजा उसका बड़ी बेसब्री से इन्तजार कर रहा था।

अहमद के आते ही राजा बोला — "अहमद तुम्हारे चेहरे से तो लगता है कि तुमको अपने काम में सफलता मिल गयी है। तुमको शाही खजाने का पता चल गया है।"

चमार पढ़ा लिखा तो नहीं था पर होशियार बहुत था। वह अपने ज्योतिष के गुणा भाग की तरफ देखता हुआ बोला — "सरकार आपको चोर चाहिये या खजाना? मेरे सितारे मुझे दोनों में से केवल एक चीज़ देने के लिये ही कहते हैं। योर मैजेस्टी दोनों में

से किसी एक को चुन लें। मैं आपको केवल एक चीज़ ही दे सकता हूॅ दोनों नहीं।"

राजा बोला — "मुझे बहुत दुख होगा अगर मैंने चोरों को सजा नहीं दी तो पर तुम अगर ऐसा ही चाहते हो तो ऐसा ही सही। मैं अपना खजाना लेना ज़्यादा पसन्द करूॅगा।"

अहमद बोला — "और फिर आप चोरों को आजाद कर देंगे?"

राजा बोला — "हॉ अगर वे मेरा खजाना बिल्कुल अनछुआ वापस कर दें तो।"

अहमद बोला — "तब चलिये सरकार मेरे साथ चलिये। आपका खजाना आपको मिल जायेगा।"

राजा उसके दरबारी और अहमद सब लोग पुराने हमाम के खंडहर की तरफ चल दिये। रास्ते में अहमद ने आसमान की तरफ मुॅह करके कुछ पढ़ा जो देखने वालों को ऐसा लगा जैसे वह कोई जादू के शब्द पढ़ रहा हो। जबकि वह अपने सच्चे दिल से अल्लाह की प्रार्थना कर रहा था।

जब उसकी प्रार्थना खत्म हो गयी तो उसने हमाम की दक्षिणी दीवार की तरफ इशारा किया और मैजेस्टी से कहा कि वह वहॉ पर खुदायी करें तो उनको उनका खजाना वहीं मिल जायेगा।

राजा के लोगों ने बहुत थोड़ी सी ही खुदायी की थी कि उनको अपने सारे बक्से उसी हालत में मिल गये जिसमें वे चुराये गये थे। यानी उन पर खजाँची की सील भी अभी तक लगी हुई थी।

बक्से देख कर राजा की खुशी का तो कोई ठिकाना ही नहीं रहा। उसने अहमद को गले लगा लिया और तुरन्त ही उसको अपना मुख्य ज्योतिषी नियत कर दिया।

उसने उसको अपने महल में रहने के लिये एक घर दे दिया और घोषित किया कि अब इसको राजा की एकलौती बेटी से शादी कर लेनी चाहिये क्योंकि यह उसका कर्तव्य था कि जिसने उसकी इतनी सहायता की वह उसको आगे बढ़ाये। अल्लाह के उस बन्दे को आराम पहुँचाये जिसने उसके राज्य के खजाने को वापस लाने में सहायता की।

उसकी नौजवान बेटी भी जो चाँद के जैसी सुन्दर थी अपने पिता के इस फैसले से असन्तुष्ट नहीं थी क्योंकि उसका दिमाग तो धर्म और गुणों की तरफ लगा हुआ था।

उसने धरती पर जीने के लिये जिन चीज़ों की जरूरत होती है उससे ऊपर उठ कर दैवीय गुणों का आदर करना सीख लिया था। उसको विश्वास था कि अहमद के पास वे सब गुण थे।

जैसे ही यह तय किया गया सब इस शाही हुकुम का पालन करने में लग गये। किस्मत ने **180** डिग्री का पलटा खा लिया था। सुबह को अहमद अपने बिस्तर से बड़े दुखी मन से उठा था कि

शायद आज उसको अपनी जान गँवानी पड़ेगी पर शाम तक तो वह एक महल में रह रहा था और एक ताकतवर राजा की अकेली बेटी से शादी किये बैठा था।

पर इस बदलाव ने उसके चरित्र में कोई बदलाव नहीं लाया। जैसे जब वह गरीब था तो वह बहुत ही नम्र था और जब वह अमीर हो गया तब वह बहुत ही भला और तमीजदार हो गया। उसको अपनी अज्ञानता का पता था इसलिये वह अपनी खुशकिस्मती को अल्लाह की कृपा ही मानता रहा।

वह रोज ब रोज सुन्दर और गुणवती राजकुमारी को ज़्यादा और और ज़्यादा प्यार करता रहा। इससे वह अपनी पुरानी पत्नी के साथ के बरताव को बदलने से रोक नहीं सका। उसने अब उसको प्यार करना छोड़ दिया था। वह अब उसकी बेकार की शान के बदले में खुद बहुत तरीके की बात करने लगा था।

2 अद के बेटे शिद्दाद के स्वर्ग की कहानी[10]

कुछ ऐसा कहा गया है कि अब्दल्ला जो अबू किलाबे[11] का बेटा था एक दिन अपनी एक ऊँटनी को ढूँढने के लिये निकला जो भाग गयी थी। वह अल यमन[12] के रेगिस्तान में से शीबा जिले[13] में से हो कर जा रहा था कि वह एक बहुत बड़े शहर में निकल आया जिसके चारों तरफ बड़ी मजबूत किलेबन्दी थी। उसमें चारों तरफ आसमान को छूने वाली बिल्डिंगें खड़ी थीं।

सो जब वह उसके अन्दर घुसा तो उसको लगा कि उसके अन्दर तो बहुत सारे लोग रहते होंगे वह उन्हीं से जा कर अपने ऊँट के बारे में पूछ लेगा। पर जब वह उसके अन्दर घुस गया तो उसने देखा तो वह शहर तो खाली पड़ा था।

उसके अकेलेपन को दूर करने वाला तो वहाँ कोई नहीं था।

वह बोला — "मैं यहाँ ऊँटनी से उतरा और उसको उसके पैरों से बाँध दिया। फिर अपना मन बना कर इस शहर में घुसा। जब मैं इसकी चहारदीवारी के पास पहुँचा तो मैंने देखा कि इसमें अन्दर घुसने के लिये दो फाटक हैं जिनका साइज़ और ऊँचाई दुनियाँ भर

---

[10] The Legend of the Terrestrial Paradise of Sheddaad, The Son of Ad (Tale No 2)

[11] Abd Allah – the son of Aboo Kilaabeh

[12] Al Yemen – a place in Saudi Arabia

[13] District Sheba. This is the place where Queen of Sheba used to rein some 3,000 yers ago and her kingdom was extended up to Axum in Ethiopia on the African continent. You may like to read this book "The Queen of Sheba and the King Solomon" – a Hindi translaton of a very well written novel based on Nebra Kegast of Ethiopia. Delhi, Prabhat Prakashan. 2018.

में कही नहीं देखी जा सकती। उनमें बहुत तरह के रत्न और जेसिन्थ लगे हुए हैं – सफेद लाल पीले हरे।

और जब मैंने यह सब देखा तो मेरा मुँह तो आश्चर्य से खुला का खुला रह गया। मैंने अपने दाँतों तले उँगली दबा ली। मैं उस चहारदीवारी में बड़े डर और मन में न जाने क्या क्या विचार लिये घुसा।

मैने देखा कि इस किले के अन्दर भी शहर जैसी ही बड़ी बड़ी बिल्डिंगें बनी हुई थीं। हर एक में बड़े बड़े घर बने हुए थे। सारे ही घर सोने और चाँदी के बने हुए थे और कीमती जवाहरातों जैसे लाल और मोती आदि से जड़े हुए थे।

इन घरों के दरवाजे भी किले के दरवाजों की तरह ही सुन्दर थे। फर्शों पर बड़े बड़े मोती लगे हुए थे और हैज़ल नट[14] के गोलों की तरह के खुशबू के गोले लगे हुए थे जिसमें से केसर और कस्तूरी की खुशबू उड़ रही थी।

जब मैं शहर के बीच में आया तो वहाँ मुझे एक भी आदमी नजर नहीं आया तो मैं तो डर के मारे मर ही गया।

फिर मैंने बड़े बड़े घरों की छत से नीचे देखा तो मैंने देखा कि उनके नीचे से तो नदियाँ बह रही थीं और वहाँ की सड़कों पर हरे भरे फलों वाले पेड़ लगे हुए थे और ऊँचे ऊँचे ताड़ के पेड़ लगे थे।

---

[14] Hazel nut is a kind of nut – see its picture above.

सारा शहर सोने और चाँदी की ईंटों का बना हुआ था। यह सब देख कर मैंने सोचा कि यही तो आने वाला स्वर्ग है।

मैंने वहाँ से पथरी की तरह पड़े हुए कुछ रत्न उठाये धूल की तरह पड़ी हुई कस्तूरी उठायी जितनी मैं वहाँ से ला सकता था और अपने जिले को लौट आया।

घर आ कर मैंने लोगों को इस घटना के बारे में बताया। यह खबर वहाँ के खलीफा अबू सूफ़यान के बेटे मुअइया[15] तक पहुँची जो उस समय हिजाज़[16] में रहता था। उसने अपने लैफ्टीनैन्ट जो अल यमन में सना में रहता था कहा कि "उस आदमी को बुलाओ और उससे पता करो कि यह सच है या नहीं।"

लैफ्टीनैन्ट ने मुझे बुलवा भेजा और मेरी यात्रा का हाल सुना और मेरे साथ क्या क्या हुआ। मैंने उसको सब बता दिया जो कुछ भी मैंने देखा था। फिर उसने मुझे मुअइया के पास भेज दिया। मैंने उसको भी जा कर वही बताया जो मैंने देखा था।

पर उसको मेरे ऊपर विश्वास नहीं हुआ तो मैंने उसको कुछ मोती और कस्तूरी और केसर की खुशबू वाले छोटे छोटे गोले दिखाये। उसने उसमें से कुछ गोले तो उनकी खुशबू की वजह से रख लिये पर मोती उसके हाथ में पहुँचते ही बदरंग हो गये।

---

[15] Moaawiyeh – son of Aboo Sufayaan, the then Caliph

[16] Hejaaz – a city

यह देख कर मुअइया को बड़ा आश्चर्य हुआ सो उसने काबल अहबार[17] को बुलवा भेजा। उसके आने पर उसने उससे कह — “ओ काबल अहबार मैंने तुम्हें यहाँ एक वजह से बुलाया है जिसको मैं तुमसे समझना चाहता हूँ। मुझे उम्मीद है कि तुम मुझे समझा पाओगे।”

“और शाहज़ादे वह क्या चीज़ है।”

“क्या तुमने किसी ऐसे शहर के बारे में मालूम है जो सोने चाँदी का बना हुआ हो। जिसके खम्भे लाल के हों। और जहाँ मोती पथरी के रूप में पड़ी रहती हो। और हैज़ल नट के बराबर बड़े गोलों से कस्तूरी और केसर की खुशबू फूटती रहती हो?”

“जी जहाँपनाह। उस शहर का नाम इरम ज़ैतेल ऐमाद[18] है और जिसके जैसा धरती पर कोई और शहर नहीं बनाया गया। यह शहर अद के बेटे शिद्दाद ने बनाया।”

मुअइया बोला “तुम मुझे इसका इतिहास बताओ।”

तब काबल अल अहबार बोला — “बादशाह अद के दो बेटे थे – एक तो शिदीद और दूसरा शिद्दाद। जब उनके पिता की मौत हो गयी तो उस देश पर उन्होंने दोनों ने मिल कर राज किया। उस समय धरती पर कोई ऐसा राजा नहीं था जो उनके आधीन न हो।

[17] Kaab el-Ehbaar

[18] Eram Zat-el Emaad

कुछ समय बाद जब शिदीद मर गया तो शिद्दाद उसके बाद राज करने लगा। वह बहुत पुरानी पुरानी किताबें पढ़ने का बहुत शौकीन था। जब उसने आने वाली दुनियाँ और स्वर्ग के बारे में पढ़ा उसके बड़े बड़े मकानों पेड़ों फलों और स्वर्ग की दूसरी चीज़ों के बारे में पढ़ा तो उसका मन किया कि धरती पर वह ऐसा ही एक शहर बनाये जैसा कि उसने पढ़ा था।

उसके नीचे लाखों राजा थे और उनमें से हर राजा के नीचे भी लाखों सरदार थे और उन लाखों सरदारों में से हर एक के नीचे लाखों सिपाही थे।

उसने उन सबको अपने सामने बुलाया और उनसे कहा — "मैंने पुरानी किताबों में स्वर्ग का ऐसा ऐसा हाल पढ़ा है जो दूसरी दुनियाँ में है। मैं चाहता हूँ कि मैं धरती पर एक ऐसा ही स्वर्ग बनाऊँ। तुम सब लोग तुरन्त ही चले जाओ और धरती पर ऐसी एक खाली जगह देखो जो बहुत सुहावनी हो और बहुत बड़ी हो।

फिर वहाँ मेरे लिये सोने चाँदी का एक शहर बनाओ उसमें पथरी की जगह लाल और मोती बिखराओ। उसके मकानों की छत को टिकाने के लिये क्रिस्टल के खम्भे बनाओ।

उसमें खूब बड़े बड़े मकान बनवाओ खूब बड़े बड़े कमरे बनवाओ। छोटी छोटी सड़कों पर पेड़ लगाओ बहुत सारे तरीके के फलों के पेड़ लगाओ। उनके नीचे से नदियाँ निकालो जो सोने और चाँदी में बहती हों।"

यह सुन कर वे सब बोले — “यह जो कुछ आपने हमसे अभी करने के लिये कहा है यह हम पूरा कैसे कर सकते हैं। यह जो आपने हमसे क्रिस्टल मोती लाल आदि लाने के लिये कहा है वे सब हम कैसे ला सकते हैं।”

वह बोला — “तुम लोगों को तो मालूम ही है कि दुनियाँ के सारे राजा मेरे आधीन हैं और मेरे हुकुम को कोई टाल नहीं सकता।”

वे बोले — “हाँ हम जानते हैं।”

राजा श्द्दिीद बोला — “तो फिर बस जाओ जहाँ भी क्रिस्टल और लाल की खानें हैं और जहाँ भी मोती मिलते हैं जहाँ भी सोना और चाँदी मिलता है। सब कुछ वहाँ से इकट्ठा करो।

मेरे पास भी जो कुछ है वह तुम मुझसे लो। किसी चीज़ को छोड़ो नहीं और अपनी नजर से भी किसी को बच कर नहीं जाने दो। मेरा कहना न मानने की गलती नहीं करना।”

फिर उसने दुनियाँ के हर राजा को एक चिट्ठी लिखी कि जिसके पास जो भी हो वह ऊपर बतायी हुई सब चीज़ें इकट्ठा करें और उन खानों में जायें जहाँ ये सब चीज़ें मिलती हैं।

बीस साल लगा कर उन्होंने वे सब चीज़ें इकट्ठी कीं। फिर उसने रेखागणितज्ञों और साधु सन्तों को बुलवा भेजा। सारे देशों से मजदूरों और कलाकारों को भी बुलवा भेजा।

उसके बाद वे सब जगह देखने के लिये गये कि ऐसा शहर कहाँ बसाना ठीक रहेगा सो चलते चलते वे एक रेगिस्तान में आये जहाँ एक बहुत बड़ा खुला मैदान पड़ा हुआ था। उसमें कोई बड़ी पहाड़ी नहीं थे पर क्योंकि इसमें कुछ सोते इधर उधर बिखरे पड़े हुए थे इसलिये वह जगह उन सबको वह जगह अच्छी लगी।

उन्होंने सोचा कि यही वह जगह है जहाँ राजा का बताया हुआ स्वर्ग जैसा शहर बस सकता है। बस उन्होंने जल्दी जल्दी वहाँ शिद्दाद की इच्छा के अनुसार शहर बनाना शुरू कर दिया।

उनको यह शहर ऐसा ही बनाना था जैसा कि राजा ने उनसे बनाने के लिये कहा था — लम्बाई में भी और चौड़ाई में भी। इसके बीच में उन्होंने नदियाँ भी निकालीं। उनकी नींव भी इतनी ही मजबूत बनायी जितनी कि उसने बड़े शहर के लिये चाहिये थी।

कई जिलों के राजाओं ने अपने पास से भी रत्न छोटे बड़े मोती सोना और बहुत सारा सामान राजा शिद्दाद को ऊँटों पर लाद कर रेगिस्तान के रास्ते भेजा जहाज़ों में लाद कर समुद्र के रास्ते भेजा।

उन्होंने ऐसा बहुत सारा सामान भी मजदूरों को भेजा जो न तो गिना जा सकता था न बताया जा सकता था। वे मजदूर इस शहर को बनाने के लिये **300** साल तक लगे रहे।

उसे खत्म करने के बाद वे राजा के पास आये और उसे बताया कि उन्होंने अपना काम खत्म कर लिया है। यह सुन कर उसने कहा — "ठीक है अब तुम जा कर उसके लायक उसको सुरक्षित रखने

के लिये एक दीवार बनाओ जो कम से कम 1000 घरों को घेर ले। फिर उसमें 1000 घर बनाओ जिनमें हर एक घर में 1000 खम्भे लगे हों। यह सब ऐसा होना चाहिये कि हर घर में एक वजीर रह सके।"

यह हुकुम सुन कर वे सब तुरन्त ही वहॉ से चले गये और उन्होंने यह सब काम 20 साल में ही खत्म कर लिया। वे फिर शिद्दाद के पास गये और उसे बताया कि उन्होंने उसका वह काम भी खत्म कर लिया है।

फिर उसने अपने सब वजीरों यानी 1000 वजीरों को और अपने मुख्य सरदारों को और अपने सैनिकों को वहॉ से इरम ज़ैतेल ऐमाद जाने का हुकुम दिया ताकि वे दुनियॉ के बदशाह अद के बेटे शिद्दाद की सेवा में काम कर सकें। इसके अलावा उसने अपने हिजड़ों को और अपने हरम[19] में काम करने वालों को भी ऐसा ही हुकुम दिया। यह सब भी पूरा होते होते 20 साल लग गये।

उसके बाद शिद्दाद अपनी इच्छा पूरी हो जाने की खुशी में अपने सिपाहियों के साथ उस शहर की तरफ चला।

तो यह इरम ज़ैतेल ऐमाद पहुॅचने से एक दिन पहले की बात है कि अल्लाह ने उसके और उसके साथियों पर अपनी ताकत की एक बहुत ज़ोर की अवाज भेजी जिसकी आवाज से वे सब मर गये।

[19] Harem – Urdu / Arabic word for the place where a family's women live.

न तो शिद्दाद और न कोई और दूसरा ही वहाँ से शहर पहुँच सका और न कोई उसे देख ही सका। बल्कि अल्लाह ने उस सड़क को भी तोड़ दिया जो उस शहर तक जाती थी पर यह शहर तब तक रहेगा जब तक "फैसले का दिन"[20] आयेगा।"

काबिल अल अहबार के मुँह से यह सब हाल सुनने के बाद मुअइया को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने पूछा — "क्या वहाँ तक कोई आदमी पहुँच सकता है?"

"जी हाँ। जो कोई भी मुहम्मद साहब का साथी रहा हो। ऐसी ही शक्ल का जैसा कि यह आदमी यहाँ बैठा है। ऐसा आदमी निश्चित ही वहाँ तक पहुँच सकता है।"

ऐश शाबी[21] का कहना यह है कि —"अल यमन में हैमीर[22] के विद्वानों का कहना है कि जब शिद्दाद और उसके साथ आने वाले अल्लाह की आवाज से मर जायेंगे तब उसका बेटा शिद्दाद छोटा वाला अपने बाप के बाद यहाँ हद्रामौत और शीबा पर राज्य करेगा।

तो वह जब अपने सिपाहियों के साथ यहाँ आ रहा होगा और जैसे ही इरम आने से पहले ही रास्ते में उसके पास यह खबर पहुँचेगी तो वह अपने सिपाहियों से उसके शरीर को रेगिस्तान से हद्रामौत ले जाने के लिये कहेगा और वहाँ उसको एक गुफा में जगह खाली करने के लिये कहेगा।

[20] The Hour of the Judgment
[21] Esh Shaabi
[22] Hemyer

जब यह काम हो जायेगा तो वह उसको वहाँ सोने के एक काउच पर रखने के लिये कहेगा और उस शरीर को **70** कपड़ों से ढकने के लिये कहेगा जिनमें सोने का धागा बुना हुआ होगा और जिनमें कीमती पत्थर जड़े होंगे।

उसके सिरहाने वह एक सोने की प्लेट रखेगा जिस पर यह लिखा होगा —

तुम्हारा बुरा हो जिसे लम्बी उम्र ने धोखा दिया हो
मैं अद का बेटा शिद्दाद हूँ एक मजबूत किले का मालिक
एक बहुत बड़ी ताकत का मालिक और बहुत शानदार
धरती पर रहने वाले लोग मेरी सख्ती और धमकियों से डर कर मेरा कहा मानते थे

पूर्व से पश्चिम तक मेरा एक बहुत ही ताकतवर राज्य था
सच्चे धर्म के बारे में बताने वाले ने हमें सही रास्ता दिखाया
पर हमने उसकी बात नहीं मानी और पूछा क्या इससे बचने का कोई रास्ता नहीं है

दूर क्षितिज से आती एक बहुत तेज़ आवाज ने हमको धमकाया
इस पर हम मैदान में काटी हुई मक्का की तरह से बिखर गये
और अब धरती के नीचे हम उस धमकी वाले दिन का इन्तजार करते हैं

ईथा अलीबी[23] का भी कहना है — "ऐसा हुआ कि दो आदमी इस गुफा में घुसे। उन्होंने इस गुफा में ऊपर की तरफ कुछ सीढ़ियाँ देखीं। वे उनसे नीचे उतरे तो उन्होंने एक खुदी हुई जगह देखी

[23] Eth-Tha alibee

जिसकी लम्बाई करीब 100 क्यूबिट[24] थी और उसकी चौड़ाई करीब करीब 40 क्यूबिट थी।

इस गड्ढे के बीच में सोने का एक काउच पड़ा था। उस पर एक बहुत ही बड़ा आदमी पड़ा था जिसने उसकी सारी जगह घेर रखी थी। उसके शरीर पर सोने और चॉदी के तारों से बुने हुए कीमती कपड़े थे। उसके सिरहाने एक सोने की प्लेट थी जिस पर कुछ लिखा हुआ था।

उन लोगों ने वह प्लेट उठा ली और उसको वहॉ से ले गये। साथ में वे सोने की ईंटें चॉदी और बहुत सारी चीज़ें भी ले गये जितनी भी वे ले जा सकते थे

[24] 1 Cubit = 18 inches, so 100 Cubit = 1,800 inches and 40 cubit = 720 inches. Thus this pit was 50 x 20 yards.

3 नूशीरवॉ का मकबरा[25]

एक बार की बात है कि खलीफा हारूँर रशीद[26] जो फारस के सबसे बड़े राजा थे एक बहुत बड़े मशहूर राजा नूरशीरवॉ का मकबरा[27] देखने गये। कब्र के सामने सोने का एक कपड़ा लटक रहा था। जब हारूँ ने उसे छुआ तो वह टुकड़े टुकड़े हो कर बिखर गया।

कब्र की दीवारें सोने और जवाहरातों से ढक गयीं जिनकी चमक से वहॉ का सारा ॲधेरा दूर हो गया। वहॉ एक शरीर एक सिंहासन पर बैठी हुई हालत में था जिस पर बहुत सारे जवाहरात जड़े हुए थे।

वह देखने में इतना ज़िन्दा लग रहा था कि पहली ही नजर में हारूँ उसके पैरों में झुक गया और नूशीरवॉ के बेजान शरीर को आदाब किया।

हालॉकि उस मरे हुए राजा का चेहरा बिल्कुल एक ज़िन्दा आदमी की तरह था और उसका सारा शरीर सुरक्षित किया हुआ था जो उन कारीगरों की होशियारी दिखा रहा था जिन्होंने उसके शरीर को सुरक्षित किया था लेकिन जब हारूँ ने उसके कपड़े छुए तो वे धूल में बदल गये।

---

[25] The Tomb of Noosheerwan (Tale No 3)
[26] Caliph Haaroon-oor-Rashid
[27] Tomb of Noosheerwan

हारूँ ने जब यह देखा तो उसने अपने कीमती कपड़े उतारे और नूशीरवाँ के मरे हुए शरीर पर डाल दिये। उसने एक नया परदा भी लगवाया था जो उस पुराने परदे से कहीं ज़्यादा कीमती था जो उसने नष्ट कर दिया था। उसने उसके पूरे मकबरे को कपूर और कई और खुशबूदार चीज़ों की खुशबू से भरवा दिया।

यह देखा गया कि नूशीरवाँ के मरे हुए शरीर में और कोई बदल नहीं देखी गयी सिवाय इसके कि उसके कान सफेद हो गये थे।

यह सब जो हुआ उससे खलीफा बहुत प्रभावित हुए। वह रो पड़े और कुरान के शब्द दोहराये — "जो भी मैंने देखा है वह उनको सावधान रहने के लिये है जिनकी आँखें हैं।"

उन्होंने सिहासन पर कुछ लिखा हुआ भी देखा जिसके लिये उसने अपने काज़ी लोगों को जो पहलवी भाषा अच्छी तरह जानते थे उसे पढ़ने और समझाने के लिये कहा।

उन्होंने ऐसा ही किया। उन्होंने उसे पढ़ा और हारूँ को समझाया —

यह दुनियाँ नहीं बची रहती
आदमी जो सोच सकता है इस दुनियाँ में वही सबसे अक्लमन्द है
इससे पहले कि तुम इस दुनियाँ का शिकार बन जाओ
तुम दुनियाँ का अच्छी तरह से आनन्द ले लो
तुम वही कृपा उन सबको दो जो तुम्हारे नीचे हैं
जैसी कि तुमने अपने ऊपर वालों से पायी है
अगर तुमने सारी दुनियाँ भी जीत ली है तो भी आखीर में मौत तुम्हें जीत लेगी

अपनी बदकिस्मती से सावधान रहो कि वह कहीं तुमको धोखा न दे दे
तुमको उतना ही मिलेगा जो तुमने दूसरों के लिये किया है न उससे कम न उससे ज़्यादा।

तभी हारूँ ने उस लाश के हाथ की उँगली में बहुत बड़े लाल की एक अँगूठी देखी जिस पर यह लिखा हुआ था —

बेरहमी को छोड़ दो अच्छी बातें सीखो कोई भी काम करने में जल्दी मत करो
चाहे तुम्हें सौ साल तक भी ज़िन्दा क्यों न रहना पड़े
पर मौत को एक पल के लिये भी नहीं भूलना
अक्लमन्दों की संगत से बड़ी कोई चीज़ नहीं

हारूँ ने देखा कि उसके दाँये हाथ में एक दस्ती पड़ी हुई है जिस पर लिखा हुआ है —

फलाँ फलाँ साल में इरडेबहिश्त के महीने[28] के 10वें दिन अदीन की जाति का खलीफा मुहम्मद के कहे को आगे बढ़ाने वाला चार भले और एक बुरे आदमी के साथ यहाँ मेरी कब्र पर आयेगा।

इसके नीचे हारूँ के पुरखों के नाम लिखे हुए थे। इसके अलावा एक और भविष्यवाणी लिखी हुई थी जो हारूँ के वहाँ आने से सम्बन्धित थी। उसमें लिखा था —

यह राजकुमार चार भले और एक बुरे आदमी के साथ यहाँ आ कर मेरी इज़्ज़त करेगा मेरा कुछ भला काम करेगा हालाँकि उस पर मेरा कोई अधिकार नहीं होगा। वह मुझे नये कपड़े पहनायेगा और मेरे मकबरे पर बहुत सारी खुशबूदार चीज़ें छिड़केगा और फिर वापस अपने घर चला जायेगा। पर जो बुरा आदमी उसके साथ होगा वह मेरे साथ बुरा व्यवहार करेगा।

[28] Muslims' calendar month – Erdebehisht (Behisht means Heaven)

मैं प्रार्थना करता हूँ कि अल्लाह राजकुमार के साथ अच्छा व्यवहार करने के लिये और उस बुरे आदमी से बदला लेने के लिये मेरी जाति का कोई आदमी भेज दे। मेरे सिंहासन के नीचे कुछ लिखा हुआ है जिसे खलीफा को जरूर पढ़ना चाहिये और उस पर विचार करना चाहिये।

उसमें जो कुछ भी लिखा है वह उसे मेरी याद दिलायेगा और इससे कुछ और ज़्यादा न दे पाने के लिये मुझे माफ करेगा।"

खलीफा ने जब यह सुना तो उसने सिंहासन के नीचे हाथ डाला और उस खुदे हुए को ढूँढ लिया। उसमें एक लाल के ऊपर कुछ लाइनें खुदी हुई थीं और वह लाल भी उतना ही बड़ा था जितनी बड़ी उसकी हथेली थी।

उसमें सोना और हथियार और जवाहरातों के कुछ बक्से मिलने की एक जगह बतायी गयी थी और उसके नीचे लिखा था —

यह मैं खलीफा को उसके भले काम के बदले में देता हूँ जो उसने मेरे साथ किया है।
वह इन सबको ले ले और आनन्द करे।

जब हारूँर रशीद वहाँ से जाने लगा तो उसका वजीर हुसैन बिन साहिल उससे बोला — "हुजूर ये जो कीमती पत्थर इस मुर्दे के शरीर पर लगे हुए हैं इनका यहाँ क्या फायदा। ये तो किसी ज़िन्दा आदमी के किसी फायदे के नहीं। मेहरबानी करके मुझे इजाज़त दीजिये तो में इनमें से कुछ पत्थर ले लूँ।"

खलीफा ने इस काम को ठीक न समझते हुए कुछ गुस्से से कहा — "ऐसी तो इच्छा करना भी किसी चोर का काम है किसी बड़े और अक्लमन्द आदमी का नहीं।"

हुसैन को अपने कहे पर बड़ी शरमिन्दगी महसूस हुई। उसने एक नौकर जो मकबरे के दरवाजे पर खड़ा था उससे कहा — "जा तू भी अन्दर जा और इस पवित्र मन्दिर के दर्शन कर ले।"

वह नौकर यह सुन कर अन्दर चला गया। उसकी उम्र **100** साल से भी ऊपर थी पर उसने धन दौलत की इतनी चमक पहले कभी नहीं देखी थी। उसको लगा कि उसको उसमें से कुछ ले लेनी चाहिये। पहले तो वह डरा पर बाद में हिम्मत करके उसने नूशीरवॉ की उँगली से एक अँगूठी निकाल ली और बाहर आ गया।

हारूँ ने उस आदमी को पहले अन्दर आते हुए फिर बाहर जाते हुए देखा। उसने देखा कि वह बाहर बड़ी सावधानी से कुछ डरा डरा जा रहा था। उसने तुरन्त ही भॉप लिया कि वह क्या करके जा रहा होगा।

अपने चारों तरफ के लोगों को सम्बोधित करते हुए उसने गुस्से में भर कर कहा — "नूशीरवॉ के ज्ञान की अब तुम हद देखो। उन्होंने पहले ही यह कह रखा था कि मेरे साथ एक बुरा आदमी भी है। और वह बुरा आदमी यह है। क्या लिया तुमने?"

आदमी बोला — "कुछ नहीं।"

खलीफा बोले — "तलाशी लो इसकी।"

उसकी तलाशी ली गयी तो उसके पास नूशीरवॉ की उॅगली की एक अॅगूठी पायी गयी। खलीफा ने तुरन्त ही उससे वह अॅगूठी ली और मकबरे के अन्दर गया और उसे मरे हुए राजा की उॅगली में पहना दी।

जब वह वहॉ से लौटा तो बिजली की कड़क जैसी एक तेज़ आवाज सुनायी दी। हारूँ उस पहाड़ से नीचे उतर आया जिस पहाड़ पर नूशीरवॉ का मकबरा था और अपने नौकरों से उसको जाने वाली सड़क को तोड़ देने के लिये कहा ताकि कोई अपनी उत्सुकता को शान्त करने के लिये वहॉ न जा सके।

नीचे आ कर उसने वह जगह ढूँढी जहॉ उसको नूशीरवॉ के दिये हुए सोना हथियार और कीमती जवाहरात मिलने वाले थे और उनको ढूँढ कर उन सबको बगदाद भेज दिया।

बहुत सारी कीमती चीज़ों में एक सोने का ताज भी था जिसकी पॉच तरफ थीं और जो बहुत कीमती पत्थरों से सजा हुआ था। उसके हर तरफ बहुत अच्छी सीख लिखी हुई थीं। उनमें से सबसे ज़्यादा बताने लायक ये सीखें थीं।

पहली तरफ

उनको मेरी तरफ से इज़्ज़त देना जो अपने आपको जानते हैं
किसी काम को शुरू करने से पहले उसका परिणाम सोच कर रखो
और आगे बढ़ने से पहले पीछे लौटने का रास्ता देख कर रखो
किसी भी आदमी को बिना जरूरत के दुख मत दो। हर एक की खुशी के बारे में सोचो
अपनी शान को अपनी ताकत पर रख कर दूसरों को दुख मत पहुँचाओ

दूसरी तरफ

कोई भी कदम उठाने से पहले सलाह ले लेनी चाहिये और उस काम को कराने के लिये किसी ऐसे आदमी पर विश्वास नहीं करना चाहिये जिसको उस काम करने का कोई अनुभव न हो

अपनी जायदाद को अपनी ज़िन्दगी के लिये छोड़ दो और अपनी ज़िन्दगी को अपने धर्म के लिये छोड़ दो

अपना समय अपना अच्छा नाम कमाने में खर्च करो और अगर तुम्हें धन चाहिये तो सन्तुष्ट रहना सीखो

तीसरी तरफ

जो कोई चीज़ टूट गयी हो चोरी हो गयी हो जल गयी हो या खो गयी हो उसका दुख मत करो

किसी दूसरे के घर में हुकुम मत दो और अपनी रोटी अपने घर में ही खाने की आदत डालो

अपने आपको औरत की कैद में मत रखो

चौथी तरफ

किसी खराब परिवार में शादी मत करो और उनके साथ भी मत बैठो जिनको कोई शरम न हो

ऐसे लोगों से हमेशा दूर रहो जो अपनी बुरी आदतों को रोक नहीं सकते और उसके साथ बात भी मत करो जिसको दया की कीमत नहीं मालूम हो

दूसरों का सामान कभी मत लो[29]

हमेशा राजा से सावधान रहो क्योंकि वह उस आग की तरह है जो रोशनी तो देती है पर साथ में जला भी देती है

---

[29] “Covet not the goods of others” – “Thou shall not covet” is the most popular translation of One of the Ten Commandments which are widely understood as moral imperatives by legal scholars, Jewish scholars, Catholic scholars and Protestant scholars.

अपने मूल्यों की कीमत समझो दूसरे की योग्यताओं को न्यायपूर्वक जॉचो और ऐसे लोगों के साथ कभी मत लड़ो जो किस्मत में और धन में तुमसे कहीं ज़्यादा अच्छे हैं

पॉचवी तरफ

राजा से औरतों से और कवियों से डरो
किसी भी आदमी से जलो नहीं और आदत डालो कि किसी दूसरे की गलतियॉ न ढूॅढो
हमेशा खुश रहने की आदत डालो गुस्से से बचो नहीं तो तुम्हारी ज़िन्दगी बहुत दुखी हो जायेगी
अपने घर की स्त्रियों का हमेशा आदर करो और उनकी रक्षा करो
कभी गुस्से के गुलाम न हो और जब कभी किसी से मुकाबला हो तो हमेशा समझौते के दरवाजे खुले रखो
कभी अपने खर्चों को अपनी आमदनी से ऊॅचा मत जाने दो[30]
नया पेड़ लगाओ वरना किसी बड़े पेड़ को काटने की सोचो भी मत
अपने कालीन की हद से ज़्यादा अपने पैर मत फैलाओ[31]

यह सब अच्छी चीज़ें पढ़ कर हारूँर रशीद खजाना मिलने से भी बहुत ज़्यादा खुश हुआ। उसने हुकुम दिया कि इन नियमों को एक किताब में लिख दिया जाये ताकि भले लोग इनको पढ़ कर इस अक्लमन्दी का फायदा उठा सकें।

जब वह बगदाद वापस लौटा तो उसने यह सब किस्सा अपने प्रिय वजीर जाफर बरमेकी[32] और दूसरे प्रिय अफसरों को बताया। हुसैन बिन साहिल ने नूशीरवॉ की जो बेइज़्ज़ती की थी उसने उनको

---

[30] Similar to this saying is "Cut your coat according to your cloth", in Hindi it is said "Tete paanv pasaariye jetl laambee saur"
[31] This is also similar to the above one.
[32] Jaffier Bermekee – name of the Minister of Khalifa (Caliph).

वह भी बतायी कि किस तरह से उसने मकबरे को बिगाड़ने के लिये कहा था।

और एक छोटी सी सजा उस नौकर को सुनायी जो नूशीरवाँ के हाथ से अँगूठी निकालता पकड़ा गया था।

4 अमीन और गुल[33]

फारस में एक बहुत ही भयानक जगह है “मौत के दूत की घाटी”[34]। अल्लाह के गुस्से का यह भयानक मन्त्री वहाॅ की परम्पराओं के अनुसार धरती पर और अपनी कुछ और दूसरी प्रिय जगहों पर रहता है। उसके चारों तरफ भूत और गुल और कुछ और ऐसे भयानक लोग रहते हैं जो जब वह लोगों को मार देता है तो उसके शरीर को खाते हैं।

इन राक्षसों की वास्तविक शक्ल तो बहुत भयानक है पर ये लोग अपने आपको किसी भी जानवर में बदल सकते हैं जैसे गाय या ऊँट या फिर और जो कुछ भी वह बनना चाहें।

अक्सर करके वे आदमी के दोस्त और रिश्तेदार की शक्ल रख कर भी आ सकते हैं। इसके अलावा न केवल वे अपनी शक्ल बदल सकते हैं बल्कि अपनी आवाज भी बदल लेते हैं।

उनकी डरावनी चीखें और चिल्लाने की आवाजों की तुलना में जंगलों की दूसरी तेज़ आवाजें भी धीमी पड़ जाती हैं। जो यात्री इन चीज़ों से अनजाने हो कर गुजरते हैं वे ऐसी जगहों पर अपने दोस्तों को देख कर या तो भ्रम में पड़ जाते हैं या फिर उनकी शक्लों में खो जाते हैं या फिर उनके संगीत में खो जाते हैं या फिर अपने रास्तों से

[33] Amin and the Ghool (Tale No 4) – a folktale from Persia, Asia.
[34] Translated for the words “Valley of the Angel of the Death”

भटक जाते हैं या फिर कुछ घंटों तक आराम करने के बाद मर जाते हैं।

हालाँकि इन गुलों की संख्या जबसे धर्मदूत[35] पैदा हुए हैं दिन ब दिन घटती जा रही है और उनकी उन लोगों को नुकसान पहुँचाने की ताकत भी अब खत्म सी होती जा रही है जो धर्मदूत का नाम मन से लेते हैं। पर फिर भी अभी भी वे वहाँ पाये जाते हैं।

ये जीव इस धरती के ऊपर वाली दुनियाँ के सबसे नीचे जीव हैं और शरमीले होने की वजह से बहुत ज़्यादा बेवकूफ भी हैं इसलिये ये किसी भी थोड़े से अक्लमन्द आदमी के भी काबू में आ जाते हैं।

इस्फ़ाहान[36] में रहने वाले हालाँकि बहुत बहादुर नहीं हैं पर धरती के बहुत ही चालाक लोग हैं। एक बार यहाँ के रहने वाले एक आदमी को रात में घाटी में से हो कर अकेले यात्रा करने की जरूरत पड़ी।

यह आदमी बहुत ही हाजिरजवाब था और हिम्मत के काम करना पसन्द करता था। और हालाँकि वह शेर तो नहीं था पर अपनी चालाकियों पर उसको बड़ा विश्वास था। वे उसको ऐसे बहुत सारे खतरों से निकाल कर ले आयी थीं जो उस जैसे सीधे आदमी को बिल्कुल नष्ट कर देते।

---

[35] Translated for the word "Prophet" – here it is used for Muhammad Sahab

[36] Isfahan is a main city in Central Iran

सो इस आदमी ने जिसका नाम अमीन बेग था गुलों की बहुत सारी कहानियाँ सुन रखी थीं। "मौत के दूत की घाटी" में उसको भी शायद कोई मिल जाये सो उसने उसी हिसाब से अपनी यात्रा की तैयारी करनी शुरू की।

उसने अपने साथ एक अंडा रखा और एक नमक की डली रखी और अपनी यात्रा पर चल दिया।

पहाड़ों के बीच से हो कर वह अभी बहुत दूर नहीं गया था कि तभी उसने एक ज़ोर की आवाज सुनी — "ओ अमीन बेग इस्फ़ाहानी। तुम गलत रास्ते पर जा रहे हो। मैं तुम्हारा दोस्त करीम बेग हूँ। मैं तुम्हारे पिता करबला बेग को भी जानता हूँ और उस सड़क को भी जानता हूँ जहाँ तुम पैदा हुए थे।"

अमीन को गुलों की ताकतों का अच्छी तरह से पता था कि वे जिसकी चाहें उसी की शक्ल ले सकते थे। इसके अलावा उसको उनके वंश की ताकत का भी पता था उनके शहरों का और उनके परिवारों का भी पता था।

इसलिये इस बात में उसको कोई शक नहीं था कि यह आवाज उसको गुमराह करने के लिये थी फिर भी अपने बच कर भाग जाने की कला पर विश्वास रखते हुए उसने उसका सामना करने का फैसला किया।

सो उसने उसको जवाब दिया — "ज़रा रुक जाओ मैं तुम्हारे सामने अभी आता हूँ।"

जब अमीन गुल के पास तक आ गया तो वह उससे बोला — “अरे तुम तो मेरे दोस्त करीम नहीं हो। तुम तो झूठ बोलने वाले राक्षस हो। पर तुम वैसे ही आदमी हो जिससे मैं मिलना चाहता था। मैंने अपनी ताकत सारे आदमियों के साथ आजमा कर देख ली पर मुझे अपने बराबर कोई आदमी ही नहीं मिला इसलिये मैं इस घाटी में आ गया ताकि मैं किसी गुल से मिल सकूँ और अपनी ताकत उस पर आजमा सकूँ।”

गुल को अपना इस तरह से स्वागत किये जाने पर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने उसकी तरफ बड़े ध्यान से देखा और बोला — “ओ ऐडम के बेटे तुम देखने में तो इतने ताकतवर नहीं लगते हो।”

अमीन बोला — “शक्ल पर मत जाओ। शक्लें तो धोखा भी देती हैं पर मैं तुम्हें अपनी ताकत का सबूत जरूर दूँगा।

कह कर उसने नीचे से एक पत्थर उठाया और उसको गुल की तरफ दिखाता हुआ उससे बोला — “देखो इसमें कुछ पानी सा भरा है। कोशिश करो अगर तुम इसमें से वह पानी निचोड़ कर बाहर निकाल सको तो।”

गुल ने उसके हाथ से वह पत्थर ले लिया और उसे कई तरह से दबा कर देखा पर वह उसमें से कुछ निकाल ही नहीं सका। जब वह थक गया तो बोला — “यह तो नामुमकिन काम है।”

इस्फ़ाहानी बोला — “पर मेरे लिये यह बहुत आसान काम है। देखो।” कह कर उसने गुल से वह पत्थर ले लिया और उसने उसे

अँधेरे का सहारा ले कर अपने हाथ में रखे अंडे से बदल लिया। उसने अंडे को अपने हाथ में दबाया तो वह तुरन्त ही फूट गया और उसमें से पीला पीला पानी नीचे टपक पड़ा।

गुल ने भी उस पत्थर की चटकने की आवाज सुनी और उसे देखा तो उसका मुँह तो आश्चर्य से खुला का खुला ही रह गया।

अमीन ने अँधेरे का सहारा ले कर वह पत्थर नीचे रख दिया और एक दूसरा पहले वाले से कुछ ज़्यादा गहरे रंग का पत्थर उठा लिया और उसे गुल को दिखा कर बोला — "देखो मुझे लगता है कि यह नमक का एक टुकड़ा है। अगर तुम इसे तोड़ कर देखोगे तो तुम्हें पता चल जायेगा।"

पर गुल ने उसकी तरफ देखते हुए स्वीकार किया कि न तो उसके अन्दर इतना ज्ञान है और न ही ताकत है कि वह उसको तोड़ कर देखे।

अमीन ने उससे वह पत्थर ले लिया और उसको अपने नमक के टुकड़े से बदल कर दबा कर तोड़ते हुए उसे दिखाया कि वह नमक का ही टुकड़ा था और उसको उसने कितनी आसानी से तोड़ दिया था। टूटे हुए नमक के टुकड़े उसने गुल के हाथ पर रख दिये।

गुल उस नमक के टुकड़े का चूरा बना देख कर उसको चख कर देखा तो अपनी बेवकूफी और उस आदमी की चतुरायी और ताकत पर आश्चर्य करता खड़ा का खड़ा रह गया।

न तो उसको इस बात की चिन्ता हुई कि वह अपनी ताकत को तौल सके और ना ही उसको इस बात का ख्याल आया कि वह अपने आपको सुरक्षित रखने के लिये किसी जंगली जानवर के रूप में आ जाये क्योंकि अमीन ने उसको चेतावनी दे दी थी क्योंकि अगर उसने किसी भी तरह का धोखा देने की कोशिश की तो वह उसको तुरन्त ही मार देगा।

क्योंकि गुल हालाँकि बहुत दिनों तक जीते हैं पर वे अमर नहीं होते।

इस हालत में उसने सोचा कि यही अच्छा रहेगा कि तब तक के लिये अमीन के साथ सुलह कर ली जाये जब तक उसको मारने का उसके पास कोई मौका न आ जाये।

सो वह उससे बोला — "अरे वाह तुम तो बहुत ही लाजवाब आदमी हो। क्या तुम मेरे घर में ठहर कर मेरा मान बढ़ाओगे। मेरा घर यहीं पास में ही है। वहाँ तुमको तरोताजा होने की सारी चीज़ें मिल जायेंगी। रात को तुम वहाँ थोड़ा आराम करना और फिर कल सुबह अपनी यात्रा पर चले जाना।"

"मुझे तुम्हारा यह प्रस्ताव मानने में कोई ऐतराज नहीं ओ मेरे दोस्त गुल। मैं इसे स्वीकार करता हूँ। पर ध्यान रखना पहली बात तो यह कि मैं बहुत ही भावुक हूँ। मेरे सामने कोई ऐसा काम नहीं करना या कोई ऐसी बात नहीं करना जिससे मेरी ज़रा सी भी बेइज़्ज़ती हो।

दूसरी बात यह कि मेरी निगाह बहुत तेज़ हैं वे तुम्हारे प्लान को उतने ही साफ तरीके से देख लेंगी जितनी साफ तरीके से मैंने अपने सामने पड़े पत्थर में नमक देखा था।

तो जब तुम मेरी मेहमाननवाजी करो तो ध्यान रखना कि तुम मेरे साथ किसी भी तरह की कोई चालाकी न खेलो वरना उसके लिये तुम्हें पछताना पड़ेगा।"

गुल ने भी अपने मालिक मृत्यु दूत के सिर की कसम खा कर वायदा किया कि वह अपने मेहमान को कोई ऐसी बात नहीं कहेगा जिससे उसकी शान में कोई बट्टा लगे। और वह अपनी मेहमानदारी और दोस्ती के सब नियम निभायेगा।

सन्तुष्ट हो कर अमीन टेढ़े मेढ़े रास्तों से हो कर ऊँची नीची पहाड़ियों पर चढ़ते उतरते गहरी घाटियों को पार करते हुए गुल के पीछे पीछे चल दिया।

इस तरह चलते चलते वे एक गुफा के पास आ पहुँचे। गुफा में बहुत ही हल्की सी रोशनी हो रही थी। वहाँ पहुँच कर गुल बोला — "मैं यहाँ रहता हूँ। यहाँ मेरे दोस्त को अपने तरोताजा होने के लिये सब कुछ मिल जायेगा।"

ऐसा कह कर वह अमीन को उस गुफा में बने कई कमरों में ले गया जहाँ हर प्रकार का अनाज भरा पड़ा था और बहुत सारी चीज़ें पड़ी थीं जो उसने आते जाते यात्रियों को इधर बहका कर ला कर से लूटी थीं।

जिनकी किस्मतों को अमीन भी अच्छी तरह जानता था वह अब उनकी हड्डियों के ऊपर से लुढ़कता पुढ़कता सा हो कर चल रहा था। उसको पुराने ढाँचों की बुरी बू भी आ रही थी।

गुल ने एक बहुत बड़ा सा चावल का थैला उठाया और बोला — "मुझे आशा है कि यह तुम्हारे खाने के लिये काफी होगा। तुम जैसे ताकतवर आदमी की भूख तो अच्छी होगी।"

अमीन बोला — "बिल्कुल। पर मैंने एक भेड़ और इतना चावल जितना तुमने अब मेरे लिये निकाला है अपनी यात्रा पर चलने से पहले ही खा लिया था इसलिये अब मुझे ज़्यादा भूख नहीं है। फिर भी मैं तुम्हारे चावलों में से थोड़ा सा चावल इसलिये खा लूँगा ताकि तुम्हारी मेहमानदारी की बेइज़्ज़ती न हो।"

गुल बोला — "धन्यवाद। पर मैं इसे तुम्हारे लिये उबाल देता हूँ। तुम अनाज और माँस कच्चा तो खाते नहीं न जैसे कि हम लोग खाते हैं।"

कह कर उसने सामने पड़े हुए बहुत सारे बरतनों में से एक बरतन उठाया और बोला — "यह एक बरतन है। इसी में हम चावल उबाल लेंगे।"

फिर उसने छह बैलों की खालों से बनाया गया एक थैला उसे देते हुए कहा — "मैं आग जलाने के लिये लकड़ी लाने के लिये बाहर जाता हूँ तब तक तुम इस बरतन में पानी भर लाओ।"

अमीन वहाँ तब तक इन्तजार करता रहा जब तक गुल गुफा में से चला नहीं गया। फिर वह उस बहुत बड़े साइज़ के थैले को घसीटते हुए एक नदी के किनारे आया जो उस गुफा के दूसरी तरफ से निकल रही थी और कुछ गज जा कर गायब हो जाती थी।

अमीन सोचने लगा "मैं अपनी कमजोरी कैसे छिपाऊँ। यह थैला तो इतना ज़्यादा बड़ा था कि मैं इसको यहाँ तक खाली ही बड़ी मुश्किल से घसीट कर ला सका। और जब यह पानी से भर जायेगा तो इसको ले जाने के लिये तो कम से कम 20 ताकतवर लोग चाहिये। अब मैं क्या करूँ।

अब तो जरूर ही यह आदमी खाने वाला गुल मुझे खा जायेगा जिसके ऊपर मैंने अपनी ताकत का रौब डाल रखा है।"

कुछ देर तक सोचने के बाद इस्फ़ाहानी ने एक प्लान बनाया और उसने उस नदी से जहाँ उसका खाना पकने वाला था वहाँ तक एक छोटी सी नहर बनानी शुरू की।

इतने में उसको गुल की आवाज सुनायी पड़ी — "यह तुम क्या कर रहे हो। मैंने तुम्हें थोड़ा सा चावल उबालने के लिये पानी लाने के लिये भेजा था और तुमने एक घंटा लगा दिया। क्या तुम उस थैले को पानी से भर कर घर नहीं ला सकते थे।"

अमीन बोला — "क्यों नहीं। मैं उसको जरूर ला सकता हूँ अगर मैं सन्तुष्ट होता तो। आखिर मेरे ऊपर तुम्हारी मेहरबानियाँ भी तो हैं। उनका बदला मैं अपनी ताकत से चुकाना चाहता था।

मैं तो तुम्हारी इस सारी नदी को भी उठा कर ला सकता था अगर तुम्हारे थैले में इतनी जगह होती तो।"

फिर उसने जहाँ उसने नहर निकालनी शुरू की थी उस जगह को उसे दिखाते हुए कहा पर इधर देखो यह वह जगह है जहाँ आदमी का अपने शरीर की मेहनत बचाने के लिये उसका दिमाग काम करना शुरू करता है।

हालाँकि यह नहर तुमको बहुत छोटी दिखायी देती है पर यह जब पूरी हो जायेगी तो यह इस नदी के पानी को गुफा के दूसरी तरफ ले जायेगी। जहाँ इसको ले जा कर मैं इसके ऊपर बाँध बनाऊँगा जिसको तुम जब चाहो खोल सकते हो और जब चाहे बन्द कर सकते हो।

इससे तुम अपनी बहुत सारी मेहनत बचा सकते हो। पर मैं तुमसे विनती करता हूँ कि तुम मुझे इस समय अकेला छोड़ दो ताकि मैं इसे खत्म कर सकूँ।"

कह कर उसने फिर से नहर खोदना शुरू कर दिया। गुल बोला — "यह तुम क्या बेकार की बातें कर रहे हो।" और यह कहते हुए उसने उससे खाल का थैला ले लिया और उसे पानी से भरने लगा।

"मैं अपना पानी अपने आप ले जाऊँगा और मेरी बात मानो तो जिसे तुम नहर कहते हो उसको बनाना छोड़ दो। आओ चलो।

जल्दी से खाना खाओ और फिर सो जाओ। यह बढ़िया काम अगर तुम पूरा करना ही चाहते हो इसे कल सुबह पूरा कर लेना।"

अमीन ने अपने आपको इस काम से बचने के लिये बधाई दी और अपने मेजबान की सलाह मानने में बिल्कुल भी देर नहीं लगायी।

घर आ कर उसने पेट भर कर खाना खाया जो गुल ने उसके लिये बनाया था और फिर एक बहुत ही कीमती बिछौने पर सोने चला गया। बिछौने की ये चीज़ें उसने अपने कमरों में रखी हुई कई चीज़ों में से निकाली थीं।

गुल ने भी अपना बिस्तर बिछाया और तुरन्त ही सोने चला गया और खर्राटे मारने लगा। पर अमीन को तो चिन्ता लगी थी सो वह वैसा ही नहीं कर सका।

वह बीच रात में उठा एक लम्बा सा तकिया लिया उसको अपनी ओढ़ने की चादर के नीचे रखा जिससे ऐसा लगे कि वह वहीं सो रहा है और गुफा के एक दूसरे कोने में जा कर छिप गया ताकि वह वहॉ से गुल की कार्यवाहियों पर नजर रख सके।

उसने देखा कि दिन निकलने से कुछ ही देर पहले गुल उठा और बिना कोई शोर किये अमीन के बिस्तर की तरफ बढ़ा। वहॉ आ कर उसने पक्का किया कि अमीन ठीक से सो रहा है या नहीं और जब उसे यह पक्का हो गया तो उसने अपनी चलने वाली छड़ी ली। उसकी यह छड़ी एक पेड़ के तने जैसी थी।

उसने अपनी इस छड़ी से जहाँ उसको लगा कि अमीन का सिर रहा होगा सात बार बहुत ज़ोर ज़ोर से मारा। उसको चिल्लाने की या किसी और चीज़ की कोई आवाज नहीं आयी तो वह मुस्कुरा दिया।

उसको यह विश्वास हो गया कि उसने अमीन को मार दिया है। फिर भी एक बार और पक्का करने के लिये उसने उसे सात बार अपने उसी छड़ी से दोबारा मार दिया। इसके बाद वह सन्तुष्ट हो कर अपने बिस्तर पर वापस चला गया।

वह मुश्किल से अभी सोया भी नहीं था कि अमीन ने जो अपने बिस्तर में घुस गया था अपनी ओढ़ने वाली चादर से अपना सिर बाहर निकाला और बोला — "दोस्त गुल यह कौन सा कीड़ा हो सकता है जो मेरे ऊपर फड़फड़ा कर मेरी नींद खराब कर गया। मैंने अपनी ओढ़ने वाली चादर पर उसके पंखों की फड़फड़ाहट की आवाज सात बार महसूस की।

यह कीड़े तो मुझे बहुत परेशान कर रहे हैं। हालाँकि ये किसी आदमी को कोई नुकसान तो नहीं पहुँचा रहे पर फिर भी वे कम से कम नींद तो खराब करते ही हैं।"

गुल ने जब अमीन को बोलते सुना तो वह तो बहुत दुखी हुआ। पर जब उसने उसका कहा यह सुना कि उसने सात बार उस कीड़े के पंखों का ठकठकाना सुना था तो वह तो डर के मारे काँप

ही गया क्योंकि उन सात मारों की तो एक मार ही एक हाथी को मार देने के लिये काफी थी।

उसने सोचा कि वह अब इस आश्चर्यजनक आदमी के साथ वहाँ सुरक्षित नहीं था सो वह तुरन्त उठा और अमीन को वहाँ अकेला छोड़ कर खुद गुफा छोड़ कर भाग गया।

गुल के वहाँ से भाग जाने के बाद अमीन ने सोचा कि वह इसकी वजह को ही नष्ट करके रहेगा सो वह तुरन्त उठा कर उसकी गुफा में घूम घूम कर उसका खजाना ढूँढने लगा। और साथ में उसको वहाँ से उसे अपने घर ले जाने की तरकीब भी सोचने लगा।

जब उसने गुफा में रखी सारी चीज़ें देख लीं तो उसने उसमें से एक बन्दूक उठायी जो शायद उसने किसी यात्री से छीनी होगी और सड़क पर चल दिया।

वह वहाँ से थोड़ी ही दूर गया होगा कि उसने देखा कि गुल एक बहुत बड़ा डंडा लिये चला आ रहा है। उसके साथ में एक लोमड़ा भी है। इस चालाक जानवर लोमड़े के बारे में अमीन को जितनी भी जानकारी थी उसने उसको यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि लगता है कि जरूर उसने उसके दुश्मन का साथ दिया है।

पर उसकी समझ ने अभी उसका साथ नहीं छोड़ा था। उसने एक अपनी बन्दूक से एक गोली लोमड़े के सिर में मारते हुए कहा — "यह ले मेरा हुकुम न मानने का इनाम। ओ जंगली। तूने मुझे सात गुल लाने का वायदा किया था ताकि मैं उन्हें बाँध कर

इस्फ़ाहान ले जा सकूँ पर तू तो मेरे लिये केवल एक ही गुल ले कर आया है और वह भी जो पहले से ही मेरा गुलाम है।"

कह कर वह फिर गुल की तरफ बढ़ा पर गुल पहले ही वहाँ से अपने डंडे के सहारे पहाड़ियाँ पार करता हुआ उड़न छू हो गया था।

अमीन ने पहले से ही गुफा से सड़क तक आने का रास्ता देख रखा था सो वहाँ से वह सबसे पास के शहर गया वहाँ से उसने जो सामान अभी कब्जे में किया था उसको घर ले जाने के लिये कुछ ऊँट और खच्चर लिये।

जिन लोगों का सामान गुल ने लूट लिया था उनमें से जो लोग अभी भी ज़िन्दा थे उनको उनका सामान वापस दे कर बाकी बचा सामान खुद रख लिया। इस तरह से वह अपनी होशियारी से एक अमीर आदमी बन गया था।

5 सिद्दी कुर की कहानियाँ[37]

ओ नॉगासूना गारबी[38]। तू तो बहुत शानदार है अन्दर से भी और बाहर से भी। तू तो नम्रता का पवित्र भंडार है। मैं तेरे आगे अपना सिर झुकाता हूँ। शान्ति से घूमते हुए चान[39] के लिये तूने कैसे कैसे आश्चर्यजनक कारनामे किये।

तू किस तरह से बहुत विद्वान और गुरूओं से मिला यह आगे की 13 कहानियों में बताया गया है। यह पहली कहानी इस बारे में दी जाती है कि ये 13 कहानियाँ कैसे बनीं —

एक बार की बात है कि कुछ ऐसा हुआ कि भारत के बीच के हिस्से में सात भाई रहते थे जो सब के सब जादूगर थे और वहाँ से एक बैरेन[40] दूर दो भाई और रहते थे जो एक चान के बेटे थे।

एक बार चान के दोनों बेटों में से उसका बड़ा बेटा उन जादूगरों के पास गया ताकि वह उनसे जादू की कला सीख सके लेकिन हालाँकि वह उनके पास सात साल तक रह कर पढ़ा फिर भी उन जादूगरों ने उसको जादू की सच्ची चालें नहीं बतायीं।

और फिर एक दिन ऐसा हुआ कि चान का छोटा बेटा अपने बड़े भाई के लिये खाना लाने गया तो उसने दरवाजे में से झाँक कर

---

[37] The Relations of Ssidi Kur (Tale No 5) – a folktale from Kalmuk Tartars, Asia.

[38] Nangasuna Garbi

[39] Chan means King

[40] A measure of distance like Mile or Kilometer.

देखा और जादू की चाभी वहाँ से ले ली। इसके बाद जो कुछ खाना वह अपने बड़े भाई के लिये ले कर आया था उसको उसे दिये बिना ही वह अपने घर महल में लौट गया।

तब चान के छोटे बेटे ने अपने बड़े भाई से कहा — "भैया हमने जादू सीख लिया है। अब हम इसे किसी को बतायेंगे नहीं। हमारे पास अस्तबल में एक बहुत सुन्दर घोड़ा है। इस घोड़े को ले लो और इस घोड़े को ले कर उन जादूगरों के पास मत जाना बल्कि इसे उनके देश में ही बेच देना और उसके बेचने से जो पैसे मिलें उनसे बचने के लिये सामान खरीद लाना।"

यह कह कर उसने अपने आपको एक घोड़े में बदल लिया पर उसके बड़े भाई ने उसकी बात ही नहीं सुनी पर अपने मन में कहा "मैं उनके घर में सात साल तक जादू सीखा और फिर भी कुछ नहीं सीख पाया जबकि मेरे छोटे भाई ने इतना सुन्दर घोड़ा पा लिया तो मैं इस घोड़े पर उधर की तरफ की सवारी करने से कैसे मना कर सकता हूँ।"

सो यह सोच कर वह उसके ऊपर चढ़ गया। अब वह घोड़ा तो क्योंकि जादू का था तो वह तो रुका नहीं उलटे जादू से बँधा हुआ जादूगरों के घर की तरफ भाग लिया। वह उसको भागने से रोक ही नहीं सका।

अब उसने सोचा कि "मैं इसको इन जादूगरों को ही बेच देता हूँ।" ऐसा सोच कर उनके मकान पर पहुँच कर उसने जादूगरों को

आवाज लगायी — "क्या तुम लोगों ने पहले कभी कहीं कोई ऐसा घोड़ा देखा है। देखो यह मेरे छोटे भाई को मिला है।"

यह सुन कर जादूगरों ने आपस में एक दूसरे से बात की और सोचा "यह तो जादू का घोड़ा है। अगर जादू सब जगह एक सा ही होता है तो हम इसको खरीद लेते हैं और फिर इसको मार देंगे।"

यह सोच कर उन्होंने उस घोड़े की बड़े भाई को उसकी मनमानी कीमत दे कर खरीद लिया और उसको एक जगह ले जा कर बाँध दिया ताकि वह उनके हाथ से बच कर कहीं भाग न जाये।

उन्होंने उसको इस तरह से बाँध दिया जैसे वे अभी उसको मारने जा रहे हों – सिर से पूँछ से पैरों से। घोड़े ने सोचा "ओह मेरे भाई ने मेरी बात नहीं सुनी इसी लिये मैं ऐसे लोगों के हाथ पड़ गया। इन लोगों से बचने के लिये अब मैं कौन सी शक्ल लूँ।"

जब घोड़ा यह सोच ही रहा था तो उसने पास के पानी में एक मछली तैरती देखी बस तुरन्त ही वह एक मछली में बदल गया। जादूगरों ने यह देखा तो वे सातों भाई सात सारसों[41] में बदल गये और उसका पीछा करने लगे।

जैसे ही वे मछली को पकड़ने वाले थे कि मछली ने देखा कि फाख्ता ऊपर आसमान में उड़ी जा रही है सो मछली ने फाख्ता का रूप रखा और आसमान में उड़ गयी।

[41] Translated for the word "Heron" – see its picture above.

यह देख कर सातों सारस अब सात बाज़ बन कर पहाड़ों और नदियों के ऊपर उड़ कर उसका पीछा करने लगे। वे उसको यकीनन पकड़ लेते पर फाख्ता पूर्व की तरफ उड़ते हुए एक गुलुमख्शी पहाड़[42] की शान्त गुफा में घुस गया और वहाँ जा कर नॉगासूना बख्शी[43] की गोद में जा कर छिप गया।

यह देख कर सातों बाज़ सात भिखारी बन गये और गुलुमख्शी पहाड़ के पास जाने लगे।

बख्शी ने सोचा "यह सब क्या हो सकता है कि यह फाख्ता इन सात बाज़ों से बचने के लिये यहाँ आ गया है।" ऐसा सोचते हुए बख्शी ने फाख्ता से पूछा — "ओ फाख्ता। तुम इतने डरे हुए यहाँ क्यों आये हो।"

तब फाख्ता ने उन्हें अपने आने की वजह बतायी और फिर बोला — "गुलुमख्शी पहाड़ के दरवाजे पर सात भिखारी खड़े हैं। वे यहाँ आपके पास आयेंगे और कहेंगे "हम आपसे विनती करते हैं कि आप हमें अपनी माला[44] दे दें।" तब मैं अपने आपको माला के ऊपर के मोती या मनका[45] में बदल लूँगा। उसके बाद यह ऊपर वाला मोती आप अपने मुँह में रख लीजियेगा और बाकी की माला आप उनको दे दीजियेगा।"

---

[42] Gulumtschi Mountain

[43] Nangasuna is the name of the person and Baktschi means instructor.

[44] Translated for the word "Rosary" – Hindu Muslims and Sikh use it to count the number of the name of their God. Hindus have 108 beads in their rosary. To begin and to end there is an extra bead.

[45] Translated for the word "Bumba" – the extra bead of a rosary from where the counting begins and where it ends. In Hindi it is called "Manaka".

कुछ ही देर में सातों भिखारी पहाड़ के अन्दर आ गये। जैसा कि फाख्ता ने कहा था उन्होंने उससे उसकी माला माँगी तो बख्शी ने अपनी माला का पहला मोती तो अपने मुँह में रख लिया और बाकी माला उनको दे दी।

माला के मोती जो उन सातों भिखारियों को दिये गये थे वे कीड़े बन गये तो सातों भिखारियों ने अपने आपको मुर्गियों में बदल लिया और उन कीड़ों को खा गये।

तब बख्शी ने अपने मुँह में रखा हुआ माला का पहला दाना अपने मुँह से बाहर निकाल दिया। वह पहला मोती तुरन्त ही एक तलवार हाथ में लिये एक आदमी के रूप में बदल गया और उसने सातों मुर्गियों को मार दिया। वे सातों मुर्गियाँ आदमी के ढाँचे में बदल गयीं।

यह देख कर बख्शी तो परेशान हो गया। उसकी आत्मा उसे कचोटने लगी। वह बोला — "एक आदमी को बचाने के लिये मैंने सात आदमियों को मार दिया। यह सब कुछ तो ठीक नहीं हुआ।"

तो दूसरे आदमी ने जवाब दिया — "मैं एक चान का बेटा हूँ इसलिये आपने मेरी जान बचा कर जो कई आदमियों को मारा है तो आपके उन पापों का प्रायश्चित भी मैं ही करूँगा और आपको भी इनाम देने के लिये भी मैं वही करूँगा जो आप मुझसे करने के लिये कहेंगे।"

बख्शी जी बोले — "तो अब तुम ऐसा करो कि मौत के ठंडे जंगल[46] में एक सिद्दी कुर रहता है। उसके शरीर का ऊपरी हिस्सा तो सोने का बना हुआ है उसका नीचे का हिस्सा पीतल का बना हुआ है और उसका सिर चाँदी से ढका हुआ है।

तुम उसको पकड़ लेना और उसे कस कर पकड़ कर रखना। जो भी इस आश्चर्यजनक सिद्दी कुर को ढूँढ लेगा मैं उसको धरती पर एक हजार साल की उम्र दे दूँगा।"

जब वह ऐसा बोला तो उस नौजवान ने कहा — "मुझे उसको ढूँढने के लिये कौन सा रास्ता लेना चाहिये मुझे क्या खाना चाहिये मैं वहाँ कैसे जाऊँगा मेहरबानी करके मुझे यह सब बतायें।"

इस पर बख्शी जी बोले — "जो जो तुमने मुझसे पूछा है वह मैं तुम्हें सब अभी बताता हूँ। यहाँ से एक बैरैन[47] दूर तुम एक अँधेरे जंगल में पहुँच जाओगे। वहाँ तुमको उस जंगल में से एक बहुत ही तंग रास्ता जाता हुआ मिलेगा।

वह जंगल आत्माओं भरा हुआ है। जब तुम आत्माओं के पास पहुँच जाओगे तो वे तुम्हें चारों तरफ से तंग करेंगी तब तुम अपनी बहुत ज़ोर की आवाज में चिल्लाना "आत्माओं चू लू चू लू सोची।"

[46] Cold Forest of Death

[47] Berren is a measurement of distance

जब तुम ये शब्द बोलोगे तो वे अनाज के दानों की तरह बिखर जायेंगी। फिर तुम और आगे बढ़ोगे तो तुम्हें आत्माओं की एक और भीड़ मिलेगी वहाँ तुम चिल्लाना "आत्माओं चू लू चू लू सोसी।"

कुछ दूर और आगे जाने पर तुमको बच्चों की कुछ आत्माऐं मिलेंगी। उनसे तुम यह कहना "ओ बच्चों की आत्माओं री रा पा द्रा।"

इस जंगल के बीच में ही एक अमीरी पेड़[48] के पास वह सिद्दी कुर बैठता है। जब वह तुमको देखेगा तो वह उस पेड़ पर चढ़ने की कोशिश करेगा पर तुम अपने साथ चाँद कुल्हाड़ी[49] ले कर जाना। अपने चेहरे पर गुस्से का भाव लाते हुए उस कुल्हाड़ी को पेड़ के पास ले जाना और सिद्दी कुर को नीचे उतरने के लिये कहना।

उसको यहाँ लाने के लिये तुमको एक ऐसे थैले की जरूरत पड़ेगी जिसमें सौ आदमी आ जायें। उसको जल्दी से बाँधने के लिये तुम्हें यह सौ फ़ैथम[50] रस्सी काफी होगी। खाने के लिये यह कभी न खत्म न होने वाली केक लो।

जब तुम अपना बोझा अपनी पीठ पर लाद लो तो उसके बाद जब तक तुम घर वापस न आ जाओ तुम बोलना नहीं। तुम्हारा नाम चान का बेटा है और क्योंकि तुम गुलुमख्शी के शान्त पहाड़ तक

[48] Amiri Tree
[49] Moon axe
[50] One Fathom is equal to 2 yards, so 100 fathoms mean 200 yards.

पहुँच गये हो इसलिये तुम अबसे चान के शान्त घूमते हुए बेटे[51] कहलाओगे।"

बख्शी जी ने यह कह कर उसको आगे का रास्ता दिखा दिया।

जब सिद्दी कुर ने किसी को अपने पीछे आते देखा तो वह अमीरी पेड़ पर जल्दी से चढ़ गया पर चान का बेटा भी पेड़ के पास जल्दी ही आ गया और उसको धमकाते हुए बोला —

"मेरे बख्शी नॉगासूना गरबी हैं। मेरी कुल्हाड़ी का नाम सफेद चॉद है। कभी खत्म न होने वाली केक मुझे ज़िन्दा रखती है। यह मेरा थैला सौ आदमियों को भरने लायक है जो तुम्हें यहॉ से ले जाने के लिये काफी होगा। और यह दो सो गज रस्सी तुम्हारे बॉधने के लिये काफी है।

मैं खुद चान का शान्त घूमता हुआ बेटा हूॅ। या तो तुम नीचे उतरो नहीं तो मैं इस पेड़ को काट डालूॅगा।"

सिद्दी कुर बोला — "नहीं नहीं इस पेड़ को मत काटो मैं नीचे आता हूॅ।" कह कर वह पेड़ से नीचे उतर आया।

जब वह पेड़ से नीचे उतर आया तो चान के बेटे ने उसको अपने थैले में डाल लिया। थैले को रस्सी से कस कर बॉध लिया कुछ केक खाया और अपना यह बोझा लिये बहुत दिनों तक घूमता रहा।

---

[51] The Peaceful Wandering Son of Chan

काफी समय बाद सिद्दी कुर ने चान के बेटे से कहा — "क्योंकि यह हमारी यात्रा बहुत लम्बी और थकाने वाली है तो या तो मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ या फिर तुम मुझे एक कहानी सुनाओ।"

चान का बेटा बिना एक शब्द भी बोले चुपचाप चलता रहा तो सिद्दी कुर फिर बोला — "अगर तुम मुझे कहानी सुनाओगे तो हॉ में सिर हिला दो और अगर मुझे तुम्हें कहानी सुनानी है तो तुम ना में अपना सिर हिला दो।"

लेकिन चान के बेटे ने क्योंकि बिना कोई शब्द बोले अपना सिर ना में हिलाया तो सिद्दी कुर ने उसको यह कहानी सुनायी —

5–1 एक अमीर नौजवान के कारनामे[52]

यह बहुत पहले की बात है कि एक राज्य में एक नौजवान लड़का, एक हिसाब रखने वाला[53], एक मैकेनिक, एक पेन्टर, एक डाक्टर और एक लोहार रहते थे। वे सब एक साथ अपने अपने घर से अपने अपने माता पिता से इजाज़त ले कर विदेश की यात्रा पर निकले।

काफी दूर चलने के बाद वे एक नदी के मुँहाने पर आये। वहाँ उन सबने अपना अपना ज़िन्दगी का एक पेड़[54] लगाया और फिर हर एक नदी के एक एक स्रोत के सहारे सहारे अपनी अपनी किस्मत आजमाने चल दिये।

एक जगह पहुँच कर उन्होंने एक दूसरे से कहा कि हम लोग यहीं मिलेंगे। अगर किसी भी वजह से हममें से कोई भी यहाँ न आ पाये तो उसकी ज़िन्दगी का पेड़ मुरझाया हुआ मिलेगा। और फिर हम उसको वहीं ढूँढेंगे जिधर की तरफ वह गया हुआ होगा। इस बात पर राजी हो कर वे वहाँ से एक दूसरे से अलग हो गये।

नौजवान ने नदी के स्रोत पर एक बहुत सुन्दर बागीचा देखा जिसमें एक घर था। उसके दरवाजे पर एक बूढ़ा और एक बुढ़िया

---

[52] The Adventures of the Rich Youth (Tale No 5-1) – a folktale from Kalmuk Tartars, Asia.

[53] Translated for the word "Calculator"

[54] Translated for the words "Tree of Life". People plant them so that when they are absent these types of trees tell about the condition of the person, for example if a person is in trouble the tree of his life may wither leaves, or its leaves may go dry etc.

बैठे हुए थे। दोनों ने नौजवान से कहा — "गुड डे नौजवान। तुम कहाँ से आ रहे हो और किधर जा रहे हो।"

नौजवान बोला — "मैं एक दूर देश से आ रहा हूँ और अपनी किस्मत आजमाने निकला हूँ।"

बूढ़े और बुढ़िया ने कहा — "यह तो बहुत अच्छी बात है कि तुम इधर आ निकले हो। हमारे एक बेटी है जो देखने में पतली दुबली है और व्यवहार में बहुत नम्र है। तुम उसके साथ शादी कर लो और हमारे बेटे जैसे बन जाओ।"

उनके यह कहने के बाद उनकी बेटी वहाँ आयी। तो जब नौजवान ने उसको देखा तो अपने मन में सोचा "यह तो ठीक है कि मैंने अपने माता पिता को छोड़ा पर यह लड़की तो तांगारी[55] से भी ज़्यादा सुन्दर है। मैं इससे शादी कर लेता हूँ और यहीं रह जाता हूँ।"

लड़की बोली — "यह तो बड़ी अच्छी बात है कि आप यहाँ रहना चाह रहे हैं।" सो वह लड़की उसको अन्दर ले गयी दोनों में आपस में बातें कीं और फिर दोनों खुशी खुशी वहीं रहने लगे।

अब ऐसा हुआ कि उस देश में एक बड़ा ताकतवर चान राज करता था। एक बार वसन्त के समय में उसके नौकर नहाने के लिये गये तो उन्होंने नदी के मुँहाने पर पानी में एक जोड़ी कान के बुन्दे

[55] Tangari means "god-like Spirits of the Male and Female sexes"

देखे जो अपने अमीर नौजवान की पत्नी के थे। क्योंकि वे इतने ज़्यादा सुन्दर थे कि वे लोग इन्हें चान के पास ले गये। वह भी उनको देख कर आश्चर्य में पड़ गया।

उसने अपने नौकरों से कहा — “जहाँ यह नदी गिरती है वहाँ इन सुन्दर बुन्दों की तरह ही सुन्दर एक स्त्री रहती है। तुम जाओ और उसको यहाँ ले कर आओ।”

सो उसके नौकर वहाँ गये उस स्त्री को देखा तो वह तो उसको देख कर दाँतों तले उँगली दबा गये। उन्होंने आपस में कहा “इस स्त्री को तो कोई अगर हमेशा भी देखता रहे तो भी नहीं थक सकता।”

पर स्त्री से उन्होंने कहा — “उठो और हमारे साथ चान के पास चलो।” सो अमीर नौजवान अपने पत्नी को ले कर चान के पास गया।

लेकिन चान ने जब उसको देखा तो वह बोला — “यह लड़की तो तांगारी है। इसके मुकाबले में मेरी पत्नियाँ तो बहुत ही बदसूरत हैं।” वह तो उसको देखते ही उसके प्यार में पड़ गया था। उसके बाद तो वह उसको अपने घर से जाने ही न दे।

वह फिर बोला — “इस नौजवान को यहाँ से दूर भगाओ।”

उसका यह हुकुम सुन कर उसके नौकर आगे बढ़े उन्होंने नौजवान को पकड़ा और उसको पानी के पास ले गये। वहाँ उन्होंने नदी के पास ही एक गड्ढा खोद कर उसमें लिटा दिया और उसके

ऊपर एक बहुत बड़ा पत्थर रख दिया और इस तरह से उसे मार दिया।

कुछ समय बाद नियत समय पर उस अमीर नौजवान के पाँचों साथी – हिसाब रखने वाला, मैकेनिक, पेन्टर, डाक्टर और लोहार वापस लौट आये और अपनी अपनी ज़िन्दगी के पेड़ों के पास आ गये।

उन्होंने देखा कि अमीर नौजवान तो अभी तक आया नहीं है तो उन्होंने उसके ज़िन्दगी के पेड़ की तरफ देखा तो देखा कि वह तो मुरझा रहा है। उन्होंने उसको नदी के मुँहाने तक ढूँढा पर वहाँ तो उनको वह मिला नहीं।

तब हिसाब रखने वाले ने हिसाब लगा कर बताया कि वह एक चट्टान के नीचे एक गड्ढे में मरा पड़ा है। पर वे उस चट्टान को वहाँ से हटा नहीं सके लोहार ने अपना हथौड़ा लिया और उससे उस पत्थर को मारा और उसे तोड़ कर नौजवान की लाश को बाहर निकाल लिया।

इसके बाद डाक्टर ने ज़िन्दगी लाने वाली एक दवा बनायी और उसे मरे हुए नौजवान के गले में डाली। इस तरह से उसने उसे ज़िन्दा कर लिया।

जब वह ज़िन्दा हो गया तो उन सबने उससे पूछा कि उसको किसने मारा। किस तरीके से मारा गया।

तो उसने उनको सब बातें बतायीं। उसकी बातें सुन कर सबने आपस में बात की तो इस फैसले पर पहुँचे कि "हमको चान से यह सुन्दर लड़की ले ही लेनी चाहिये।"

इस प्लान के अनुसार मैकेनिक ने लकड़ी की एक बहुत ही बढ़िया चिड़िया बनायी जिसको जब ऊपर की तरफ चलाया जाता था तो वह हवा में उड़ जाती थी और जब उसको नीचे की तरफ चलाया जाता था तो वह धरती पर उतर आती थी और जब उसको बॉयी या दॉयी ओर चलाया जाता था तो वह बॉयी और दॉयी ओर भी उड़ जाती थी।

जब वह चिड़िया बन गयी तो पेन्टर ने उसको कई रंगों में रंग दिया। अब वह देखने में इतनी सुन्दर लग रही थी कि वह अब एक असली चिड़िया नजर आ रही थी।

अमीर नौजवान उस चिड़िया के बीच में बैठा चिड़िया को ऊपर उड़ाया और ले जा कर सीधा उसको चान के महल की छत पर उतार दिया। चान और उसके नौकर तो उस चिड़िया को देख कर हैरान रह गये। उन्होंने आपस में कहा "हमने ऐसी चिड़िया तो पहले कभी कहीं देखी नहीं।"

फिर उसने अपनी पत्नी से कहा कि वह महल की छत पर जाये और उस सुन्दर चिड़िया को बहुत सारे किस्म का खाना खिलाये। जब वह उस चिड़िया को खाना खिलाने के लिये ऊपर गयी तो नौजवान चिड़िया का दरवाजा खोल कर बाहर आया।

उसको देख कर चान की पत्नी बोलाी — "मुझे तो तुम्हें इस तरह देखने की बिल्कुल भी आशा नहीं थी। और अब तुम मुझे एक बार फिर मिल गये हो। यह सब इस आश्चर्यजनक चिड़िया की वजह से ही हुआ है।"

इसके बाद नौजवान ने उसे सब बताया कि उसके साथ क्या क्या हुआ था। फिर वह बोला — "हालाँकि अब तुम चान की पत्नी हो पर फिर भी अगर तुम्हारा दिल मुझे चाहता हो तो तुम इस लकड़ी की चिड़िया में बैठ जाओ। इसमें बैठ कर हम हवा में उड़ जायेंगे आगे की चिन्ता कौन करे।"

यह सुन कर पत्नी ने जवाब दिया — "मेरा पहला पति जिससे मेरी किस्मत ने मुझे मिलाया मैं अभी तक उसी की हूँ।" कह कर वे दोनों उसी चिड़िया में बैठ गये और चिड़िया ऊपर उठती चली गयी।

चान ने जब यह देखा तो उसे बहुत गुस्सा आया और वह बोला — "मैंने तो तुझे यहाँ इसलिये भेजा था कि तू इस चिड़िया को खाना दाना खिला सके पर तू तो खुद ही उसमें बैठ कर आसमान में चली गयी।" और यह कह कर वह रोते हुए नीचे जमीन पर गिर पड़ा।

उधर नौजवान ने चिड़िया को अपने साथियों के पास जमीन पर नीचे उतारने के लिये हैन्डिल घुमाया। जब वह नीचे उतर आया तो वह चिड़िया में से बाहर निकला तो उसके साथियों ने उससे पूछा कि

वह जिस काम के लिये गया था क्या वह काम वह पूरा कर आया है। इस पर उसकी पत्नी चिड़िया में से बाहर निकली तो जिसने भी उसको देखा वही उसके प्यार में पड़ गया।

अमीर नौजवान बोला — "ओ मेरे साथियो। तुम ही समय पर मेरे काम आये हो। तुमने ही मुझे मौत से बचाया है। तुम ही ने मेरी पत्नी को ढूँढने का तरीका दिया। मैं तुमसे विनती करता हूँ कि अब तुम मुझसे मेरे ऊपर जादू करने वाला मत छीनो।"

इस पर हिसाब रखने वाले ने उससे कहा — "क्या मैंने अपने हिसाब किताब से तुम्हारे बारे में यह पता नहीं लगाया कि तुम कहाँ मरे पड़े थे। अगर मैं यह पता नहीं लगाता तो तुम कभी ज़िन्दा ही नहीं होते।"

लोहार बोला — "यह सब बेकार की बात है। अगर तुमने हिसाब किताब कर भी लिया था तो क्या। अगर मैं तुम्हें चट्टान तोड़ कर गड्ढे में से नहीं निकालता तो। इस तरह से चट्टान को तोड़ने के बाद ही तुम अपनी पत्नी को पा सके। इसलिये तुम्हारी पत्नी अब मेरी है।"

यह सुन कर डाक्टर बोला — "चट्टान को तोड़ कर तुमने क्या निकाला केवल एक शरीर ही न। मैंने उसमें जान डाली तब कहीं जा कर उसने अपनी पत्नी को ढूँढा। इस तरह मेरी होशियारी ने यह काम पूरा किया इसलिये तुम्हारी पत्नी अब मेरी है।"

इस पर बेचारा मैकेनिक चुप नहीं बैठ सका वह बोला — "मगर बिना वैसी चिड़िया के तो कोई भी उसकी पत्नी के पास नहीं जा सकता था। बहुत सारे लोगों ने चान को जीतने की कोशिश की पर कोई भी तो इसके घर तक भी नहीं पहुँच सका जहाँ वह रहता है। केवल मेरी चिड़िया के जरिये ही इसकी पत्नी को वहाँ से लाया जा सका। इसलिये यह मेरी है।"

पेन्टर बोला — "यह पत्नी किसी भी लकड़ी की चिड़िया के लिये दाना ले कर नहीं जा सकती थी। यह तो मेरे उसे रंगने का कमाल था कि वह उसे असली चिड़िया समझ कर वहाँ आयी और नौजवान को मिल गयी। इसलिये यह मेरी है।"

जब सारे लोग ऐसा बोल चुके तो उन्होंने अपने अपने चाकू निकाल लिये और एक दूसरे को मार दिया।"

चान के बेटे के मुँह से निकला — "उफ़। बेचारी लड़की।"

सिद्दी कुर बोला — "ओ किस्मत लिखने वाले। तू तो बोल पड़ा।" और यह कह कर वह थैला फाड़ कर बाहर हवा में गायब हो गया।

सो यह थी सिद्दी कुर की पहली कहानी
"एक अमीर नौजवान के कारनामे"

5-2 एक भिखारी के बेटे के कारनामे[56]

सिद्दी कुर के थैला फाड़ कर भाग जाने के बाद चान का बेटा उसे लाने के लिये फिर से मौत के ठंडे जंगल[57] की ओर चला और फिर अमीरी पेड़ के नीचे पहुँच गया और एक बार फिर उसको धमकी दी — "ओ लाश। या तो तुम इस पर से नीचे उतरो या फिर मैं तुम्हारा यह पेड़ काट दूँगा।"

सो सिद्दी कुर फिर से उस पेड़ से नीचे उतर आया। चान के बेटे ने फिर से उसे अपने थैले में बन्द किया थैले को रस्सी से बाँधा कभी खत्म न होने वाली केक में से थोड़ी सी केक खायी और अपना बोझा ले कर फिर से अपने रास्ते चल दिया।

सिद्दी कुर फिर बोला — "क्योंकि हमारा सफर लम्बा है इसलिये समय काटने के लिये या तो मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ और या फिर तुम कोई अच्छी सी कहानी सुनाओ।"

पर चान के बेटे ने बिना कुछ बोले ना में अपना सिर हिलाया तो सिद्दी कुर ने अपनी कहानी शुरू की —

---

[56] The Adventures of the Beggar's Son (Tale No 5-2) – a folktale from Arabia, Asia.

[57] Translated for the words "Cold Forest of Death".

"एक बार की बात कि एक बहुत ही ताकतवर चान एक ऐसे राज्य पर राज करता था जिसमें बहुत सारे बाजार थे। उस राज्य से हो कर एक नदी बहती थी जिसके स्रोत के पास एक बहुत बड़ा दलदल था जिसमें दो मगर मेंढक[58] रहते थे जो उस दलदल में से पानी बाहर नहीं जाने देते थे।

और फिर क्योंकि पानी वहाँ से बाहर नहीं जा पाता था तो खेतों को पानी नहीं मिलता था तो अच्छा और बुरा दोनों ही दुख की वजह बन जाती थीं। जब तक कि उनको एक आदमी खाने के लिये नहीं दे दिया जाता तब तक वे लोग पानी नहीं खोलते थे।

अब एक बार ऐसा हुआ कि इस काम के लिये चान की बारी आयी कि उसको उन मगर मेंढकों को उसको राज्य की खुशहाली के लिये बलि देना था। अब इसके लिये वे मना तो कर ही नहीं सकते थे सो पिता और बेटा दोनों आपस में दुखी हो कर बोले — "यह बताओ कि हम दोनों में से पहले कौन जायेगा।"

पिता बोला — "मैं तो बूढ़ा हूँ और मेरे पीछे मेरे लिये कोई मेरा दुख मनाने वाला भी नहीं है। इसलिये मैं चलता हूँ और तुम मेरी जगह रह कर राज्य की देखभाल करो।"

---

[58] Translated for the words "Crocodile frog". Known from both native legends and sightings, the crocodile frog has been described 7-9 feet long with slimy skin, a pointed head, over-developed hind legs and a short tail.

बेटा बोला — "ओ तांगारी, इस तरह से नहीं होना चाहिये। आपने मुझे कितने प्यार से पाला है पिता जी। अगर चान और चान की पत्नी ज़िन्दा रहेंगे तो फिर मेरे रहने की क्या जरूरत है। मैं जाता हूँ और मगर मैं मेंढकों का खाना बनता हूँ।"

जब वह यह बोला तो पहले तो लोगों ने उसे घेर लिया पर फिर पीछे हट गये। चान के बेटे का एक साथी था एक गरीब का बेटा। वह चान के बेटे के पास गया और बोला — "तुमको अपने माता पिता के कहे अनुसार ही चलना चाहिये। तुमको अपने घर में शान्ति से रहना चाहिये। मैं राज्य की भलाई के लिये मगर मेंढकों का खाना बन कर जाता हूँ। बचपन से जवानी तक आपने मेरी देखभाल की अब मैं आपकी किस्मत बाँटूँगा। मैं आपके साथ चलता हूँ।"

तब वे दोनों उठे और मगर मेंढकों के पास पहुँचे। दलदल के किनारे पर ही उनको दोनों मगर मेंढक मिल गये – पीला मेंढक और नीला मेंढक। वे दोनों आपस में बात कर रहे थे।

पीला मगर मेंढक कह रहा था — "अगर चान का बेटा और उसका साथी हमारे पास आ रहे हैं और अगर उनको यह बात नहीं मालूम है कि अगर वे तलवार से हमारा गला काट दें और चान का बेटा मुझे खा ले और गरीब आदमी का बेटा तुझे यानी नीले मेंढक को खा ले तो उनके मुँह से सोना और पीतल निकलने लगेगा। और तब देश को मेंढकों के लिये खाना जुटाने की जरूरत भी नहीं पड़ेगी।"

चान के बेटे को कई सारी भाषाऐं आती थीं। उसने उन दोनों मेंढकों में हुई बातचीत को समझ लिया। दोनों बच्चों ने अपनी अपनी तलवार से उन दोनों मगर मेंढकों के सिर काट दिये।

उनको मारने के बाद उन दोनों ने अपने अपने मुँह से जी भर कर सोना और पीतल निकाले। फिर चान के बेटे के साथी ने कहा —"अब तो हमने दोनों मगर मेंढकों को मार दिया गया है सो अब नदी का पानी रोकने वाला कोई नहीं रहा तो अब हमको अपने देश वापस लौट जाना चाहिये।"

पर चान का बेटा इस बात पर राजी नहीं हुआ। वह बोला — "हमको अभी अपने देश वापस नहीं जाना चाहिये कहीं ऐसा न हो कि वे यह कहें कि वे आत्माऐं बन गये हैं। इसलिये अभी हमको थोड़ी दूर और जाना चाहिये।"

सो वे और आगे चल दिये। जब वे एक पहाड़ के ऊपर से गुजर रहे थे तो वे एक गुफा के पास आये जिसमें दो स्त्रियॉ रहती थीं – मॉ और बेटी। और दोनों ही बहुत सुन्दर थीं।

उन्होंने सोचा कि वे उनसे कुछ तेज़ शराब ले लेंगे ताकि वे उसे पी सकें। उन स्त्रियों ने उनसे पूछा कि वे उस ताकतवर शराब के बदले में उन्हें क्या देंगे। इस पर उन दोनों ने अपने अपने मुँह से सोना और पीतल निकाल दी।

स्त्रियों को यह देख कर बड़ा आनन्द आया तो उन्होंने उनको अपने घर के अन्दर बुला लिया और उन्हें बहुत सारी शराब दी।

इतनी शराब पी कर वे धुत हो गये और सो गये। दोनों स्त्रियों ने उनको पास जो कुछ भी था सब ले लिया और उनको गुफा के दरवाजे के बाहर फेंक दिया।

जब उनकी ऑख खुली तो चान का बेटा और उसका साथी फिर एक नदी के सहारे सहारे चल दिये और आखिर एक जंगल में आ गये। वहॉ उनको कुछ बच्चे लड़ते झगड़ते मिल गये। उन्होंने बच्चों से पूछा — "तुम लोग इस तरह से क्यों झगड़ रहे हो?"

बच्चे बोले — "हमको यहॉ जंगल में एक टोपी मिली है। हममें से हर बच्चा उसको लेना चाहता है।"

"उस टोपी का क्या फायदा है?"

"इस टोपी में एक खासियत है और वह यह कि जो कोई भी इसे अपने सिर पर पहन लेगा उसे कोई नहीं देख सकेगा – न तो कोई तांगारी[59] ना कोई आदमी और ना ही कोई शकूर[60]।"

चान का बेटा बोला — "अच्छा ऐसा करो कि तुम जंगल के दूसरे कोने तक जाओ और फिर मेरे पास भाग कर आओ। इतने समय तक यह टोपी मेरे पास रहेगी और जो कोई भी मेरे पास सबसे पहले आयेगा मैं उसी को यह टोपी दे दूॅगा।"

चान के ऐसा बोलने पर सब बच्चे वहॉ से जंगल के दूसरे कोने तक भाग गये और फिर चान के बेटे के पास भाग कर आये पर

[59] Taangaari means any kind of spirit

[60] Tschadkur means evil spirit

फिर भी उनको अपनी टोपी नहीं मिल पायी क्योंकि उसे तो चान के बेटे ने पहन रखी थी। और टोपी पहनने की वजह से वह किसी को दिखायी नहीं दे रहा था।

वे बोले — "अरे अभी तो यहीं थी अभी कहाँ चली गयी।"

उन्होंने उस टोपी को ढूँढने की काफी कोशिश की पर जब उनको वह नहीं मिली तो वे सब रोते हुए अपने अपने घर चले गये।

चान का बेटा और उसका साथी दोनों आगे बढ़े। चलते चलते वे फिर एक जंगल में आ गये जहाँ उनको कुछ शकूर आपस में लड़ते मिल गये। उसने उनसे भी पूछा कि वे आपस में क्यों लड़ रहे थे।

उनमें से हर शकूर बोला — "ये जूते मेरे हैं। ये जूते मेरे हैं।"

चान का बेटा बोला — "ऐसे ये जूते कैसे हैं जो हर एक इनको लेना चाहता है।"

शकूर बोले — "जो भी इन जूतों को पहन लेगा वह तुरन्त ही उसी जगह पहुँच जायेगा जहाँ वह जाना चाहेगा।"

चान का बेटा बोला — "तुम सब लोग उधर की तरफ चले जाओ और जो मेरे पास दौड़ कर सबसे पहले आयेगा ये जूते उसी को मिलेंगे।"

शकूरों ने जब यह सुना तो चान के बेटे की बतायी जगह भाग गये। इस बीच चान के बेटे ने वे जूते अपने साथी के कपड़ों में

छिपा दिये थे। उसी के सिर पर टोपी भी रखी हुई थी। और फिर जब शकूर लौट कर आये तो वहॉ तो उन्हें कोई जूते नहीं दिखायी दिये। उन्होंने उन्हें चारों तरफ ढूँढा पर सब बेकार सो वे चले गये।

उनके जाने के बाद दोनों ने एक एक जूता पहना और इच्छा की वे किसी चान के राज्य में पहुँच जायें जहॉ चुनाव हो रहा था। उन्होंने अपनी इच्छा कही और सो गये। अगले दिन सुबह उन्होंने अपने आपको उसी राज्य में शाही महल के पास एक पेड़ के खोखले तने में पाया जहॉ चुनाव हो रहा था।

उस दिन वहॉ लोग इसलिये जमा थे क्योंकि वहॉ उन्हें तांगारी के कहे अनुसार बलिंग[61] फेंकना था। जिसके सिर पर भी वह बलिंग जा कर गिरेगी वही उनका चान बनने वाला था। ऐसा ही वे सब कह रहे थे और अपना अपना बलिंग फेंक रहे थे।

पर एक पेड़ ने उनके बलिंग पकड़ लिये तो सब लोग एक सुर में चिल्लाये "इसका क्या मतलब है। क्या एक पेड़ हमारा चान बनेगा?"

वे चिल्लाये — "हम देखते हैं कि यह क्या हो रहा है। क्या इस पेड़ ने किसी अजनबी को अपने अन्दर छिपा रखा है।"

सो कुछ लोग उस पेड़ की तरफ बढ़े तो चान का बेटा और उसका साथी दोनों पेड़ के खोखले से बाहर निकले। पर लोगों को अभी भी आश्चर्य हो रहा था। वे एक दूसरे से कहने लगे — "जो

---
[61] Baling – a sacred figure made of dough or paste.

कोई भी इस देश के लोगों के उपर राज करेगा यह अब कल सुबह यह देख कर ही निश्चित किया जायेगा कि किसके मुँह से क्या निकलता है।"

यह कह कर वे सब वहाँ से चले गये। अगली सुबह कुछ लोगों ने पानी पिया और जब उन्होंने उसे मुँह से बाहर फेंका तो कुछ सफेद सफेद सा बाहर निकला। दूसरे लोगों ने घास खायी तो उनके मुँह से हरा हरा निकला।

इसका मतलब यह है किसी ने कुछ खाया तो किसी ने कुछ और जिसने जो खाया उसके मुँह से वही निकला। पर जब चान के बेटे और उसके साथी ने अपने मुँहों मे से कुछ निकालने की कोशिश की तो उनके मुँह से सोना और पीतल निकले। इसलिये उन्हीं को उस राज्य का चान और उसका मुख्य मन्त्री बना दिया गया।

अब जिस महल में चान रहता था उसके पास ही एक बहुत बड़ी इमारत थी जहाँ चान की पत्नी रोज जाया करती थी। चान के मन्त्री ने उसे इस तरह रोज जाते हुए देखा तो सोचा कि "यह चान की पत्नी रोज रोज इस इमारत में क्या करने जाती है।"

यह सोच कर उसने अपने सिर पर जादू की टोपी पहनी और चान की पत्नी के पीछे पीछे चल दिया। वह उसके पीछे पीछे छत तक पहुँच गया। यहाँ आ कर चान की पत्नी ने रेशमी चादरें और तकिये इकट्ठे किये, कई तरह के पेय बनाये कई तरह के मुश्किल से

मिलने वाले मॉस बनाये और फिर उस जगह को खुशबूदार बनाने के लिये अगर और धूप जला दी।

मन्त्री ने क्योंकि टोपी पहन रखी थी इसलिये उसे कोई देख नहीं पा रहा था सो वह चान की पत्नी पास वाली सीट पर जा कर बैठ गया और इधर उधर चारों तरफ देखने लगा।

कुछ ही देर में एक बहुत ही सुन्दर चिड़िया उड़ती हुई वहॉ आयी। चान की पत्नी ने एक धूप दे कर उसका स्वागत किया। चिड़िया आ कर छत पर बैठ गयी और अपने मीठे सुर में चहचहाने लगी।

पर चिड़िया में से सोलांडु[62] निकल आया। सोलांडु की सुन्दरता का तो बखान ही नहीं किया जा सकता। चिड़िया में से बाहर निकल कर वह चादर पर आ कर बैठ गया और वहॉ आ कर उसने वह खाना खाया जो चान की पत्नी ने उसके लिये तैयार करके रखा था।

खाना खा कर वह बोला — "तुम अपने उस पति के बारे में क्या सोचती हो जो तुमको दिया गया है और जिसके साथ तुमने आज की सुबह गुजारी है।"

चान की पत्नी बोली — "मैं उस राजकुमार के गुणों और अवगुणों के बारे में बात करने के लिये उसके बारे में बहुत कम जानती हूँ इसलिये मैं उसके बारे में अभी कुछ कह नहीं सकती।"

---

[62] Solangdu is the son of Taangaari

इस तरह दिन बीत गया और चान की पत्नी घर वापस आ गयी। अगले दिन मन्त्री ने चान की पत्नी का पहले दिन की तरह से फिर पीछा किया।

उस दिन भी वैसा ही हुआ जैसा पहले दिन हुआ था। आज तांगारी के बेटे ने उससे कहा — "कल मैं तुम्हारे पति को देखने के लिये स्वर्ग की एक चिड़िया का रूप रख कर यहाँ आऊँगा।"

चान की पत्नी ने कहा "ठीक है।"

दिन गुजर गया तो मन्त्री ने चान से कहा — "पास में ही तांगारी का सुन्दर बेटा सोलांडु रहता है।" फिर उसने चान को सब कुछ बता दिया जो उसने देखा सुना था।

वह फिर बोला — "वह कल सवेरे ही स्वर्ग की एक चिड़िया के वेश में तुमसे मिलने आयेगा। मैं उस चिड़िया को उसकी पूँछ से पकड़ लूँगा और उसको आग में फेंक दूँगा पर तुम भी अपनी तलवार से उसके छोटे छोटे टुकड़े जरूर कर देना।"

अगली सुबह चान और उसकी पत्नी दोनों बैठे हुए थे कि तांगारी के बेटे ने अपने आपको स्वर्ग की चिड़िया में बदल लिया और महल की तरफ जाने वाली सीढ़ियों पर बैठ गया।

चान की पत्नी ने उसकी तरफ बड़े प्यार भरी नजर से देखा पर मन्त्री ने जिसने अभी भी जादू की टोपी पहनी हुई थी और इस तरह से सबसे अदृश्य था उस चिड़िया को अचानक पूँछ से पकड़ लिया और उसको जलती हुई आग में डाल दिया।

और चान उसे अपनी तलवार से छोटे छोटे टुकड़ों में काट देता पर चान की पत्नी तुरन्त ही उसका हाथ पकड़ लिया जिससे केवल उस चिड़िया के पंख ही घायल हो सके।

चान की पत्नी के मुँह से निकला — "ओह बेचारी चिड़िया।"

चिड़िया भी अधमरी हालत में वहाँ से उड़ गयी। अगली सुबह भी चान की पत्नी फिर से उसी बड़ी इमारत में गयी। उस मन्त्री ने उसे इस बार भी उसका पीछा किया।

चान की पत्नी ने पहले की तरह से फिर से रेशमी चादर और तकिये इकट्ठे किये अच्छा माँस बनाया खुशबुऐं जलायीं पर आज उसको जरूरत से ज़्यादा इन्तजार करना पड़ा। वह काफी देर तक वहाँ अपनी घूरती हुई आँखों से इधर उधर बैठी हुई वहाँ देखती रही।

आखिर चिड़िया बहुत धीरे धीरे उड़ती हुई वहाँ आयी। उसके शारे शरीर पर घाव थे खून था। चान की पत्नी तो यह देख कर रो ही पड़ी। तांगारी के बेटे ने उससे कहा — "रोओ नहीं। तुम्हारे पति का हाथ बहुत ही भारी था। इसके अलावा आग ने भी मुझे इतना जलाया कि मैं अब और नहीं आ पाऊँगा।"

जब उसने ऐसा कहा तो चान की पत्नी बोली — "ऐसा मत कहो पर तुम आते रहो जैसे कि तुमको आना चाहिये। पर अगली पूर्णमासी[63] की रात को तुम जरूर आना।"

[63] Translated for the words "Full Moon"

तांगारी का बेटा यह सुन कर वहाँ से उड़ गया और उस दिन से चान की पत्नी चान को अपने पूरे दिल से प्यार करने लगी।

मन्त्री ने एक बार फिर अपनी टोपी पहनी और इधर उधर घूमते घामते एक मकान के पास पहुँच गया जिसकी झिरी में से उसने देखा कि एक आदमी ने नीचे फर्श पर एक कागज बिछा रखा है जिस पर एक गधे की शक्ल बनी हुई है और वह उसमें बार बार इधर से उधर लोट रहा है। इससे वह एक गधा बन गया और घर के बाहर जा कर रेंकने लगा।

फिर कुछ देर बाद वह अपने घर में वापस आ गया और फिर से उसी शक्ल पर लोट कर आदमी बन गया। आखीर में उसने वह कागज तह किया और तह करके एक बुरचन[64] के हाथ में रख दिया और खुद वह बाहर निकल आया।

जब वह आदमी अपने घर से बाहर निकल गया तो चान का साथी उसके घर में घुस गया और वह कागज वहाँ से निकाल लाया। उसी समय उसको उन माँ और बेटी का बुरा व्यवहार याद आ गया जिन्होंने उनको वह बहुत तेज़ शराब बेची थी। उनको याद करके वह बोला — "अब मैं तुम्हारे अच्छे काम का फल देने के लिये आ रहा हूँ।"

---

[64] Burchan means an idol

कह कर उसने उस स्त्री को तीन सोने के सिक्के दिये। स्त्री बोली — "तुम एक बहुत ही ईमानदार आदमी हो पर तुम्हें इतना सारा सोना मिला कहाँ से?"

मन्त्री बोला — "बस इस कागज पर लोट कर ही मुझे सोना मिल गया।"

यह सुन कर स्त्री बोली — "हमें भी दो न यह कागज ताकि हम भी इस पर लोट कर कुछ सोना कमा सकें।"

मन्त्री ने तुरन्त ही उनको वह कागज दे दिया और वे दोनों उसके ऊपर लोट कर गधे बन गयीं। वह उन गधों को चान के पास ले गया। चान ने कहा — "इनको मिट्टी और पत्थर ढोने के काम के लिये रख लो।"

उसके बाद तीन साल तक वे मिट्टी और पत्थर ढोने का काम करती रहीं। उनकी पीठ पर घाव हो गये थे वह दुखने लगी थी। उनकी ऑखों से ऑसू बहते रहते थे। यह सब देख कर चान ने अपने मन्त्री से कहा — "इन बेरहमों को और मत सताओ।"

सो उनको फिर से उसी कागज पर लोटवाया गया और वे फिर से स्त्रियॉ बन गयीं।

यह सुन कर चान के बेटे के मुँह से निकला — "उफ़ बेचारी स्त्रियॉ।"

यह कहानी सुना कर सिद्दी कुर बोला — “ओ किस्मत बनाने वाले तुम तो फिर बोल पड़े।” कह कर वह उसका थैला फाड़ कर बाहर निकल कर भाग गया।

सो यह थी सिद्दी कुर की दूसरी कहानी
“एक भिखारी के बेटे के कारनामे”

5–3 मसॉग के कारनामे[65]

सिद्दी कुर के थैला फाड़ कर भाग जाने के बाद चान का बेटा उसे लाने के लिये फिर से मौत के ठंडे जंगल[66] की ओर चला और फिर अमीरी पेड़ के नीचे पहुँच गया और एक बार फिर उसको धमकी दी — "ओ लाश। या तो तुम इस पर से नीचे उतरो या फिर मैं तुम्हारा यह पेड़ काट दूँगा।"

सिद्दी कुर उसकी धमकी से डर कर पेड़ पर से उतर कर नीचे आ गया और उसके थैले में आ कर बन्द हो गया। चान के बेटे ने भी उस थैले के मुँह को रस्सी से बाँधा अपनी कभी न खत्म होने वाली केक में से कुछ केक खायी और सिद्दी कुर को अपने कमर पर लाद कर चल दिया।

सिद्दी कुर फिर बोला — "रास्ता लम्बा है तो समय गुजारने के लिये या तो मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ और या फिर तुम मुझे एक कहानी सुना दो। अगर तुम मुझे कहानी नहीं सुनाना चाहते तो अपना सिर ना में हिला कर मुझे बता दो तो फिर मैं कहानी सुना देता हूँ।"

चान के बेटे ने ना में अपना सिर हिला दिया तो सिद्दी कुर ने एक बार फिर अपनी कहानी कहनी शुरू की —

---

[65] The Adventures of Massang (Tale No 5-3) – a folktale from Kalmuk Tartar, Asia.

[66] Translated for the words "Cold Forest of Death".

"यह बहुत पुरानी बात है कि एक देश में एक बहुत ही गरीब आदमी रहता था। उसके पास एक गाय के अलावा और कुछ भी नहीं था। और क्योंकि उसकी गाय के बच्चा होने का कोई मौका नहीं था इससे वह और ज़्यादा दुखी था।

वह कहता "अगर मेरी गाय के कोई बच्चा नहीं होता तो मेरी गाय दूध भी नहीं देगी और फिर मैं भूखा प्यासा मर जाऊँगा। पर जब कुछ महीने बीत गये तो बजाय बछड़े के उस गरीब आदमी को एक सींगों वाला और गाय की जैसी लम्बी पूँछ वाला आदमी मिला।

इस राक्षस को देखते ही गरीब आदमी तो बहुत ही दुखी हो गया और उसने उसको मारने के लिये तुरन्त ही अपना डंडा उठा लिया पर उस सींगों वाले आदमी ने कहा — "मेहरबानी करके मुझे मत मारिये पिता जी आपकी दया का आपको इनाम जरूर मिलेगा।"

और यह कहते हुए वह जंगल में गहरे चला गया। वहाँ जा कर उसको पेड़ों के बीच में गहरे कत्थई रंग का एक आदमी मिला। इस सींगों वाले आदमी का नाम था मसॉग[67]।

उसने उस कत्थई आदमी से पूछा — "तू कौन है?"

[67] Masang – the man with horns

उस आदमी ने जवाब दिया — "मैं जंगल से पैदा हुआ हूँ और मुझे इद्दर[68] कहते हैं। मैं आपके साथ वहीं वहीं जाऊँगा जहाँ जहाँ आप जायेंगे।"

सो वे दोनों साथ साथ चल दिये। चलते चलते वे एक ऐसे मैदान में पहुँचे जिसमें बहुत घनी घास उग रही थी। वहाँ वे एक हरे आदमी से मिले। उन्होंने उससे पूछा "तुम कौन हो?"

तो वह बोला — "मैं घास से पैदा हुआ हूँ और मैं भी आपके साथ चलूँगा।"

इस तरह वे तीनों साथ साथ आगे चल दिये। आगे चल कर वे एक समुद्री दलदल के पास आये जहाँ उन सबको एक सफेद आदमी मिला। उन्होंने उससे पूछा "तुम कौन हो?"

वह बोला — "मैं समुद्री घास से पैदा हुआ हूँ और मैं भी आपके साथ चलता हूँ।"

सो वे चारों साथ साथ आगे बढ़ने लगे। आखिर वे सब एक रेगिस्तानी देश में आ गये जहाँ उनको पहाड़ों में एक झोंपड़ी दिखायी दी। और क्योंकि उस झोंपड़ी में खाने पीने के लिये काफी था सो वे वहीं रह गये।

अब रोज उनमें से तीन लोग शिकार के लिये जाते और चौथा घर की देखभाल करता। पहले दिन इद्दर यानी जंगल का बेटा घर पर रहा। वह दूध और खाना बनाने में लगा रहा।

---

[68] Iddar
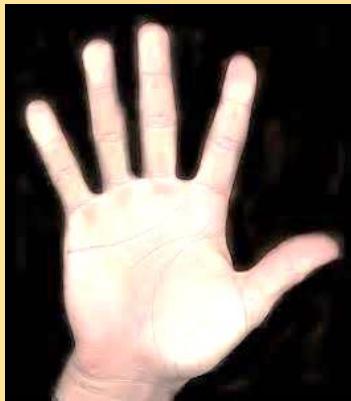
तभी एक बहुत ही छोटी सी बुढ़िया सीढ़ी लगा कर घर के अन्दर आयी। इद्दर ने पूछा "कौन है?" और यह पूछते हुए उसने इधर उधर देखा तो देखा कि उसके सामने एक बालिश्त[69] लम्बी एक बुढ़िया वहाँ खड़ी है। उसकी पीठ पर एक थैला है।

वह बोली — "अरे यह क्या? यहाँ तो कोई बैठा है। और तुम तो दूध और माँस पका रहे हो। मुझे भी उनमें से थोड़ा सा चखने के लिये दो न।"

हालाँकि उसने उन दोनों में से थोड़ा थोड़ा ही खाया पर उसका बनाया तो सारा खाना गायब हो गया। जब वह बुढ़िया वहाँ से चली गयी तो इद्दर को बहुत शरम आयी कि उसका बनाया सारा खाना गायब हो गया था।

वह उठा और घर के बाहर देखने लगा कि उसको एक घोड़े के दो खुरों के निशान दिखायी दिये तो उसने अपने घर के आसपास में कई घोड़ों के खुरों के वैसे ही निशान बना दिये और आँगन में एक तीर मार दिया।

जब शिकारी शाम को शिकार करके घर लौटे तो उन्होंने इद्दर से पूछा कि दूध और माँस कहाँ है।

---

[69] Baalisht means "Span" – the length from the tip of the thumb to the tip of the smallest finger. This length normally is 8-10" long. This is a way to measure length. People still use it to estimate the length – they spread their hand like this – see it in the picture above.

तो उसने जवाब दिया — “सौ घुड़सवार आये थे जो जबरदस्ती घर के अन्दर घुस आये और सारा दूध और मॉस ले कर चले गये। मुझे भी उन्होंने इतना मारा कि मैं बिल्कुल अधमरा सा हो गया। तुम लोग बाहर जाओ और उनको ढूँढने की कोशिश करो।”

उन तीनों ने जब यह सुना तो वे बाहर उनको ढूँढने गये तो उन्होंने देखा कि घर के बाहर तो बहुत सारे घोड़ों के खुरों के निशान बने हुए हैं। साथ में एक तीर भी गड़ा हुआ है जो उसने खुद ने गाड़ा था। सब बोले “यह ठीक ही कहता है।”

अगले दिन घास का बेटा घर पर खाना बनाने के लिये छोड़ा गया और बाकी के तीन शिकार पर गये। उसके साथ भी ऐसा ही हुआ जैसा कि उसके साथी के साथ हुआ था।

पर जब उसने बाहर देखा तो उसको दो बैलों के पैरों के निशान दिखायी दिये सो उसने भी वहॉ बहुत सारे बैलों के पैरों के निशान बना दिये और जब उसके तीनों साथी शाम को शिकार से लौटे तो उन्होंने भी बहुत सारे बैलों के पैरों के निशान देखे।

पूछने पर उसने बताया कि उसके पास सौ से भी ज़्यादा खच्चर वाले सवार आये थे और वह सारा खाना ले भागे जो मैंने तुम्हारे लिये बनाया था। इस तरह उसने भी उनसे झूठ बोला।

तीसरे दिन समुद्री घास का बेटा घर रहा और बाकी तीनों शिकार पर गये और क्योंकि वह भी कोई उनसे ज़्यादा खुशकिस्मत नहीं था सो उसने एक खच्चर के पैरों के निशान के साथ साथ बहुत

सारे खच्चरों के पैरों के निशान बना दिये और अपने साथियों से कहा — “सौ से ज़्यादा आदमी बोझा लदे खच्चरों पर आये और मुझसे वह खाना लूट कर चले गये जो मैंने तुम्हारे लिये बनाया था।”

इस तरह उसने भी झूठ बोला। अबकी बार मसॉग की बारी थी सो वह घर में रहा और बाकी तीनों शिकार पर गये। उनके जाने के बाद वह अपने साथियों के खाने के लिये दूध और मॉस तैयार करने लगा कि वह छोटी सी बुढ़िया वहॉ फिर आयी और बोली — “अरे आज भी यहॉ पर कोई है। मेहरबानी करके मुझे थोड़ा सा दूध और मॉस चखने के लिये दो न।”

मसॉग ने जब यह सुना तो उसे विश्वास हो गया कि वही शायद पिछले तीन दिन भी आयी होगी। उसने सोचा कि अगर वह उसे वह देता है जो वह मॉग रही है तो वह यह कैसे जाने कि उसको देने के बाद उसके पास वापस कुछ बच जायेगा या नहीं।

यह सोच कर उसने उस बुढ़िया से कहा — “इससे पहले कि मैं तुम्हें चखने के लिये खाना दूॅ तुम मुझे थोड़ा सा पानी ला दो।” कह कर उसने उसको एक बालटी पकड़ा दी जिसकी तली में छेद ही छेद ही थे।

वह बुढ़िया वह छेद वाली बालटी ले कर वहॉ से चली गयी। उसके जाने के बाद मसांग ने उसके पीछे देखा कि वह एक बालिश्त लम्बी बुढ़िया तो आसमान की ऊॅचाई के बराबर लम्बी हो गयी थी।

वह बार बार बालटी में पानी भरती पर उसमें उससे पानी भरा ही नहीं जाता। वह सारा का सारा पानी उसके छेदों में से निकल जाता। जब वह बालटी में पानी भरने की कोशिश कर रही थी तो मसॉग ने उसके छोटे वाले थैले में झॉक कर देखा जो वह अपने साथ लिये घूम रही थी।

उसने उसमें से रस्सी का एक गोला एक लोहे का हथौड़ा और एक लोहे की सॅड़ासी निकाल ली और उनकी जगह कुछ पुरानी सड़ी हुई रस्सियॉ एक लकड़ी का हथौड़ा और एक लकड़ी की सॅड़ासी रख दीं।

उसने अपना यह काम खत्म ही किया था कि बुढ़िया यह कहते हुए वापस आ गयी — "मैं तुम्हारी बालटी मे पानी नहीं भर पायी। अगर तुम मुझे थोड़ा सा खाना चखने के लिये नहीं देते तो चलो हम आपस में अपनी अपनी ताकतों को आजमा लेते हैं।"

कह कर बुढ़िया ने अपने थैले से सड़ी हुई रस्सियॉ निकालीं और उनसे मसॉग को बॉध दिया। पर मसॉग ने अपनी ताकत लगा कर उन रस्सियों को एक झटके में ही तोड़ दिया।

पर जब मसॉग ने बुढ़िया को अपनी रस्सी से बॉधा तो वह बुढ़िया तो हिल भी नहीं सकी और उससे बोली — "यहॉ तुम जीत गये। चलो अब हम एक दूसरे को सॅड़ासी से नोचते हैं।"

तब मसांग ने अपनी लोहे की सॅड़ासी उसके शरीर में बड़े ज़ोर से घुसा दी और उसके शरीर से उसने किसी के सिर जितना बड़ा मॉस का टुकड़ा काट लिया। यह देख कर बुढ़िया बहुत ज़ोर से रो पड़ी और बोली — "उफ़ तुम्हारे तो हाथ भी पत्थर के हैं। चलो अब एक दूसरे को हथौड़ा मारते हैं।"

ऐसा कहते हुए बुढ़िया ने मसॉग की छाती पर अपना लकड़ी का हथौड़ा दे मारा। तब मसॉग ने आग में से अपना लोहे का हथौड़ा निकाला और उससे बुढ़िया को कुछ इस तरह से मारा कि बुढ़िया वहॉ से घायल हो कर रोती चिल्लाती भागती नजर आयी।

इसके कुछ देर बाद ही उसके तीनों साथी शिकार से वापस लौट आये और उससे कहा — "मसॉग आज तुमको यकीनन कुछ परेशानी जरूर हुई होगी।"

मसांग बोला — "तुम सब लोग डरपोक हो। तुम सबने मुझसे झूठ बोला। मैंने उस बुढ़िया को निपटा दिया है। उठो और चलो उसका पीछा करते हैं।"

यह सुन कर सब लोग उठे और उसके टपकते हुए खून के सहारे सहारे उसके पीछे पीछे चल दिये। चलते चलते वे सब एक चट्टान में बने एक ॲधेरे गड्ढे तक आ पहुॅचे।

वहॉ उन्होंने देखा कि उस गड्ढे की तली में **10** गोल गोल दोहरे खम्भे लगे हुए हैं और जमीन पर उस बुढ़िया का मरा हुआ

शरीर पड़ा हुआ है। उसके आस पास सोना चाँदी जिरहबख्तर[70] और कई और कीमती चीज़ें पड़ी हुई थीं।

मसॉग ने अपने तीनों साथियों से पूछा — "क्या तुम तीनों नीचे उतर कर उस मरी हुई बुढ़िया के आस पास जो कीमती सामान पड़ा है वह उठा कर लाओगे? मैं उनको ऊपर खींच लूँगा और उनको ठीक से बाँध लूँगा।"

पर उसके तीनों साथियों ने एक साथ ही नीचे जाने से मना कर दिया कि हम नीचे नहीं जायेंगे क्योंकि उसके व्यवहार से पता चलता है कि वह एक शूमू[71] या जादूगरनी है।

पर मसॉग अपनी निडरता दिखाते हुए उस गड्ढे में नीचे जाने के लिये तैयार हो गया। वह नीचे गया उसने सारा कीमती सामान बटोरा जिसको कि उसके तीनों साथियों ने ऊपर खींच लिया।

सामान ऊपर खींचने के बाद तीनों ने आपस में राय की कि अगर वे मसॉग को भी खींच लेते हैं यह तो निश्चित है कि वह हमसे अपना सारा खजाना ले लेगा। इससे तो यही ज़्यादा अच्छा होगा कि हम लोग इस खजाने को ले कर और मसॉग को यहीं छोड़ कर भाग जायें।

जब मसॉग ने देखा कि उसके साथी लोगों ने उसको इस तरीके से धोखा दिया है तो उसने उस गड्ढे में कुछ खाना ढूँढने की

---

[70] Translated for the word "Armor" – it is made iron and is worn at the time of battles to protect one's body.

[71] Schumnu – means a witch

कोशिश की तो उसने देखा कि खम्भों के बीच में किसी पेड़ की छाल के कुछ टुकड़े अटके पड़े हैं और वहाँ खाने के लिये कुछ भी नहीं है।

उसने वह छाल निकाल कर जमीन में बो दी और बोला — "अगर मैं सच्चा मसॉग हूँ तो इस छाल को बढ़ कर तीन पेड़ों में बदल जाना चाहिये। और अगर ऐसा नहीं है तो मुझे यहाँ इसी गड्ढे में मर जाना चाहिये।"

इन जादू के शब्दों के कहने के बाद वह वहाँ लेट गया और क्योंकि वहाँ वह उस बुढ़िया के साथ ही लेटा हुआ था तो वह जल्दी ही सो गया और फिर कई साल तक सोया रहा। जब वह सो कर उठा तो उस गड्ढे में से तीन ऊँचे ऊँचे पेड़ गड्ढे के ऊपर तक जा रहे थे।

वह तुरन्त ही उनमें से एक पेड़ पर चढ़ कर गड्ढे में से बाहर निकल गया और अपने मकान की तरफ भागा जो वहीं पास में ही था पर उसके अन्दर कोई नहीं था। वहाँ से उसने अपना लोहे की तीर कमान उठायी और अपने साथियों को ढूँढने चल दिया।

इतने समय में उन लोगों ने अपने अपने घर बना लिये थे और शादियाँ कर ली थीं। मसॉग ने उन सबकी पत्नियों से पूछा कि उनके पति कहाँ हैं। उन्होंने जवाब दिया कि हमारे पति किसी का पीछा करने गये हैं।

यह सुन कर मसॉग ने अपनी तीर कमान उठाया और वहॉ से चल दिया। रास्ते में उसे वे तीनों घर वापस आते दिखायी दे गये। वे हिरन का मॉस ले कर आ रहे थे।

जब उन तीनों ने मसॉग को अपने हाथ में तीर कमान ले कर आते देखा तो वे तीनों एक सुर में चिल्लाये — "तुम तो बहुत होशियार हो। तुम हम सबकी पत्नियों को और हमारे सब सामान को ले लो और हम सब इधर उधर घूमते रहेंगे।"

यह सुन कर मसॉग बोला — "यकीनन तुम लोगों का व्यवहार ऐसा तो नहीं था जैसा होना चाहिये था पर मैं अपने पिता को इनाम देना चाहता हूॅ इसलिये तुम लोग जैसे अब तक रहते आये हो वैसे ही ज़िन्दा रहो।"

फिर मसॉग को एक नदी मिल गयी जिसमें से एक बहुत सुन्दर लड़की निकली। जब वह वहॉ से चली तो उसके पैरों के हर निशान से एक एक फूल निकला। मसॉग उसके पैरों के निशानों के पीछे पीछे चलता रहा कि वह स्वर्ग में आ गया।

जब वह स्वर्ग में आ गया तो चुरमुश्ता तांगारी[72] ने उससे कहा — "यह बहुत अच्छा हुआ कि तुम यहॉ आ गये। हम लोगों को रोज ही शूमूओं यानी जादूगरनियों से लड़ना पड़ता है। कल को तुम चारों तरफ देखना और फिर कल के बाद हमारे साथी बन जाना।"

[72] Churmusta Taangaari – the Protector of the Earth

अगले दिन जब चुरमुश्ता काली जादूगरनियों से बहुत परेशान था तो उसने मसॉग से कहा — "सफेद वाले लोग तांगारी के लोग हैं और काले वाले लोग शूमुओं के लोग हैं। आज शूमुओं के लोग तांगारी के लोगों को हरा लेंगे इसलिये तुम अपना तीर कमान निकाल लो और एक तीर शूमुओं के सरदार की ऑख में मारना।"

सो मसॉग ने एक तीर उन काली जादूगरनियों के सरदार की ऑख में मारा। वह बेचारा चीखता हुआ वहॉ से भाग गया।

चुरमुश्ता मसॉग से बोला — "यह काम तो तुमने इनाम वाला किया है। अब तुम हमेशा के लिये हमारे पास ही रह जाओ।"

पर मसॉग ने जवाब दिया कि वह अभी उसके पास नहीं रुक सकता क्योंकि उसको अभी अपने पिता को इनाम देने जाना है।

यह सुन कर चुरमुश्ता ने उसको चिन्तामणि[73] दी और उससे कहा — "एक छोटे गोल रास्ते से हो कर तुम शूमू की गुफा तक पहुॅच जाओगे। तुम उस गुफा में बिना किसी डर के और बिना कॉपे हुए चले जाना। वहॉ जा कर दरवाजा खटखटाना और कहना कि "मैं आदमियों का डाक्टर हूॅ।"

यह सुन कर वे तुम्हें शूमू चान के पास ले जायेंगे। तब तुम उसकी ऑखों से अपना तीर निकाल सकते हो। फिर उस तीर पर अपना हाथ रखना और सात किस्म के अनाज स्वर्ग की तरफ फेंकना और उसको उसके सिर में और गहरे भी गाड़ सकते हो।"

---

[73] Deschindamani – it is a wonder stone of gods, a divine gem which fulfills all wishes.

चुरमुश्ता ने यह सब बड़े अधिकार के साथ कहा। मसॉग ने वही किया जैसा कि उसने उससे करने के लिये कहा था। वह गुफा में बिना किसी मुश्किल के पहुँच गया। जा कर उसने दरवाजा खटखटाया तो किसी स्त्री ने पूछा — "तुम क्या जानते हो।"

मसॉग बोला "मैं आदमियों का डाक्टर हूँ।"

वह स्त्री उसको अन्दर ले गयी तो उसने चान का घाव देखा फिर तीर पर अपने हाथ रख दिये। जैसे ही मसॉग ने अपने हाथ तीर पर रखे तो चान बोल पड़ा — "मुझे तो अभी से अच्छा लग रहा है।"

पर मसॉग ने अचानक वह तीर उसके सिर में घुसा दिया और सात तरह के अनाज स्वर्ग की तरफ फेंक दिये। उनके फेंकते ही स्वर्ग से एक जंजीर आवाज करती हुई नीचे धरती पर गिर पड़ी।

पर जब मसॉग उस जंजीर को उठाने जा रहा था शूमू स्त्री ने उसके सिर पर एक लोहे का हथौड़ा मार दिया कि उसकी मार से वहॉ से सात तारे निकल पड़े।

यह सुन कर चान के बेटे के मुँह से निकला — "ओह अब वह बेचारा अपने पिता को इनाम कैसे देता?"

यह कहानी सुना कर सिद्दी कुर बोला — "ओ किस्मत बनाने वाले तुम तो फिर बोल पड़े।" कह कर वह उसका थैला फाड़ कर फिर से बाहर निकल कर भाग गया।

सो यह थी सिद्दी कुर की तीसरी कहानी
“मसॉग के कारनामे”

5–4 सूअर के सिर वाला जादूगर[74]

सिद्दी कुर के थैला फाड़ कर भाग जाने के बाद चान का बेटा उसे लाने के लिये फिर से मौत के ठंडे जंगल[75] की ओर चल दिया और फिर अमीरी पेड़ के नीचे पहुँच गया और एक बार फिर उसको धमकी दी — "ओ लाश। या तो तुम इस पर से नीचे उतरो या फिर मैं तुम्हारा यह पेड़ काट दूँगा।"

सिद्दी उसकी धमकी से डर कर पेड़ पर से उतर कर नीचे आ गया और उसके थैले में आ कर बन्द हो गया। चान के बेटे ने भी उस थैले के मुँह को रस्सी से बाँधा अपनी कभी न खत्म होने वाली केक में से कुछ केक खायी और सिद्दी को अपने कमर पर लाद कर चल दिया।

सिद्दी फिर बोला — "रास्ता लम्बा है तो समय गुजारने के लिये या तो मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ और या फिर तुम मुझे एक कहानी सुना दो। अगर तुम मुझे कहानी नहीं सुनाना चाहते तो अपना सिर ना में हिला कर मुझे बता दो तो फिर मैं कहानी सुना देता हूँ।"

चान के बेटे ने ना में अपना सिर हिला दिया तो सिद्दी ने एक बार फिर अपनी कहानी कहनी शुरू की —

---

[74] The Magician with Swine's Head (Tale No 5-4) – a folktale from Kalmuk Tartar, Asia.
[75] Translated for the words "Forest of Death".

“बहुत दिनों से एक खुश खुश देश में एक पति पत्नी रहते थे। आदमी बहुत बुरा था और किसी भी चीज़ से कोई मतलब नहीं रखता था सिवाय खाने पीने और सोने के।

आखिर एक दिन उसकी पत्नी ने कहा — “जिस ढंग से तुम रहते हो इस तरीके से रह कर तुमने जो कुछ भी तुम्हें विरासत में मिला था सब बरबाद कर दिया। उठो और सोते से जागो। मैं खेत देखने जाती हूँ तब तक तुम बाहर निकलो और अपने चारों तरफ देखो कि क्या हो रहा है।”

यह सुन कर वह उठा और बाहर निकल कर अपने चारों तरफ देखने लगा। उसने देखा कि पगोडा[76] के पीछे से बहुत सारे लोग अपने जानवर चिड़ियें लोमड़े कुत्ते ले कर आ जा रहे थे और एक खास जगह पर पहुँच कर बहुत शोर मचा रहे थे।

उत्सुकतावश वह भी वहाँ चला गया तो क्या देखता है कि वहाँ मक्खन पड़ा हुआ है। उसने उसे उठा लिया और घर ला कर आलमारी में रख दिया।

जब उसकी पत्नी वापस आयी तो उसने अपने पति से पूछा कि उसको वह मक्खन कहाँ से मिला। वह बोला — “तुमने जैसा मुझसे करने के लिये कहा था मैंने वैसा ही किया तो मुझे यह मिल गया।”

---

[76] Pagoda is a tiered building common to Japan, China, South-east Asia etc countries

इस पर उसकी पत्नी बोली — “तुम केवल एक पल के लिये ही बाहर गये और तुमको इतना सारा कुछ मिल गया।”

पत्नी की इस बात से पति को बहुत प्रोत्साहन मिला। उसने पत्नी को अपनी ताकत दिखाने के लिये कहा — “ठीक है तो तुम मुझे एक घोड़ा ला कर दो कुछ कपड़े और एक शिकारी कुत्ता ला कर दो फिर देखो कि मैं क्या करता हूँ।”

पत्नी उसके लिये ये सब चीज़ें ले आयी। तो पति ने ये सब चीज़ें अपने साथ लीं और साथ में लिया अपना तीर कमान टोपी और शाल और फिर वह घोड़े की पीठ पर बैठ कर कुत्ते की रस्सी को ले कर पीछे से खींचता हुआ बस कहीं भी चल दिया।

काफी देर तक सफर करने के बाद उसको एक लोमड़ा दिखायी दिया। उसने सोचा कि इसकी तो मेरी पत्नी की टोपी बहुत अच्छी बनेगी। ऐसा सोच कर वह उस लोमड़े के पीछे पीछे चल दिया।

भागते भागते लोमड़ा एक हैम्प्स्टर[77] के बिल में घुस गया। यह देख कर आदमी अपने घोड़े से नीचे उतरा और अपने कपड़े और तीर कमान घोड़े की जीन[78] पर रख दिया। कुत्ते को घोड़े की लगाम से बॉध दिया और हैम्प्स्टर का बिल अपनी टोपी से ढक दिया।

[77] Hempster is a mouse-like animal. People keep it as pet also.

[78] Translated for the word “Saddle” – it is kept on horseback to sit upon him – see its picture above.

उसके बाद उसने एक बड़ा पत्थर उठाया और उस टोपी को बिल के छेद में घुसा दिया।

इससे लोमड़ा डर गया और वहाँ से सिर निकाल कर भागा जिससे आदमी की टोपी उसके सिर पर रखी चली गयी। कुत्ते ने लोमड़े का पीछा किया तो क्योंकि कुत्ता घोड़े की लगाम से बँधा हुआ था सो उसके पीछे पीछे घोड़ा भी भागा चला गया।

दोनों पल भर में वहाँ से गायब हो गये और आदमी वहाँ बिना कपड़ों के खड़ा रह गया।

जब घोड़ा बहुत दूर चला गया तो वह खुद भी वहाँ से चल दिया और एक ताकतवर चान के राज्य में पहुँच गया। वहाँ जा कर उसने उसके अस्तबल में पहुँच कर अपने आपको भूसे के एक ढेर में छिपा लिया। बस उसमें से केवल उसकी ऑखें ही दिखायी दे रही थीं।

कुछ देर बाद ही चान की प्रेमिका घर से बाहर निकल रही थी तो अपने प्यारे घोड़े को देखने की इच्छा से वह भूसे के ढेर के पास पहुँची और वहाँ पहुँच कर उसने चान के राज्य की ज़िन्दगी का तलिस्मान[79] जमीन पर रख दिया।

फिर कुछ देर में वह वहाँ से चली गयी पर वह उस तलिस्मान को वहाँ से ले जाना भूल गयी। आदमी ने वह अच्छा सा पत्थर देखा तो मगर उसको उठाने के लिये वह बहुत आलसी था सो वह

[79] Talismaan – means some kind of magical thing worn on somebody's body for protection.

वहीं पड़ा रहा। शाम को गायें वापस आयीं तो उस तलिस्मान पर उनका पैर पड़ गया और वह मिट्टी में दब गया।

कुछ देर बाद एक नौकर आया और उसने वहाँ की जगह साफ की तो वह पत्थर कूड़े के साथ एक जगह एक ढेर पर जा पड़ा।

अगले दिन ढोल बजा बजा कर सब लोगों को सूचना दी गयी कि चान की प्रेमिका का कीमती पत्थर खो गया है।

उसी समय सारे जादूगर और भविष्य बताने वाले भी बुलाये गये और उनसे यह सवाल पूछा गया। जब उस आदमी ने इतना सब हल्ला गुल्ला सुना तो उसने भूसे के ढेर से अपना सिर बाहर निकाला तो उसको वहाँ छिपे देख कर बहुत लोग उसके पास घिर आये और उससे पूछने लगे "तुम कौन हो और तुम क्या जानते हो।"

तो वह आदमी बोला — "मैं जादूगर हूँ।"

यह सुन कर वहाँ खड़े लोग बोले — "चान का एक कीमती पत्थर खो गया है। देश के सारे जादूगर उसका पता बताने के लिये यहाँ बुलाये गये हैं। क्या तुम चान के पास चलना चाहोगे?"

आदमी बोला — "हाँ मैं चलना तो चाहूँगा पर मेरे पास पहनने के लिये कपड़े नहीं हैं।"

यह सुन कर सारी भीड़ चान के पास गयी और उससे जा कर बोली — "अस्तबल में भूसे के ढेर में एक जादूगर छिपा हुआ है जिसके पास पहनने के लिये कोई कपड़ा नहीं है। यह जादूगर

आपके पास आ तो जायेगा पर वह ठीक से दिखायी तो देना चाहिये न।"

चान बोला — "लो उसके लिये ये कपड़े ले जाओ और तुरन्त ही उसको हमारे सामने पेश करो।"

वैसा ही किया गया। आदमी को कपड़े पहना कर चान के सामने लाया गया तो उससे पूछा गया कि उसको अपना जादू करने किन किन चीज़ों की जरूरत होगी वे चीज़ें उसको मॅगवा दी जायें।

आदमी बोला — "मुझे अपना जादू दिखाने के लिये एक सूअर के सिर की, पॉच रंगों के कुछ कपड़ों की और एक बैलिंग[80] की जरूरत होगी।"

जब ये सब चीज़ें तैयार हो गयीं तो जादूगर ने सूअर का सिर एक पेड़ की जड़ में रख दिया। फिर उसको पॉच रंगों के कपड़े पहना कर एक बड़ी सी बैलिंग से बॉध दिया। वहॉ वह तीन रात तक कर ध्यान करता रहा।

नियत किये गये दिन पर सारे लोग एक जगह इकट्ठा हुए। जादूगर ने अपना एक बहुत बड़ा सा शाल[81] ओढ़ा और सूअर की खोपड़ी अपने हाथ में ले कर सड़क पर खड़ा हो गया। फिर उसने सूअर की

[80] Baling is a figure made out of dough or some paste

[81] Translated for the word "Cloak" – a long dress worn over the clothes – see its picture above.

खोपड़ी तरफ इशारा करते हुए कहा "यहाँ तो नहीं है। वहाँ तो नहीं है।"

सारे लोग उसके ये शब्द सुन सुन कर खुश हो रहे थे। "क्योंकि वह कीमती पत्थर लोगों के पास नहीं है इसलिये हमको उसे कहीं और ढूँढना चाहिये।"

कह कर जादूगर सूअर की खोपड़ी हाथ में लिये लिये महल के पास तक आ गया। फिर वहाँ से अस्तबल की तरफ बढ़ा और भूसे के ढेर के पास आ गया। वहाँ आ कर वह अचानक खड़ा हो गया और इधर उधर देखने लगा।

फिर उसने धीरे से वहाँ की थोड़ी सी मिट्टी हटायी और वह कीमती पत्थर निकाल लिया। उसे झाड़ा पोंछा। यह देख कर वहाँ मौजूद हर आदमी चिल्ला उठा "अरे यह सूअर के सिर वाला तो बहुत बड़ा जादूगर है। अरे तुम अपना सिर तो उठाओ ताकि चान तुम्हें इनाम दे सकें।"

चान बोला — "इसके बदले में तुम जो चाहे इनाम माँग लो।"

जादूगर ने अपने उस सामान के बारे में सोचते हुए जो उसने खो दिया था चान से कहा — "मेहरबानी करके मुझे आप जीन और लगाम के साथ एक घोड़ा दे दीजिये, कुछ तीर और कमान दे दीजिये, एक टोपी और एक शाल, एक शिकारी कुत्ता और एक लोमड़ा दे दीजिये।"

यह सुन कर चान बहुत ज़ोर से हॅसा और बोला — "इसको वह सब दे दो जो इसे चाहिये। साथ में इसे दो हाथी भी दे दो जिनमें से एक पर मॉस लदा हो और दूसरे पर मक्खन।"

यह सब ले कर वह अपने घर चला तो घर के पास ही उसको उसकी पत्नी मिल गयी। उसके हाथ में उसको पिलाने के लिये ब्रैन्डी[82] थी। वह उसको देख कर बोली "हॉ यह सब देख कर लगता है कि अब तुम बड़े आदमी बन गये हो।"

फिर वे दोनों घर चले गये और जब सोने के लिये लेटे तो पत्नी ने पूछा — "तुमको इतना सारा मॉस और मक्खन कहॉ से मिला?"

इस पर पति ने उसको सारा हाल बताया तो वह बोली "तुम तो सचमुच में बिल्कुल ही गधे हो। कल मैं एक चिट्ठी ले कर चान के पास जाऊॅगी।"

इस प्लान के अनुसार पत्नी ने अगले दिन एक चिट्ठी लिखी और उसमें उसने लिखा — "क्योंकि मुझे यह मालूम था कि उस पत्थर का चान के ऊपर कुछ बुरा असर पड़ेगा सो उस बुरे असर से चान को बचाने के लिये मैंने कुत्ता और लोमड़ा मॉगे थे। इसका जो भी मुझे इनाम मिलना चाहिये यह चान की खुशी पर निर्भर करता है।"

चान ने वह चिट्ठी पढ़ी और कई कीमती तोहफे उस आदमी को भिजवा दिये। इस तरह जादूगर फिर खुशी खुशी आराम से रहा।

[82] Brandy is a kind of liqor

अब हुआ यह कि पड़ोस के एक राज्य में सात चान रहते थे। वे सब आपस में भाई थे। एक बार वे सब आनन्द मनाने के लिये एक जंगल में गये। वहाँ उन्होंने एक बहुत सुन्दर लड़की देखी जिसके पास एक भैंसा था।

उन्होंने उससे पूछा — "तुम दोनों यहाँ अकेले इस जंगल में क्या कर रहे हो?"

लड़की बोली — "मैं पूर्वीय देश के एक चान की बेटी हूँ। यह भैंसा मेरे साथ है।"

यह सुन कर वे बोले — "हम लोग चान सात भाई हैं और सातों ही कुँआरे हैं। क्या तुम हमारी पत्नी बनोगी?"[83]

लड़की राजी हो गयी। पर यह लड़की और भैंस दोनों ही मैन्गूश[84] थे और आदमियों की तलाश में थे ताकि वे उनको मार कर खा सकें। भैंसा नर मैन्गूश था और वह लड़की मादा मैन्गूश थी जो अब उन सातों की पत्नी बन गयी थी।

अब क्या था मादा मैन्गूश हर साल एक चान भाई को मार देती थी। उसने छह भाइयों को तो मार दिया था अब बस उनमें से केवल एक ही चान भाई बचा था।

और क्योंकि उसको एक बहुत ही बुरी बीमारी थी तो उसके मन्त्रियों ने आपस में सलाह की "हमने अपने चान की बीमारी को

---

[83] It is the custom of Tibet country woman that she can have several husbands.

[84] Mangusch is a species of evil spirit like Schunmu.

ठीक करने के लिये हर चीज़ आजमा कर देख ली पर कोई भी तरकीब काम नहीं की। हम इस मामले में कोई सलाह भी नहीं दे सकते। क्या करें।

यह सूअर के सिर वाला जादूगर हम लोगों से केवल दो पहाड़ की दूरी पर ही तो रहता है। लोगों के उसके बारे में बड़े ऊँचे ऊँचे ख्याल हैं। क्यों न हम उसके पास तुरन्त जायें और उससे सहायता माँगे। हो सकता है कि वही हमारी कुछ सहायता कर दे।"

सो चार घुड़सवार उस जादूगर को वहाँ से लाने के लिये भेज दिये गये। जब वह जादूगर के घर पहुँचे तो उनहोंने उसको अपने वहाँ आने का उद्देश्य बताया।

जादूगर बोला — "मैं अपना काम रात में करता हूँ। सो आज रात में इसके ऊपर सोच विचार करूँगा और फिर कल सुबह तुम लोगों को बताऊँगा कि इस मामले में क्या करना है।"

रात को उसने यह सारा मामला अपनी पत्नी को बताया तो उसकी पत्नी बोली — "तुम अब तक खास ताकतों वाले जादूगर की तरह से जाने जाते हो पर आज के बाद तुम्हारी यह इज़्ज़त खत्म हो जायेगी। इसमें कोई तम्हारी अब कोई सहायता नहीं कर सकता सो तुम्हें वहाँ जाना ही चाहिये।"

अगली सुबह जादूगर उन लोगों से बोला — "रात को मैंने इस मामले पर बहुत सोचा तो मेरे सपने में एक बहुत ही अच्छा शकुन

दिखायी दिया। मैं इस मामले को और ज़्यादा नहीं खींचना चाहता सो मैं आज ही चलने के लिये तैयार हूँ।"

कह कर जादूगर ने अपना बड़ा वाला शाल उठा कर अपने कन्धों पर डाला, अपने बाल अपने सिर के ऊपर बाँधे, अपने बाँये हाथ में अपनी जाप करने की माला[85] ली और अपने दाँये हाथ में पाँच रंगों के कपड़ों से ढका हुआ सूअर का सिर उठाया।

जब इस शक्ल में वह चान के महल पहुँचा तो दोनों मैन्गूश उसको देख कर बहुत डर गये। उन्होंने सोचा कि इसकी शक्ल तो एक बहुत बड़े जादूगर जैसी लग रही है एक विद्वान जादूगर जैसी।

तब जादूगर ने एक बैलिंग बिस्तर के एक तकिये पर रखी फिर सूअर का सिर उठाया और कुछ जादू के शब्द फुसफुसाये।

चान की पत्नी ने जब यह देखा तो चान के ऊपर से अपना जादू उठा लिया और बहुत जल्दी से कमरे के बार भाग गयी। अपनी पत्नी के इस काम से चान उसके जादू से छूट गया और ठीक हो गया। वह अब शान्ति से सो गया था।

यह देख कर जादूगर ने सोचा "अरे यह क्या हुआ? लगता है कि इसकी यह बीमारी तो और खराब हो गयी। यह तो एक शब्द भी नहीं बोला लगता है यह तो चला गया।"

यह सोच कर वह चिल्लाया "चान चान।"

[85] Translated for the word "Rosary". In many religions this kind of rosary is used to keep the account of recited God's name. Hindu's rosary has 108 beads in it.

पर क्योंकि चान ने कोई जवाब नहीं दिया तो जादूगर ने सूअर का सिर पकड़ा और दरवाजे से हो कर भाग लिया और खजाने के कमरे में आ गया।

जैसे ही उसने यह किया तो “चोर चोर” की आवाज उसके कानों में बजने लगी। तो जादूगर वहाँ से रसोईघर में भाग गया। पर “चोर को पकड़ो चोर को पकड़ो” की आवाजें अभी भी उसके कानों में गूँज रही थीं।

जब इस तरह आवाजें उसका पीछा कर रही थीं तो जादूगर ने सोचा कि लगता है कि आज की रात मैं कहीं नहीं भाग सकता सो मैं इस घुड़साल के एक कोने में छिप जाता हूँ। ऐसा सोच कर वह घुड़साल में घुस गया जहाँ एक भैंसा लेटा हुआ था।

वह भैंसा वहाँ ऐसे लेटा हुआ था जैसे किसी लम्बी यात्रा से थक कर आया हो। जादूगर ने अपने हाथ में पकड़ा सूअर का सिर उसके दोनों सींगों के बीच की जगह के ऊपर तीन बार मारा। इस पर वह भैंसा उठा खड़ा हुआ और हवा की सी तेज़ी से वहाँ से भागा।

जादूगर ने उसका पीछा किया। जब वह उसको पकड़ने ही वाला था कि उसने एक नर मैन्गूश को अपनी मादा मैन्गूश को यह कहते हुए सुना — “वह जादूगर जानता था कि मैं घुड़साल में छिपा हुआ था लगता है कि वह इसी लिये वहाँ आया। उसने अपने डरावने सूअर के सिर से मेरे सींगों के बीच में तीन बार मारा। सो मैंने सोचा कि बस अपने भागने का यही समय ठीक है।”

चान की पत्नी बोली — "मैं भी उससे इतनी डरी हुई हूँ क्योंकि वह बहुत विद्वान है कि मैं अपनी इच्छा से वहाँ नहीं जाना चाहती क्योंकि मुझे विश्वास है कि अब हमारे साथ वहाँ जरूर ही कुछ बुरा हो जायेगा। कल वह आदमियों को उनके अपने हथियार भाले पत्थर आदि ले कर बुलवायेगा और स्त्रियों से कहेगा कि वे वहाँ लकड़ियाँ ले कर आयें।

जब लकड़ियाँ आ जायेंगी तो फिर वह भैंसे को वहाँ मँगवायेगा। और जब तुम आ जाओगे तो वह तुमसे कहेगा "तुम अपनी यह शक्ल बदलो जो तुमने ले रखी है अपनी असली शक्ल में आओ।"

उस समय अगर तुम अपनी शक्ल बदलना नहीं भी चाहोगे तो उसके न बदलने की तुम्हारी हर कोशिश नाकामयाब होगी और तुमको अपने असली रूप में आना ही पड़ेगा।

जैसे ही तुम अपने असली रूप में आओगे लोग अपनी तलवारें भाले पत्थर ले कर तुम्हारे ऊपर टूट पड़ेंगे और तुम्हें मार देंगे और तुम्हें मार कर तुमको जला देंगे।

आखीर में जादूगर मुझे भी वहाँ खींच कर लायेगा मुझसे भी अपनी असली शक्ल में आने के लिये कहेगा तो मुझे भी अपनी असली शक्ल में आना पड़ेगा। वह फिर मुझे भी मारेगा और मुझे भी आग में जला देगा। उफ़ मैं बहुत डरी हुई हूँ मैं क्या करूँ।"

जादूगर ने यह सब सुना तो उसने सोचा कि इस तरह से यह तो काम बड़ी आसानी से निपटाया जा सकता है।

इसके बाद उसने सूअर का सिर लिया और चान के पास चल दिया। वहॉ जा कर उसने चान के तकिये पर से बैलिंग उठायी और अपने जादू के शब्द फुसफुसाये और पूछा "अब चान की तबियत कैसी है।"

चान बोला — "जबसे मास्टर जादूगर आया है तबसे मेरी बीमारी दूर हो गयी है और मैं बहुत अच्छी तरह से सोया।"

जादूगर बोला — "तब कल आप अपने मन्त्रियों को यह हुकुम दीजिये कि वे शहर के सारे लोगों को यहॉ इकट्ठा करें और स्त्रियॉ यहॉ लकड़ियॉ ले कर आयें।"

इस हुकुम के अनुसार अगले दिन वहॉ शहर के सारे आदमी इकट्ठा हो गये और स्त्रियों की लायी हुई लकड़ियों के दो बड़े बड़े ढेर बन गये।

जादूगर बोला — "अब इस भैंसे के ऊपर आप लोग मेरी जीन रख दें।"

भैंसे पर जीन रखने के बाद जादूगर भैंसे पर चढ़ गया और सारी भीड़ के सामने उस पर चढ़े चढ़े तीन चक्कर लगाये। उसके बाद उसने भैंसे पर से अपनी जीन उतारी सूअर के सिर से तीन बार उसे उसके सींगों के बीच में मारा और उससे कहा कि वह अपनी इस शक्ल को छोड़ कर अपनी असली शक्ल में आ जाये।

जादूगर के ये शब्द सुन कर भैंसा अपनी भयानक मैन्गूश की शक्ल में आ गया। उसकी आँखें खून की तरह लाल थीं। उसके ऊपर के दाँत उसकी छाती तक आ रहे थे और उसके नीचे वाले दाँत उसकी पलकों तक जा रहे थे। इस शक्ल से वह देखने में वह बहुत भयानक लग रहा था।

उसकी इस शक्ल को देखते ही वहाँ खड़े सारे आदमी अपनी अपनी तलवारों और भालों के साथ उस पर टूट पडे और उसे पल भर में मार दिया। उसके शरीर को लकड़ियों के एक ढेर के ऊपर फेंक दिया और उसे जला दिया।

ऐसा करने के बाद जादूगर ने फिर चान की पत्नी को बुलवाया। चान की पत्नी ज़ोर ज़ोर से रोती चिल्लाती वहाँ आयी। जादूगर ने उसको भी अपने सूअर के सिर से तीन बार मारा और कहा — "अब तू अपनी असली शक्ल में आ।"

तुरन्त ही उसकी खूनी आँखें और उसके लम्बे दाँत प्रगट हो गये और उसकी भयानक शक्ल सामने आ गयी। लोगों ने उसे भी टुकड़ों में काट दिया और आग में फेंक दिया।

दोनों को मार कर चान को ठीक करके जादूगर अपने घोड़े पर चढ़ा तो लोगों ने उसके सामने झुक कर उसके सामने अनाज फेंका उसको बहुत सारी भेंटें दीं। उसको हर तरीके से खुश करने की कोशिश की कि वह केवल अगली सुबह ही चान के महल पहुँच सका।

चान उसको देख कर बहुत खुश हुआ और बोला — "मैं आपको आपके इस उपकार का बदला किस तरह से दूँ?"

जादूगर बोला — "हमारे देश में बैलों के लिये नाक की डंडियाँ बहुत कम मिलती हैं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे वैसी कुछ डंडियाँ दे दें।"

चान ने उसको तीन थैले भर कर वे डंडियाँ दीं और सात हाथी माँस और मक्खन दे कर उसको विदा किया। जब वह अपने घर के पास पहुँचा तो उसकी पत्नी ब्रैन्डी ले कर उसका स्वागत करने आयी तो यह सब देख कर वह बोली — "अब तो तुम सचमुच ही बहुत बड़े आदमी बन गये हो।"

कह कर वे दोनों अपने घर चले गये। रात को पत्नी ने पति से पूछा — "तुमको इतनी सारी चीज़ें कहाँ से मिलीं?"

जादूगर बोला — "मैंने एक चान की बीमारी को ठीक किया और दो मैन्गूश को जला दिया।"

यह सुन कर पत्नी बोली — "इसमें कोई शक नहीं कि तुमने फिर से बहुत बड़ी बेवकूफी से काम किया है। किसी का इतना भला करने के बाद केवल जानवरों की नाक की डंडी माँगना यह कोई अक्लमन्दी का काम नहीं है। कल मैं चान के पास जाऊँगी।"

अगले दिन जादूगर की पत्नी चान के पास गयी और उसको जादूगर की लिखी एक चिट्ठी दी। उस चिट्ठी में लिखा था — "क्योंकि जादूगर को चान की इस बड़ी बुराई के बारे में पता था पर

अभी भी उसकी एक छोटी बुराई रह गयी है जिसके लिये उसने वे जानवरों की नाक की डंडियाँ ली थीं। इसके लिये चान जो भी इनाम दें वह उनकी खुशी है।"

चान बोला — "यह ठीक कहता है।"

सो उसने जादूगर को उसके माता पिता और दूसरे सम्बन्धियों के साथ अपने पास बुलवाया और उन सबका बहुत अच्छे से स्वागत किया और बोला — "अगर आप न होते तो मैं मर जाता। मेरा राज्य भी बरबाद हो गया होता। ये मैन्गूश मेरे मन्त्री और दूसरे सारे लोगों को खा गये होते। मैं इसके लिये इनकी इज़्ज़त करता हूँ।" और यह इज़्ज़त दिखाने के लिये उसने जादूगर को बहुत सारी भेंटें दीं।"

यह सुन कर चान के बेटे के मुँह से निकला — "ओह वे दोनों पति पत्नी तो बहुत होशियार थे।"

यह कहानी सुना कर सिद्दी बोला — "ओ किस्मत बनाने वाले तुम तो फिर बोल पड़े।" कह कर वह उसका थैला फाड़ कर बाहर निकल कर भाग गया।

सो यह थी सिद्दी कुर की चौथी कहानी
"सूअर के सिर वाला जादूगर"

5-5 धूप और उसके भाई की कहानी[86]

इस तरह सिद्दी कुर एक बार फिर से चान के बेटे का थैला फाड़ कर भाग गया था। सिद्दी कुर के थैला फाड़ कर भाग जाने के बाद चान का बेटा उसे लाने के लिये फिर से मौत के ठंडे जंगल[87] की ओर चला और फिर अमीरी पेड़ के नीचे पहुँच गया और एक बार फिर उसको धमकी दी — "ओ लाश। या तो तुम इस पर से नीचे उतरो या फिर मैं तुम्हारा यह पेड़ काट दूँगा।"

सिद्दी उसकी धमकी से डर कर पेड़ पर से उतर कर नीचे आ गया और उसके थैले में आ कर बन्द हो गया। चान के बेटे ने भी उस थैले के मुँह को रस्सी से बाँधा अपनी कभी न खत्म होने वाली केक में से कुछ केक खायी और सिद्दी को अपने कमर पर लाद कर चल दिया।

सिद्दी फिर बोला — "रास्ता लम्बा है तो समय गुजारने के लिये या तो मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ और या फिर तुम मुझे एक कहानी सुना दो। अगर तुम मुझे कहानी नहीं सुनाना चाहते तो अपना सिर ना में हिला कर मुझे बता दो तो फिर मैं कहानी सुना देता हूँ।"

[86] The History of Sunshine and His Brother (Tale No 5-5)

[87] Translated for the words "Cold Forest of Death".

चान के बेटे ने फिर से ना में अपना सिर हिला दिया तो सिद्दी कुर ने एक बार फिर अपनी कहानी कहनी शुरू की —

"यह बहुत दिनों पुरानी बात है कि चान गूचानाशॉग[88] एक बहुत ही खुश जगह में राज करते थे। इस चान के एक पत्नी थी और एक बेटा था। इसके बेटे का नाम था नरानी गराल[89] यानी धूप। इत्तफाक की बात कि चान की पहली पत्नी मर गयी सो उसने दूसरी शादी कर ली।

उसकी यह पत्नी चॉद की तरह सुन्दर थी। उसके भी एक बेटा हुआ जिसका नाम उसने रखा सरानी गराल[90] यानी चॉदनी। जब ये दोनों बेटे बड़े हो गये तो चान की पत्नी ने सोचा "जब तक बड़ा भाई धूप ज़िन्दा है तब तक मेरा बेटा चॉदनी कभी चान नहीं बन सकेगा।"

इसी दुख से कुछ समय बाद ही चान की दूसरी पत्नी बीमार पड़ गयी और दुख की वजह से बिस्तर में छटपटाने लगी। यह देख कर चान को बड़ा दुख हुआ उसने अपनी पत्नी से पूछा — "प्रिये मैं तुम्हारे लिये क्या करूँ?"

यह सुन कर चान की पत्नी बोली — "हालॉकि जब मैं अपने पिता के घर रहती थी तभी भी मुझे यह बीमारी लग जाया करती थी पर अब तो यह बहुत पुरानी बात हो गयी। हालॉकि अब मैं यह

---

[88] Guchanasschang

[89] Narrani Garral means Sunshine

[90] Saarrani Garral means Moonshine

बात जानती हूँ पर इसका एक ही इलाज है। वह थोड़ा सा कठिन है पर अगर वह इलाज न हुआ तो फिर मेरे पास मरने के अलावा और रास्ता नहीं है।"

यह सुन कर चान दुखी हो गया और बोला — "तुम मुझे वह इलाज बताओ तो सही प्रिये। चाहे उस इलाज में मुझे अपना आधा राज्य ही क्यों न गँवाना पड़े पर मैं तुम्हारा इलाज करवा कर रहूँगा। तुम बताओ तुम्हें क्या चाहिये।"

चान की पत्नी बोली — "अगर चान के एक बेटे का दिल गुंसा[91] की चर्बी में भून कर मुझे खाने के लिये दे दिया जाये तो मैं बच जाऊँगी।

पर तुम वायदा करो कि इस काम के लिये तुम धूप को नहीं मारोगे और मैं अपने बेटे चाँदनी का दिल खा नहीं सकती इसलिये अब मेरे सामने मरने के सिवा और कोई रास्ता नहीं है।"

चान बोला — "हालाँकि धूप मेरा बेटा है और मुझे बहुत ज़्यादा प्यारा है पर केवल इसलिये कि मैं तुमको खोना नहीं चाहता मैं कल उसको जरगाशी[92] यानी न्याय करने वाले लोगों को सौंप दूँगा।"

चाँदनी ने सब सुन लिया। वह तुरन्त ही अपने भाई के पास भागा गया और बोला — "भैया कल वे लोग तुम्हें मार देंगे।"

[91] Gunsa is a wild animal

[92] Jargatschi – the servants of Justice

और फिर उसने अपने भाई को सारे हालात बता दिये। भाई बोला — "अगर ऐसा है तो तुम घर पर रह कर माता पिता की सेवा करना। मेरे तो अब जाने का समय आ गया।"

चाँदनी यह सुन कर रो पड़ा — "भैया मैं यहाँ अकेला नहीं रहूँगा जहाँ जहाँ तुम जाओगे वहीं वहीं तुम्हारे पीछे पीछे मैं भी जाऊँगा।"

क्योंकि धूप को मारने का अगला दिन चुना गया था सो दोनों भाइयों ने पूजा की जगह से बैलिंग[93] की केक का एक थैला उठाया और रात में ही महल से बाहर निकल गये।

उस दिन पूर्णमासी[94] की रात थी सो वे लोग दिन रात पहाड़ी रास्तों पर चलते रहे और आखिर एक सूखी हुई नदी के पास आ पहुँचे। उनका खाना पीना जो वे अपने साथ लाये थे खत्म हो गया था और नदी में भी पानी नहीं था तो चाँदनी थकान की वजह से नीचे जमीन पर गिर पड़ा।

यह देख कर बड़ भाई बहुत दुखी हो गया और दुख से बोला — "मैं जाता हूँ और तुम्हारे लिये पानी ढूँढ कर ले कर आता हूँ। जब तक में दूर से वापस लौट कर आता हूँ तब तक तुम सावधान रहना।"

[93] Baling is the figure made from dough or some kind of paste

[94] Full Moon

कुछ बेकार कोशिशों के बाद धूप वहाँ वापस लौट आया। आ कर उसने देखा कि उसका भाई तो मर चुका है।

बहुत ही मुलायमियत से उसने अपने भाई के शरीर को पत्थरों से ढका और ऊँचे ऊँचे पहाड़ों पर घूमता रहा। घूमते घूमते वह एक गुफा के सामने आ पहुँचा। उस गुफा में एक बहुत बड़ी उम्र के ऋषि[95] बैठे हुए थे।

उन्होंने उससे पूछा — "बेटा तुम कहाँ से आये हो? तुम्हारी शक्ल बता रही है कि तुम बहुत दुखी हो।"

नौजवान ने जो जो उसके साथ अब तक हुआ था वह सब उसको बता दिया। बूढ़े ने अपने साथ कुछ सामान लिया जिससे वह मुर्दे को भी ज़िन्दा कर सकता था और उसके साथ वहाँ चल दिया जहाँ उसका भाई पड़ा हुआ था।

वहाँ पहुँच कर उसने चाँदनी को ज़िन्दा किया और दोनों से पूछा कि "क्या तुम लोग मेरे बेटे बन कर रहोगे?"

दोनों ने हाँ कर दी और वे उस बूढ़े के पास उसके बेटों की तरह रहने लगे।

इस जगह के पास ही एक जगह एक बहुत ही ताकतवर चान रहता था। इस देश में अब खेतों में पानी देने का समय आ रहा था पर मगरों ने पानी को रोक रखा था। नदी के मुँहाने पर ही कुछ मगर वहाँ की दलदल में घूमते रहते थे और पानी को वहाँ से

---

[95] Arschi – an aged sage

निकलने नहीं देते थे जब तक कि चीता साल के बेटे[96] की उनको बलि नहीं दे दी जाती।

सो कुछ समय बाद एक चीता साल के बच्चे की खोज होने लगी। कुछ लोग चान के पास आये और बोले कि जहाँ बूढ़े ऋषि रहते हैं वहाँ पर चीता साल का एक बच्चा रहता है। हम लोग अपने जानवरों के वहाँ पानी पिलाने के लिये ले गये थे तब हमने उसे वहाँ देखा।

यह सुन कर चान बोला "तो उसको जा कर ले कर आओ।"

तुरन्त ही उसको लाने के लिये दूत भेजे गये। जब वे गुफा के दरवाजे पर पहुँचे तो ऋषि खुद दरवाजे के बाहर निकल कर आये और उन्होंने उनसे पूछा — "तुम्हें क्या चाहिये? तुम यहाँ क्या ढूँढ रहे हो?"

वे बोले — "चान ने हमसे आपसे यह कहने के लिये कहा है कि आपके पास चीता साल का एक बच्चा है। हमारे राज्य को उसकी जरूरत है इसलिये आप उसे हमारे पास भेज दें।"

पर ऋषि बोले — "ऐसा तुमसे किसने कहा? एक बूढ़े ऋषि के साथ भला कौन रहना चाहेगा?"

यह कह कर वह गुफा के अन्दर चला गया और अन्दर से उसका दरवाजा बन्द कर लिया। अन्दर जा कर उसने नौजवान को

[96] Son of the Tiger-year = among the Calmucs every year has its peculiar name and persons born in that year are called the children of that particular year. Here the year's name is "Tiger Year" and the born in that year is known as the "Son of the Tiger Year".

एक पत्थर के बक्से में छिपा दिया और उसके ऊपर ढक्कन रख दिया और ढक्कन और बक्से के खाली जगह को मिट्टी से बन्द कर दिया जैसे कि उसमें अन्दर शराब बन रही हो।

पर दूतों ने उसके घर का दरवाजा तोड़ दिया और उसकी गुफा में घुस गये। गुफा में इस बच्चे को ढूँढा। जब वह वहाँ कहीं नहीं मिला तो बोले — "क्योंकि हम जिसे ढूँढने आये थे वह हमें यहाँ नहीं मिला तो हम अब देखेंगे कि यहाँ की हर चीज़ नष्ट हो जाये।"

ऐसा कह कर उन्होंने अपनी अपनी तलवारें खींच लीं कि तभी नौजवान बोला — "मेहरबानी करके मेरे प्रिय पिता को कोई नुकसान मत पहुँचाओ। मैं यहाँ हूँ।"

और जब नौजवान आगे आया तो दूतों ने उसे पकड़ा और उसे अपने साथ ले गये पर ऋषि को वह वहीं गुफा में ही रोते बिलखते छोड़ गये।

जब नौजवान चान के महल में पहुँचा तो चान की बेटी ने उस देखा तो वह उसको प्यार करने लगी। उसने अपनी बाँहें उसके गले में डाल दीं। दूतों ने चान से कहा — "सरकार आज तो चीता साल के बच्चे को यानी इस नौजवान को पानी में फेंक देने का दिन है।"

यह सुन कर चान बोला — "हाँ ठीक है तो इसे पानी में फेंक दिया जाये।"

पर जब वे लोग उसे इस काम के लिये ले जाने लगे तो चान की बेटी बोली — "इसको पानी में मत फेंकना। और अगर तुम

लोग इसको पानी में फेंकना चाहते ही हो तो फिर साथ में मुझे भी फेंक दो।"

जब चान ने यह सुना तो वह बहुत गुस्सा हो गया। वह बोला — "क्योंकि यह लड़की उस देश वालों की बिल्कुल भी परवाह नहीं कर रही जिसका मैं चान हूँ तो उसको भी चीता साल के बच्चे के साथ बाँध दिया जाये और फिर दोनों को साथ साथ पानी में फेंक दिया जाये।"

नौकरों ने कहा — "जैसी मालिक की इच्छा।"

उसके बाद नौजवान को लड़की के साथ कस कर बाँध दिया गया और दोनों को साथ साथ बाँध कर पानी में फेंक दिया गया।

जैसे ही उसको पानी में फेंका गया तो नौजवान चिल्लाया — "क्योंकि मैं चीता साल का बच्चा हूँ इसलिये यह उन लोगों के लिये कानूनन ठीक है कि वे मुझे पानी में फेंकें पर उस सुन्दर लड़की को मेरे साथ क्यों मरना पड़े जो मुझे इतना प्यार करती है।"

यह सुन कर लड़की बोली — "क्योंकि मैं एक बहुत ही बेकार की जीव हूँ तो उनको लिये यह भी कानूनन ठीक है कि वे मुझे पानी में फेंक दें पर वे इस सुन्दर नौजवान को पानी में क्यों फेंक रहे हैं।"

मगरों ने उनकी यह बात सुनी तो उनको उन बच्चों पर दया आ गयी उन्होंने तुरन्त ही उन दोनों को नदी के किनारे पर ले जा कर फेंक दिया।

जब वे इस तरह बच गये तो लड़की ने नौजवान से कहा — "मैं आपसे विनती करती हूँ कि आप मेरे साथ महल चलिये।"

उस पर नौजवान बोला — "पहले मैं अपने पिता ऋषि को ढूँढ लूँ तब मैं तुम्हारे महल आऊँगा और फिर हम लोग शादी करके पति पत्नी की तरह से रहेंगे।"

यह कह कर वह नौजवान वहाँ से ऋषि की गुफा की तरफ चल दिया और गुफा का दरवाजा खटखटाया और बोला — "मैं आपका बेटा हूँ।"

बूढ़ा बोला — "मेरे बेटे को तो चान ने ले लिया है और मार दिया है मैं यहाँ इसी लिये रोता हूँ।"

इस पर नौजवान बोला — "आप ठीक कहते हैं पर मैं आपका बेटा हूँ। क्योंकि मगरों ने मुझे मारा नहीं इसलिये मैं ज़िन्दा ही आपके पास लौट आया हूँ। पिता जी आप रोइये नहीं। दरवाजा खोलिये। देखिये मैं हूँ।"

यह सुन कर ऋषि ने गुफा का दरवाजा खोल दिया। उसकी दाढ़ी और सिर के बाल दोनों बहुत बढ़ गये थे। इससे वह बिल्कुल मरा जैसा लग रहा था।

धूप ने उसको दूध और पानी से नहलाया और अपनी मीठी बातों से उसका दिल खुश किया।

जब राजकुमारी दोबारा महल वापस आयी तो सब लोग उसको देख कर बहुत खुश हुए। वे बोले — "मगरों को जो चाहिये था

उसे न ले कर उन्होंने इस पर दया की और इसे छोड़ दिया। यह तो बड़े आश्चर्य की बात हो गयी।"

सारे लोग राजकुमारी के पास से अपना अपना सिर झुकाते हुए जाने लगे। लेकिन चान बोला — "राजकुमारी का यहॉ वापस लौटना तो एक बहुत ही अच्छा शकुन है। पर चीता साल के बच्चे को तो मुझे लगता है कि जरूर ही उन मगरों ने खा लिया होगा।"

यह सुन कर राजकुमारी बोली — "नहीं पिता जी। चीता साल का बेटा बिल्कुल सुरक्षित है। उसकी अच्छाइयों की वजह से ही वह खुद भी बच गया है और मैं भी बच गयी हूॅ।"

जब राजकुमारी ने यह कहा तो उसकी यह बात सुन कर तो वहॉ खड़े सारे लोगों ने आश्चर्य से दॉतों तले ॅउगली दबा ली।

चान ने तुरन्त ही अपने मन्त्रियों से कहा कि वे चीता साल के बेटे को ढॅूढ कर उसके पास ले कर आयें। चान का हुकुम मान कर लोग फिर बूढ़े ऋषि की गुफा की तरफ दौड़े। ऋषि और नौजवान अपनी अपनी जगहों से उठे और चान के घर चल दिये।

जब वे चान के महल पहॅुचे तो चान ने उन लोगों से कहा — "इस ताकतवर नौजवान ने हमारे ऊपर और हमारी जनता के ऊपर जो मेहरबानी की है उसकी कृतज्ञता दिखाने के लिये हम लोगों को उसको लाने के लिये बाहर जाना ही चाहिये।"

यह कहते हुए वह अपने मन्त्रियों के साथ उस नौजवान का स्वागत करने चला और उसको महल के अन्दर ले कर आया।

अन्दर ला कर उसने उसको एक कुलीन आदमी के बैठने लायक सीट पर बिठाया और बोला — "तुम तो एक बहुत ही बढ़िया नौजवान हो। क्या तुम वाकई इन ऋषि के बेटे हो?"

नौजवान बोला — "नहीं। मैं एक चान का बेटा हूँ। पर मेरी सौतेली माँ क्योंकि अपने बेटे को ज़्यादा चाहती थी इसलिये उसने मुझे मारने की तरकीब सोची। मैं वहाँ से अपने छोटे भाई के साथ भाग निकला और हम दोनों इन ऋषि की गुफा में जा पहुँचे।"

जब चान के बेटे ने यह सब उसको बताया तो चान ने उसको बहुत इज़्ज़त दी और अपनी दो बेटियों की शादी उन दोनों भाइयों के साथ कर दी। फिर उसने उनको बहुत सारी कीमती भेंटें दे कर उनके अपने राज्य विदा कर दिया।

जब वे अपने महल के पास आये तो उन्होंने उनको एक चिट्ठी लिखी — "अपने पिता चान को, हम दोनों भाई फिर से वापस घर आ गये हैं।"

उनके माता पिता जो उनकी गैरहाजिरी से इतने दुखी हो रहे थे कि वे अब तक अकेले ही रह रहे थे। यह चिट्ठी मिलते ही उन्होंने अपने बच्चों को लाने के लिये अपने बहुत सारे आदमी भेजे।

पर जब चान की पत्नी ने देखा कि वे दोनों बहुत सारी भेंटें और बहुत सारे लोगों के साथ आ रहे हैं तो वह तो जलन के मारे वहीं मर गयी।"

यह सुन कर चान के बेटे के मुँह से निकला — "उसके साथ यही होना चाहिये था जो हुआ।"

यह कहानी सुना कर सिद्दी बोला — "ओ किस्मत बनाने वाले तुम तो फिर बोल पड़े।" कह कर वह उसका थैला फाड़ कर फिर से बाहर निकल कर भाग गया।

सो यह थी सिद्दी कुर की पाँचवीं कहानी
"धूप और उसके भाई की कहानी"

5–6 एक आदमी जिसने चान को हराया[97]

सो इस तरह इस बार भी चान का बेटा बोल पड़ा और सिद्दी कुर उसका थैला फाड़ कर भाग गया। सिद्दी कुर के थैला फाड़ कर भाग जाने के बाद चान का बेटा उसे लाने के लिये फिर से मौत के ठंडे जंगल[98] की ओर चल दिया और फिर अमीरी पेड़ के नीचे पहुँच गया और एक बार फिर उसको धमकी दी — "ओ लाश। या तो तुम इस पर से नीचे उतरो या फिर मैं तुम्हारा यह पेड़ काट दूँगा।"

सिद्दी कुर उसकी धमकी से डर कर पेड़ पर से उतर कर नीचे आ गया और उसके थैले में आ कर बन्द हो गया। चान के बेटे ने भी उस थैले के मुँह को रस्सी से बाँधा अपनी कभी न खत्म होने वाली केक में से कुछ केक खायी और सिद्दी कुर को अपने कमर पर लाद कर चल दिया।

सिद्दी फिर बोला — "रास्ता लम्बा है तो समय गुजारने के लिये या तो मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ और या फिर तुम मुझे एक कहानी सुना दो। अगर तुम मुझे कहानी नहीं सुनाना चाहते तो अपना सिर ना में हिला कर मुझे बता दो तो फिर मैं कहानी सुना देता हूँ।"

---

[97] A Wonderful Man Who Overcame the Chan (Tale No 5-6)

[98] Translated for the words "Forest of Death".

चान के बेटे ने ना में अपना सिर हिला दिया तो सिद्दी ने एक बार फिर अपनी कहानी कहनी शुरू की —

"यह बहुत दिनों पुरानी बात है कि बरशीस[99] नामक जगह में एक आदमी रहता था जो अपने आपको बड़ी तोप चीज़ समझता था और किसी को अपने से बड़ा देख नहीं सकता था।

एक दिन वहाँ के चान ने उससे बड़े गुस्से में भर कर कहा — "दूर हो जा मेरी नजरों से। तू किसी काम का नहीं। जा तू किसी और राज्य में चला जा।"

चान के यह कहने पर वह जंगली आदमी वहाँ से किसी दूसरे देश चला गया। अपनी यात्रा में वह दोपहर के समय में एक जंगल से गुजरा तो उसको वहाँ एक घोड़े का मरा हुआ शरीर पड़ा मिल गया जिसको किसी ने मार दिया था। उसने उसका सिर काटा अपनी कमर में बाँधा और एक पेड़ पर चढ़ गया।

आधी रात के करीब वहाँ पेड़ की छालों के घोड़ों पर सवार हो कर बहुत सारी शदकुर[100] इकट्ठा हुईं। उसी तरह की पेड़ की छाल की उन्होंने टोपी पहनी हुई थी। वे सब वहाँ आ कर पेड़ के चारों तरफ बैठ गये।

[99] Barschiss

[100] Tschadkurr – means evil spirits

कुछ देर बाद कुछ दूसरी शदकुर वहाँ आ पहुँची। वे कागज के घोड़ों पर सवार थीं और अपने सिर पर कागज की ही टोपियाँ लगाये थीं। वे भी वहाँ आ कर पेड़ के चारों तरफ बैठ गयीं।

जिस समय वे सब वहाँ बैठी हुई थीं तो वे सब अलग अलग तरह की शराबें पी रही थीं। आदमी ने उत्सुकतावश पेड़ से नीचे झाँक कर देखा कि वहाँ क्या हो रहा था तो जब वह यह कर रहा था तो उसकी कमर से घोड़े का सिर नीचे गिर पड़ा।

वे सब शदकुर बहुत सावधान हो गयीं और इतनी ज़्यादा डर गयीं कि वे डर से आवाजें निकालते हुए इधर उधर भाग गयीं। सुबह को वह आदमी पेड़ से नीचे उतरा तो सोचने लगा कि "अरे रात को तो यहाँ पर इतनी सारी तरह की शराब थी और अब सब गायब हो गया।"

जब वह ऐसा सोच रहा था तो उसकी निगाह एक खाली थरमस पर पड़ी। वह उसमें से कुछ पीने के लिये लालायित हो उठा। उसने तुरन्त ही वह थरमस उठाया और अपने मुँह से लगा लिया कि अचानक से उसमें से माँस केक और दूसरे स्वादिष्ट खाने निकल पड़े।

वह बोला — "लगता है कि यह थरमस इच्छा पूर्ण करने वाला थरमस है। मैं इसको अपने साथ लिये चलता हूँ यह मेरी सारी इच्छाऐं पूरी करेगा।" यह कह कर उसने वह थरमस उठाया और आगे चल दिया।

चलते चलते उसको एक आदमी मिला जो अपने हाथ में एक तलवार लिये चला आ रहा था। उसको देखते ही वह चिल्लाया — "यह तलवार तुम्हारे पास कहाँ से आयी?"

आदमी बोला — "इस तलवार का नाम कीशविंगर[101] है। जब भी मैं इससे कहता हूँ कि "ओ कीशविंगर फलाँ आदमी ने मेरी कोई चीज़ ले ली है जा कर उसे ले कर आ।" तो यह तलवार उसकी तरफ भागती है उस आदमी को मार कर उससे मेरी चीज़ वापस ले आती है।"

इस पर पहले आदमी ने कहा — "इस बरतन में से जो कुछ भी तुम चाहो निकल आता है। क्यों न हम आपस में अपनी चीज़ें एक दूसरे की चीज़ों से बदल लें।"

दूसरा आदमी राजी हो गया और दोनों ने अपनी अपनी चीज़ें एक दूसरे को दे कर उनकी चीज़ें खुद ले लीं। जब दूसरा आदमी थरमस ले कर चला गया तो पहला आदमी अपनी तलवार से बोला — "कीशविंगर जाओ और उस आदमी से मेरा थरमस वापस ले कर आओ।"

कीशविंगर तलवार तुरन्त ही उधर गयी अपने पुराने मालिक को मारा और उससे थरमस ले कर आ गयी। जब वह थोड़ा और आगे चला तो उसे एक आदमी मिला जो अपने हाथ में एक लोहे का हथौड़ा लिये चला आ रहा था।

---

[101] Krieschwinger – name of the sword.

उसने उससे पूछा — “यह जो तुमने अपने हाथ में हथौड़ा पकड़ रखा है यह क्या करता है।”

दूसरा आदमी बोला — “मैं जब इसे जमीन पर 9 बार मारता हूँ तो वहाँ तुरन्त ही एक लोहे की दीवार खड़ी हो जाती है जो 9 खम्भे ऊँची होती है।”

तो पहले आदमी ने कहा कि आओ हम अपनी चीज़ें एक दूसरे की चीज़ों से बदल लेते हैं। जब दोनों ने आपस में चीज़ें बदल लीं तो कुछ दूर जाने के बाद पहले आदमी ने अपनी तलवार से कहा — “क्रीशविंगर जाओ और मेरा सोने का बरतन यानी थरमस ले आओ।”

यह सुन कर तलवार तुरन्त दौड़ गयी और उस आदमी को मार कर उससे सोने का बरतन ले कर वापस आ गयी। अब वह आदमी और आगे चला तो उसे एक और आदमी मिला जो बकरे की खाल का एक थैला अपने सीने से लगाये चला आ रहा था।

उसने उससे पूछा — “तुम इस थैले से क्या करते हो?”

वह आदमी बोला — “यह मेरा थैला तो बहुत काम की चीज़ है। जब तुम इसे ज़ोर से हिलाते हो तो इससे बहुत ज़ोर की बारिश होती है और जब तुम इसे बहुत बहुत ज़ोर से हिलाते हो तो बहुत बहुत बहुत ज़ोर से बारिश होती है।”

पहले आदमी ने उसको अपना थरमस दिखाया और कहा कि वह अपना थरमस उसके थैले से बदलना चाहता है। वह आदमी राजी हो गया और दोनों ने आपस में अपनी अपनी चीज़ें बदल लीं।

कुछ दूर जाने पर पहले आदमी ने फिर अपनी तलवार से कहा — "कीशविंगर जाओ और उस आदमी से मेरा थरमस ले कर आओ।"

कीशविंगर तलवार तुरन्त ही उधर गयी उस आदमी को मारा और उससे थरमस ले कर आ गयी।

अब आदमी के पास कई आश्चर्यजनक चीज़ें हो गयी थीं तो उसने सोचा "हमारे देश का चान तो बहुत ही बेरहम चान है पर फिर भी मैं अपने घर वापस जाऊँगा।" सो वह इस इरादे से अपने घर वापस चल दिया।

वेश बदल कर वह चान के महल के पास ही एक जगह रहने लगा। आधी रात के समय उसने लोहे का हथौड़ा जमीन पर **9** बार मारा और वहॉ **9** खम्भों जितनी ऊँची एक लोहे की दीवार खड़ी हो गयी।

अगली सुबह जब चान उठा तो बोला — "कल रात को मैंने अपने महल के पीछे बहुत ज़ोर की आवाजें सुनी थीं।"

तो चान की पत्नी ने बाहर झॉक कर देखा तो बोली — "अरे हमारे महल के पीछे तो **9** खम्भों ऊँची एक लोहे की दीवार खड़ी है।"

यह सुन कर चान को गुस्सा आ गया। वह बोला — "मुझे यकीन है कि यह वही जंगली घमंडी आदमी होगा जिसको जिसने मैंने अपने राज्य से बाहर निकाल दिया था। लगता है कि उसी ने यह लोहे की दीवार खड़ी की है। पर मैं देखता हूँ कि इस देश का राजा कौन है वह या मैं।"

चान ने तुरन्त ही लोगों को हुकुम दिया कि वे आग ले कर आयें और उस लोहे की दीवार को सब तरफ से जला कर लाल गरम कर दें। एक बहुत बड़ी आग जलायी गयी और उस दीवार को आग से गरम किया गया।

कुछ देर में ही उस जंगली और घमंडी आदमी ने अपने आपको अपनी मॉ के साथ उस लोहे की दीवार से घिरा हुआ पाया।

वह खुद तो ऊँचे वाले खम्भे पर था पर उसकी मॉ आठवें खम्भे पर थी और क्योंकि गरमी पहले उसकी मॉ के पास पहुँची तो वह चिल्ला कर बोली — "बेटा चान ने अपने लोगों को जो आग जलाने का हुकुम दिया है उससे तो यह लोहे की दीवार बहुत जल्दी ही जल जायेगी और हम दोनों मर जायेंगे।"

बेटा बोला — "तुम चिन्ता न करो मॉ।"

कह कर उसने अपना बकरे की खाल का थैला बहुत ज़ोर से हिलाया तो बहुत ज़ोर से बारिश होने लगी जिसने आग को बुझा दिया।

फिर उसने उस थैले को बहुत बहुत ज़ोर से हिलाया तो और बहुत बहुत बहुत तेज़ बारिश होने लगी और उनके चारों तरफ समुद्र ही समुद्र हो गया जिसमें आग जलाने वाली लकड़ियाँ आदि सब बह गये।"

यह सुन कर चान के बेटे के मुँह से निकला — "तो इस तरह से उस जंगली और घमंडी आदमी ने चान को जीता।"

यह कहानी सुना कर सिद्दी कुर बोला — "ओ किस्मत बनाने वाले तुम तो फिर बोल पड़े।" कह कर वह उसका थैला फाड़ कर फिर से बाहर निकल कर भाग गया और जा कर अमीरी पेड़ पर बैठ गया।

सो यह थी सिद्दी कुर की छठी कहानी
"एक आदमी जिसने चान को हराया"

5–7 चिड़ा आदमी[102]

सो इस तरह इस बार भी चान का बेटा बीच में बोल पड़ा सो सिद्दी कुर उसका थैला फाड़ कर वापस अपने पेड़ पर भाग गया। सिद्दी कुर के थैला फाड़ कर भाग जाने के बाद चान का बेटा उसे लाने के लिये फिर से मौत के ठंडे जंगल[103] की ओर चल पड़ा और फिर अमीरी पेड़ के नीचे पहुँच गया और एक बार फिर उसको धमकी दी — "ओ लाश। या तो तुम इस पर से नीचे उतरो या फिर मैं तुम्हारा यह पेड़ काट दूँगा।"

सिद्दी उसकी धमकी से डर कर फिर पेड़ से उतर कर नीचे आ गया और उसके थैले में आ कर बन्द हो गया। चान के बेटे ने भी उस थैले के मुँह को रस्सी से बाँधा अपनी कभी न खत्म होने वाली केक में से कुछ केक खायी और सिद्दी को अपने कमर पर लाद कर चल दिया।

सिद्दी फिर बोला — "रास्ता लम्बा है तो समय गुजारने के लिये या तो मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ और या फिर तुम मुझे एक कहानी सुना दो। अगर तुम मुझे कहानी नहीं सुनाना चाहते तो अपना सिर ना में हिला कर मुझे बता दो तो फिर मैं कहानी सुना देता हूँ।"

---

[102] The Bird-Man (Tale No 5-7) – a folktale from Kalmuk Tartar, Asia.

[103] Translated for the words "Forest of Death".

चान के बेटे ने ना में अपना सिर हिला दिया तो सिद्दी कुर ने एक बार फिर अपनी कहानी कहनी शुरू की —

"यह बहुत दिनों पुरानी बात है कि एक अच्छी सी जगह में एक पिता अपनी तीन बेटियों के साथ रहता था। वे बेटियॉ बारी बारी से उसके बछड़ों की देखभाल करती थीं।

अब एक बार ऐसा हुआ कि जब उसकी सबसे बड़ी बेटी बछड़ों की देखभाल कर रही थी कि उसे नींद आ गयी और वह सो गयी। इस बीच में उसका एक बछड़ा खो गया।

जब वह जागी तो उसने देखा कि उसका एक बछड़ा गायब था। वह उठी और उसको देखने के लिये इधर उधर गयी। चलते चलते वह एक बहुत बड़े मकान के पास पहुँच गयी जिसका दरवाजा लाल था।

वह उस मकान के अन्दर चली गयी तो उसको एक सुनहरा दरवाजा दिखायी दिया। वह यह दरवाजा खोल कर अन्दर घुसी तो उसने देखा कि दरवाजे के पास ही एक पिंजरा रखा हुआ था जो सोने और कीमती जवाहरातों से सजा हुआ था। उसके अन्दर एक सफेद चिड़ा बैठा हुआ था।

लड़की बोली — "मेरा एक बछड़ा खो गया है। मैं यहॉ उसे ढूँढती चली आयी हूँ।"

यह सुन कर चिड़ा बोला — "अगर तुम मुझसे शादी कर लोगी तो मैं तुम्हारे लिये तुम्हारा बछड़ा ढूँढने में मदद कर दूँगा। पर अगर तुम मुझसे शादी नहीं करोगी तो मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं करूँगा।"

लड़की बोली — "यह नहीं हो सकता। इन्सानों में चिड़े और चिड़िया एक जंगली जानवर समझे जाते हैं। इसलिये मैं तुमसे शादी नहीं करूँगी और इस तरह से मना करके मैं अपना बछड़ा खोना ज़्यादा पसन्द करूँगी।" यह कह कर वह अपने घर वापस आ गयी।

अगले दिन दूसरी बहिन बछड़े चराने गयी तो उसको भी नींद आ गयी और वह भी सो गयी और उसका भी एक बछड़ा खो गया। वह भी ढूँढने निकली तो वह भी उसी लाल दरवाजे वाले बड़े मकान में जा पहुँची।

उसको भी वहाँ सफेद चिड़ा मिला उसने भै उससे शादी के लिये कहा कि अगर वह उससे शादी कर लेगी तो वह उसका बछड़ा ढूँढने में उसकी मदद कर देगा। पर इस लड़की ने भी उससे शादी करने के लिये मना कर दिया।

सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा कि सबसे बड़ी बेटी के साथ हुआ था। वह भी बिना बछड़े के अपने घर वापस आ गयी।

तीसरे दिन उसकी सबसे छोटी बेटी बछड़ों को चराने ले गयी। तो उसको भी नींद आ गयी और वह भी सो गयी और उसका भी

एक बछड़ा खो गया। वह भी ढूँढने निकली तो वह भी उसी लाल दरवाजे वाले बड़े मकान में जा पहुँची।

उसको भी वहाँ सफेद चिड़ा मिला उसने उससे भी शादी के लिये कहा कि अगर वह उससे शादी कर लेगी तो वह उसका बछड़ा ढूँढने में उसकी मदद कर देगा।

लड़की बोली — "जैसी आपकी इच्छा।" और वह उस चिड़े की पत्नी बन गयी।

कुछ समय बाद एक पगोडा[104] में तेरह दिन की एक बहुत ज़ोरदार दावत का इन्तजाम किया गया। इस मौके पर चिड़े की पत्नी के अलावा भी बहुत सारे लोग इकट्ठे हुए थे। वह सब स्त्रियों में सबसे अच्छी लग रही थी पर आदमियों में एक हथियारबन्द आदमी बहुत अच्छा लग रहा था।

यह आदमी एक सफेद घोड़े पर सवार था और इसने वहाँ पर मौजूद लोगों के सामने तीन बार चक्कर काटा। जिसने भी उसको देखा उसके मुँह से निकला — "ओह यही सबसे अच्छा आदमी है।"

जब वह लड़की घर लौटी तो चिड़े ने उससे पूछा — "तुमने वहाँ इतने सारे लोगों को देखा तुम्हें सबसे अच्छा कौन लगा।"

[104] A kind of tiered building, most common in Japan, China and other Eastern countries.

लड़की बोली — "सब लोगों में सबसे अच्छा तो वह था जो एक सफेद घोड़े पर सवार था पर मैं यह नहीं जानती कि वह कौन था। और स्त्रियों में तो सबसे अच्छी मैं लग रही थी।"

फिर अगले **11** दिन तक यही सब चलता रहा पर बारहवें दिन जब चिड़े की पत्नी उस दावत में गयी तो वह एक बुढ़िया के पास बैठ गयी।

बुढ़िया ने पूछा — "आज यहाँ मौजूद लोगों में कौन सबसे अच्छा है।"

चिड़े की पत्नी बोली — "सबसे अच्छा तो वही है जो सफेद घोड़े पर सवार है। उसकी किसी से कोई तुलना नहीं। और स्त्रियों में मेरे मुकाबले की कोई नहीं। काश मेरी शादी इस आदमी से हुई होती क्योंकि मेरा पति तो जंगली चिड़ियों में आता है। आखिर वह है तो एक चिड़ा ही।"

जब लड़की ने ऐसा बोला तो वह बुढ़िया रोते हुए बोली — "ऐसी बात फिर मत बोलना। यहाँ मौजूद स्त्रियों में सचमुच ही तुम सबसे अच्छी दिखायी देती हो पर वह जो सफेद घोड़े पर सवार है वही तुम्हारा पति है।

कल को इस दावत का तेरहवाँ दिन है। कल तुम दावत में जब तक मत आना अपने घर में ही अपने दरवाजे के पीछे रहना जब तक तुम्हारा पति पिंजरे का दरवाजा न खोले और अपनी घुड़साल में से अपना घोड़ा निकाल कर दावत की तरफ न चल दे।

उसके बाद तुम वह पिंजरा उठाना और उसको जला देना। और जब तुम उसे जला चुकोगी तब तुम्हारा पति जब वापस आयेगा तो अपने उसी असली रूप में रह जायेगा।"

अगले दिन चिड़े की पत्नी ने वैसा ही किया जैसा उस बुढ़िया ने उससे करने के लिये कहा था। जब पिंजरा खोल कर उसका पति बाहर चला गया तो उसने वह पिंजरा जला दिया।

जब शाम को सूरज पश्चिम में नीचे जाने लगा तो चिड़ा घर वापस लौटा तो उससे पूछा — "अरे क्या तुम वहॉ से जल्दी ही चली आयीं?"

पत्नी बोली — "हॉ मैं वहॉ से जल्दी ही चली आयी।"

चिड़े ने इधर उधर देखते हुए पूछा — "और मेरा पिंजरा कहॉ है?"

पत्नी बोली — "वह तो मैंने जला दिया।"

तो वह बोला — "बरामा यह तो तुमने बड़ा अच्छा किया क्योंकि वह पिंजरा तो मेरी आत्मा थी।"

उसकी पत्नी तो यह सुन कर रुऑसी हो कर परेशान हो गयी और बोली — "अब क्या किया जाये?"

चिड़ा बोला — "अब कुछ नहीं हो सकता सिवाय इसके कि अब तुम इस दरवाजे के पीछे बैठ जाओ और वहॉ बैठ कर लगातार तलवार चलाती रहो। क्योंकि अगर तलवार चलनी बन्द हो गयी तो

शदकुर[105] आ कर मुझे ले जायेंगे। इस तरह से सात दिन और सात रात तक तुम्हें शदकुर और सांगारी से मेरी रक्षा करनी पड़ेगी।"

यह सुन कर पत्नी ने एक तलवार उठायी छोटी छोटी डंडियों से अपनी ऑखें खुली रखीं और छह रात तक पहरा देती रही।

सातवीं रात को उसकी ऑखें बन्द होने लगीं तो वे केवल एक पल के लिये ही बन्द हुई होंगी कि शदकुर और तांगारी आ कर उसके पति को ले गये।

ज़ोर ज़ोर से रोते हुए वह बेचारी भूखी प्यासी चारों तरफ को दौड़ी भागी। वह लगातार रोये जा रही थी और अपने पति को पुकारे जा रही थी।

वह दिन रात उसको ढूँढती रही पर वह उसे कहीं नहीं मिला तो उसने पहाड़ की एक चोटी से उसकी आवाज सुनी तो वह उस आवाज के पीछे भागी तो उसने देखा कि वह आवाज तो एक नदी से आ रही थी तो वह नदी की तरफ दौड़ी।

वहॉ पहुॅच कर उसने अपने पति को देखा तो वह तो बहुत सारे फटे जूते अपनी पीठ पर लादे हुए था।

उसका पति उसको देखते ही बोला — "ओह मैं तुमको देख कर कितना खुश हूॅ। यहॉ मुझसे शदकुर और तांगारी के लिये पानी भरवाया जाता है। इस काम को करते करते ये मेरे जूते फट गये हैं जो मेरी पीठ पर लदे हैं।

[105] Shadkurr means spirits

अगर तुम मुझे फिर से देखना चाहती हो तो मेरे लिये एक नया पिंजरा बनवाओ और उसको मेरी आत्मा को समर्पित कर दो तो मैं फिर आ जाऊँगा।"

ऐसा कह कर वह हवा में गायब हो गया। लड़की दौड़ी हुई घर गयी चिड़िया का एक नया पिंजरा बनवाया और उसको अपने पति की आत्मा को समर्पित कर दिया।

काफी दिनों बाद वह चिड़ा आदमी वापस आ कर घर की छत पर बैठ गया।"

यह सुन कर चान के बेटे के मुँह से निकला — "उसकी पत्नी तो बहुत ही अच्छी पत्नी थी।"

यह कहानी सुना कर सिद्दी कुर बोला — "ओ किस्मत बनाने वाले तुम तो फिर बोल पड़े।" कह कर वह उसका थैला फाड़ कर फिर से बाहर निकल कर भाग गया और जा कर अमीरी पेड़ पर बैठ गया।

सो यह थी सिद्दी कुर की सातवीं कहानी
"चिड़ा आदमी"

5-8 पेन्टर और बढ़ई[106]

सो इस तरह इस बार भी सिद्दी कुर चान के बेटे का थैला फाड़ कर भाग गया था। सिद्दी कुर के थैला फाड़ कर भाग जाने के बाद चान का बेटा उसे लाने के लिये फिर से मौत के ठंडे जंगल[107] की ओर चल दिया और फिर अमीरी पेड़ के नीचे पहुँच गया और एक बार फिर उसको धमकी दी — "ओ लाश। या तो तुम इस पर से नीचे उतरो या फिर मैं तुम्हारा यह पेड़ काट दूँगा।"

सिद्दी उसकी धमकी से डर कर पेड़ पर से उतर कर नीचे आ गया और उसके थैले में आ कर बन्द हो गया। चान के बेटे ने भी उस थैले के मुँह को रस्सी से बाँधा अपनी कभी न खत्म होने वाली केक में से कुछ केक खायी और सिद्दी को अपने कमर पर लाद कर चल दिया।

सिद्दी फिर बोला — "रास्ता लम्बा है तो समय गुजारने के लिये या तो मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ और या फिर तुम मुझे एक कहानी सुना दो। अगर तुम मुझे कहानी नहीं सुनाना चाहते तो अपना सिर ना में हिला कर मुझे बता दो तो फिर मैं कहानी सुना देता हूँ।"

---

[106] The Painter and the Woodcarver (Tale No 5-8)

[107] Translated for the words "Cold Forest of Death".

चान के बेटे ने ना में अपना सिर हिला दिया तो सिद्दी कुर ने एक बार फिर अपनी कहानी कहनी शुरू की —

“इस बात को बहुत दिन हो गये कि गूजसमुन नाम की एक जगह[108] में एक चान राज्य करता था जिसका नाम था गुनिसचॉग[109]। यह चान मर गया था और इसका बेटा चामुक साकीक्षी[110] उसका राजा चुन लिया गया था।

उस देश के लोगों में दो आदमी भी रहते थे जिनमें से एक था पेन्टर और दूसरा था बढ़ई। उनके दोनों के नाम एक से थे और वे दोनों एक दूसरे को बहुत बुरी बुरी बातें कहते रहते थे।

एक बार गुंगा पेन्टर[111] चान के पास गया और जा कर उससे बोला — “आपके पिता तांगारी के राज्य में पैदा हो चुके हैं। उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और कहा कि “मेरे पास आओ।”

मैं जब उनके पास गया तो मैंने देखा कि आपके पिता तो बहुत ताकतवर है और बड़ी ऊँची शान वाले हैं। तब उन्होंने आपके नाम एक चिट्ठी दी जिसे मैं उनकी तरफ से आपके लिये ले कर आया हूँ।”

यह कह कर पेन्टर ने चान को एक जाली चिट्ठी थमा दी जिसमें लिखा था “यह चिट्ठी मेरे बेटे साकीक्षी के लिये है। जब मैंने यह

---

[108] Gujassmunn – name of a place

[109] Gunisschang – name of the Chan

[110] Chamuk Sakiktschi is the name of the son of Gunisschang. He was appointed as King after his father’s death.

[111] Gunga Painter

दुनियाँ छोड़ी तो मैं तांगारी के देश में पैदा हुआ। इस देश में बहुत सारी चीज़ें बहुत सारी हैं।

मैं यहाँ एक पगोडा बनाना चाहता हूँ पर मेरे पास लकड़ी का काम करने वाला कोई नहीं है तो क्या तुम कुंगा बढ़ई[112] को मेरे पास भेज दोगे। उसको यहाँ कैसे आना है यह वह पेन्टर से पूछ लेगा।"

जब गुजसमुन के चान ने अपने पिता की यह चिट्ठी पढ़ ली तो वह बोला — "अगर मेरे पिता सचमुच ही तांगारी के देश में पैदा हुए हैं तो यह तो बहुत अच्छी बात है। ठीक है तुम कुंगा बढ़ई को बुलाओ। मैं बढ़ई को अभी वहाँ भेजता हूँ।"

बढ़ई को बुलवाया गया और चान के सामने लाया गया। चान के सामने आने पर चान ने उसको अपने पिता की चिट्ठी पढ़ कर सुनायी और उससे कहा — "मेरे पिता यहाँ से मरने के बाद तांगारी देश में पैदा हुए हैं। वह वहाँ एक पगोडा बनाना चाहते हैं और क्योंकि वहाँ कोई बढ़ई नहीं है उनकी इच्छा है कि तुमको वहाँ भेज दिया जाये।"

यह कहते हुए चान ने गुंगा पेन्टर की लायी हुई नकली चिट्ठी बढ़ई को पकड़ा दी। बढ़ई ने पेन्टर की लायी हुई चिट्ठी पढ़ी और अपने मन में कहा "लगता है यह गुंगा पेन्टर मुझे जाल में फँसाना

---

[112] Cunga woodcarver

चाहता है पर मैं कोशिश करूँगा कि मैं उसके इस जाल से निकल पाऊँ।"

ऐसा सोचते हुए बढ़ई ने पेन्टर से पूछा — "मैं किस रास्ते से तांगारी राज्य में पहुँच सकता हूँ।"

पेन्टर बोला — "जब तुम अपने बढ़ई वाले सब औजार इकट्ठे कर लो तब उनको ले कर लकड़ी के एक ढेर पर बैठ जाना। वहाँ बैठ कर कुछ खुशी के गीत गाना और जब गीत गा लो तो उन लकड़ियों में आग लगा देना। इस तरह तुम तांगारी के राज्य में पहुँच जाओगे।"

एक हफ्ते बाद सातवीं रात को इस यात्रा का समय पक्का किया गया। बढ़ई जब घर पहुँचा तो उसने अपनी पत्नी से कहा — "इस पेन्टर ने मेरे बारे में फिर से कुछ नीच बात सोची है फिर भी मैं कोशिश करूँगा कि मैं उसकी इस कुचाल से बच जाऊँ।"

अपनी योजना के अनुसार उसने जमीन के अन्दर अन्दर एक रास्ता बनाया जो उसके घर से उसके मैदान के बीच तक जाता था। मैदान के बीच में उसने जो गड्ढा बनाया था उस पर उसने एक बड़ा सा पत्थर रख दिया और उसको मिट्टी से ढक दिया।

जब सातवीं रात आयी तो चान बोला — "इस रात इसे मेरे पिता के पास पहुँच जाना चाहिये।" चान के कहने के अनुसार बहुत सारे लोग एक एक मुट्ठी गुंसा[113] की चर्बी ले कर आये।

[113] Gunsa – a wild beast

बहुत बड़ी आग जलायी गयी। बढ़ई खुशी के गीत गाते गाते अपने बनाये छिपे रास्ते से वहाँ से बच कर भाग गया।

इस बीच पेन्टर को बहुत खुशी हुई। उसने आसमान की तरफ उँगली उठाते हुए कहा — "वह देखो बढ़ई ऊपर स्वर्ग जा रहा है।"

जितने लोग भी वहाँ मौजूद थे धीरे धीरे करके सब अपने अपने घर चले गये। वे दिल ही दिल में सोचते जा रहे थे "बढ़ई बेचारा तो मर गया और चान के पास चला गया।"

बढ़ई अपनी खोदी हुई सुरंग के सहारे अपने घर पहुँच गया और वहाँ एक महीने तक छिपा रहा। वह किसी से मिला भी नहीं। पर वह अपना सिर रोज दूध से धोता रहा और हमेशा साये में ही रहा।

इसके बाद उसने सफेद रेशम की एक पोशाक पहनी और एक चिट्ठी लिखी जिसमें लिखा था "यह चिट्ठी मेरे बेटे चामुक साकीक्षी के लिये है। मुझे यह जान कर बहुत खुशी हुई कि तुम अपने राज्य में शान्ति से राज कर रहे हो यह बहुत अच्छा है। क्योंकि बढ़ई ने अपना काम खत्म कर लिया है इसलिये उसको उसके काम के मुताबिक उसका इनाम तो मिलना ही चाहिये।

पगोडा के बाद उसको सजाने के लिये अब उसको सजाने के लिये चित्रों की जरूरत है। सो जैसे तुमने इस आदमी को भेजा था वैसे ही एक पेन्टर को भी भेज दो।"

यह चिट्ठी ले कर बढ़ई चान के पास पहुँचा तो उसको देखते ही चान चिल्लाया — "क्या तुम तांगारी के राज्य से वापस आ गये?"

बढ़ई बोला — "जी सरकार।"

और यह कर उसने एक चिट्ठी चान को पकड़ा दी। वह फिर बोला — "मैं वाकई तांगारी राज्य गया था और वहाँ से वापस घर आ गया हूँ।" चान तो यह सुन कर बहुत खुश हुआ और उसने बढ़ई को बहुत सारी कीमती भेंटें दीं।

चान बोला — "अब वहाँ पगोडा को रंगने और सजाने के लिये एक पेन्टर की जरूरत है तो अब उस पेन्टर को मेरे सामने लाया जाये।"

अब पेन्टर को चान के सामने लाया गया। जब उसने बढ़ई को सफेद रेशमी कपड़ों में इतना सुन्दर देखा तो सोचा "अरे यह अभी तक मरा नहीं।"

चान ने बढ़ई की लायी चिट्ठी उसको दे दी और कहा कि तुमको वहाँ जरूर जाना है। उसको भी सात दिन का समय दिया गया। सातवीं रात को जब उसको तांगारी के राज्य में जाना था तो पहले की तरह से उस दिन भी वहाँ बहुत सारे लोग जमा हुए।

बीच मैदान में लकड़ियों का एक बहुत बड़ा ढेर लगाया गया और फिर उसमें आग लगायी गयी। पेन्टर अपना पेन्टिंग का सामान और चान के पिता के लिये एक चिट्ठी और कुछ भेंटें ले कर उस

आग के बीच में बैठ गया। वह खुश था और खुशी के गाने गा रहा था।

धीरे धीरे आग पास आती गयी तो उससे उसकी गरमी सहन नहीं हुई। वह बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा पर बाजों की आवाज के शोर में उसकी चिल्लाहट दब कर रह गयी। कुछ ही देर में वह आग में जल कर मर गया।

यह सुन कर चान के बेटे के मुँह से निकला — "उसको उसकी करनी का सही फल मिल गया।"

यह कहानी सुना कर सिद्दी कुर बोला — "ओ किस्मत बनाने वाले तुम तो फिर बोल पड़े।" कह कर वह उसका थैला फाड़ कर फिर से बाहर निकल कर भाग गया और जा कर अमीरी पेड़ पर बैठ गया।

सो यह थी सिद्दी कुर की आठवीं कहानी
"पेन्टर और बढ़ई"

5-9 दिल की चोरी[114]

सो इस तरह इस बार भी सिद्दी कुर चान के बेटे का थैला फाड़ कर भाग गया। सिद्दी कुर के थैला फाड़ कर भाग जाने के बाद चान का बेटा उसे लाने के लिये फिर से मौत के ठंडे जंगल[115] की ओर चल दिया और फिर अमीरी पेड़ के नीचे पहुँच गया और एक बार फिर उसको धमकी दी — "ओ लाश। या तो तुम इस पर से नीचे उतरो या फिर मैं तुम्हारा यह पेड़ काट दूँगा।"

सिद्दी कुर उसकी धमकी से डर कर पेड़ पर से उतर कर नीचे आ गया और उसके थैले में आ कर बन्द हो गया। चान के बेटे ने भी उस थैले के मुँह को रस्सी से बाँधा अपनी कभी न खत्म होने वाली केक में से कुछ केक खायी और सिद्दी को अपने कमर पर लाद कर चल दिया।

सिद्दी फिर बोला — "रास्ता लम्बा है तो समय गुजारने के लिये या तो मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ और या फिर तुम मुझे एक कहानी सुना दो। अगर तुम मुझे कहानी नहीं सुनाना चाहते तो अपना सिर ना में हिला कर मुझे बता दो तो फिर मैं तुम्हें कहानी सुना देता हूँ।"

---

[114] The Stealing of the Heart (Tale No 5-9) – a folktale from Kalmuk Tartar, Asia.

[115] Translated for the words "Cold Forest of Death".

चान के बेटे ने बिना कुछ बोले ना में अपना सिर हिला दिया तो सिद्दी ने एक बार फिर अपनी कहानी कहनी शुरू की —

"यह बहुत पुरानी बात है कि किसी जगह गुगुलुक्षी[116] नाम का एक चान राज करता था। इसके मरने के बाद इसका बेटा चान बना दिया गया। इस चान की बहुत इज़्ज़त थी।

इस चान के रहने की जगह से एक बैरैन[117] दूर एक आदमी रहता था जिसके एक बेटी थी जो बहुत गुणी थी और बहुत सुन्दर थी। चान का बेटा इस लड़की को बहुत चाहता था और उससे मिलने रोज जाता था।

एक दिन वह खुद बहुत बीमार पड़ गया और उसी बीमारी में मर भी गया। उस लड़की को इस बात का पता भी नहीं चला।

एक रात जब चॉद उग रहा था तो लड़की ने अपने घर के दरवाजे पर एक खटखटाहट सुनी। वह दरवाजा खोलने गयी तो यह देख कर बहुत खुश हुई कि वहॉ तो चान को बेटा खड़ा था। वह उसको अन्दर ले आयी और उसको कुछ खाने पीने को दिया।

चान का बेटा बोला — "प्रिये आओ तुम मेरे साथ आओ।"

लड़की उसके पीछे पीछे चल दी। वे लोग आगे चलते चले जा रहे थे जब तक वे चान के घर तक आ पहुॅचे।

---

[116] Guguluktschi

[117] Berren is a measurement for length.

वहाँ से उनके साथ मंजीरे आदि बाजों की आवाजें भी साथ साथ चलीं तो उसने चान से पूछा — "चान यह सब क्या है?"

चान बोला — "क्या तुमको पता नहीं है कि वे लोग आज मेरे दफ़न की दावत[118] मना रहे हैं?"

उसका यह जवाब सुन कर लड़की बोली — "क्या? तुम्हारे दफ़न की दावत? क्या चान के बेटे को कुछ हो गया है?"

चान का बेटा बोला — "वह मर गया है। तुम उसके बच्चे को जन्म दोगी। जब तुम्हारा समय आये तो तुम हाथियों के रहने की जगह चली जाना और अपने बच्चे को वहीं जन्म देना।

क्योंकि महल में राज्य के एक कीमती पत्थर पर मेरी माँ और उसकी दासियों के बीच झगड़ा होगा। यह कीमती पत्थर जहाँ बलि देते हैं उस मेज के नीचे रखा है।

जब तुम लोग इसको ढूँढ लोगी तो तुम और मेरी माँ दोनों इस राज्य पर उस समय तक राज करेंगे जब तक कि मेरा बेटा राज करने लायक नहीं हो जाता।"

इतना कह कर वह तो हवा में गायब हो गया और उसकी प्रेमिका दुख से चक्कर खा कर नीचे गिर पड़ी और बेहोश हो गयी। बेहोशी में भी वह "चान चान" ही पुकारती रही। काफी देर बाद वह होश में आयी।

[118] The feast of my funeral

जब उसको लगा कि उसका समय आ गया है तो वह चान के कहे अनुसार हाथियों के रहने की जगह चली गयी और वहाँ उसने एक बेटे को जन्म दिया।

अगली सुबह जब हाथियों की देखभाल करने वाला वहाँ आया तो आश्चर्य से बोला — "अरे यह क्या? हाथियों के रहने की जगह में एक स्त्री ने बच्चे को जन्म दिया है? ऐसा तो पहले कभी नहीं हुआ। यह तो हाथियों को नुकसान भी पहुँचा सकती है।"

यह सुन कर लड़की ने कहा — "तुम चान की माँ के पास जाओ और उनसे जा कर कहो कि यहाँ कुछ अजीब सी घटना घटी है।"

हाथी की देखभाल करने वाला तुरन्त ही चान की माँ के पास गया और उससे जा कर यह कहा तो वह तुरन्त ही उठी और हाथियों के रहने की जगह आयी।

तब लड़की ने वह सब कुछ बताया जो उसके साथ घटा था। वह सुन कर चान की माँ बहुत खुश हुई। वह बोली — "यह तो बड़ी अच्छी बात है वरना चान तो अपना कोई वारिस छोड़ कर ही नहीं गया था। आओ मेरे साथ अन्दर आओ।"

ऐसा कहते हुए वह लड़की को अन्दर ले गयी और खूब मन लगा कर उसकी सेवा की। लड़की के कहे अनुसार वह आश्चर्यजनक पत्थर उनको वहीं मिल गया जहाँ उसने बताया था सो उसकी बाकी की कहानी पर भी विश्वास कर लिया गया।

इसके बाद चान की पत्नी और चान की माँ ने राज्य पर राज किया।

इसके बाद चान हर पूनम की रात[119] को अपनी पत्नी के सामने आता रहा। वह सुबह तक रहता और फिर गायब हो जाता। एक दिन चान की पत्नी ने चान की माँ को इसके बारे में बताया तो उसकी माँ ने तो उस पर विश्वास ही नहीं किया।

वह बोली — "यह केवल तुम्हारा ख्याल है। अगर यह सच है तो वह मेरा बेटा भी तो है जैसे वह तुम्हारे सामने आया तो उसी तरह से मेरे सामने भी तो आयेगा। अगर तुम चाहती हो कि मैं तुम्हारी बात का विश्वास करूँ तो तुम देखना कि माँ और बेटा भी आपस में मिल लें।"

अगली पूनम की रात को जब चान अपनी पत्नी के पास आया तो उसकी पत्नी ने उससे कहा — "यह तो बहुत अच्छा है कि तुम हर पूनम की रात मेरे पास आते हो पर यह और भी अच्छा हो अगर तुम हर रात को मेरे पास आओ तो।"

यह कहते हुए उसकी आँखों में आँसू भर आये तो चान ने उससे कहा — "अगर तुम्हारे पास काफी ताकत हो तो तुम मुझे रोज रात को बुला सकती हो। पर तुम अभी बहुत छोटी हो और तुम उन सब कामों को पूरा नहीं कर सकती जो ऐसा होने के लिये जरूरी हैं।"

[119] Translated for the words "Full Moon Night"

इस पर लड़की बोली — "अगर तुम रोज आने का वायदा करो तो मैं जो भी तुम मुझसे करने के लिये कहोगे मैं वह करूँगी चाहे मुझे उसके लिये अपनी जान ही क्यों न देनी पड़े।"

चान बोला — "तब तुम पूनम की रात को यहाँ से एक बैरैन दूर एक लोहे के बूढ़े के पास जाओ और उसको अरक[120] पिलाना।

उसके आगे चलोगी तो तुमको दो भैंसे मिलेंगे। उनको तुम बत्शीमक[121] की रोटी देना। कुछ दूर और चलने के बाद तुमको वर्दी और जिरहबख्तर पहने कुछ आदमियों का एक समूह मिलेगा जिनको तुम माँस और रोटी देना।

वहीं से तुमको एक बड़ी सी काली इमारत देखने को मिलेगी जिस पर खून के धब्बे पड़े होंगे। उसके ऊपर झंडे की बजाय एक आदमी की खाल लहरा रही होगी। उसके दरवाजे पर दो राक्षस खड़े होंगे उन दोनों को खून की भेंट देना।

उसके बाद जब उस इमारत में तुम अन्दर घुसोगी तो वहाँ तुमको नौ भयानक जादूगर[122] मिलेंगे। और एक सिंहासन पर नौ दिल रखे मिलेंगे। उनमें से आठ दिल तुमसे यह कहेंगे कि "हमको ले लो हमको ले लो।" जबकि नवाँ दिल कहेगा कि "मुझे मत लो।"

[120] Arrak – normally spelt as Arak is semi-alcoholic dring made from coconut floers, sugarcane juice etc.

[121] Batschimak cakes

[122] Translated for the word "Exorcist"

तुम बूढ़े दिलों को तो छोड़ देना और जवान दिल को ले लेना और उसको ले कर बिना इधर उधर देखे तुरन्त घर की तरफ दौड़ आना।"

यह सब काम जो उसको करना था सुन कर तो लड़की डर गयी पर फिर भी वह उसको करने के लिये तैयार थी। अगली पूनम की रात को वह उठी, देने वाला सब सामान इकट्ठा किया और चल दी।

रास्ते में सबको उनकी पसन्द की चीज़ें देती हुई वह उस मकान में घुसी। जवान दिल चिल्लाया "मुझे मत लो।" पर लड़की ने वही दिल उठाया और वहाँ से भाग ली।

जो जादूगर उन दिलों पर पहरा दे रहे थे जब उन्होंने देखा कि एक लड़की एक दिल ले कर भागी जा रही है तो वे उसके पीछे पीछे उसको पकड़ने के लिये भागे और जो दो राक्षस बाहर पहरा दे रहे थे उनसे उन्होंने कहा कि वे चोर को पकड़ लें पर उन्होंने कहा कि "हमको तो उसने खून पीने को दिया है हम उसे नहीं पकड़ सकते।"

उसके बाद वे सारे हथियारबन्द लोग भैंसों से बोले "चोर को पकड़ो।" तो वे बोले "हमको तो खाने के लिये उसने बत्शीमक की रोटी दी है हम उसे नहीं पकड़ सकते।"

तब उन्होंने लोहे के बूढ़े से कहा "उस दिल ले जाते हुए चोर को पकड़ो।" लोहे का बूढ़ा बोला "मुझे तो उसने अरक दिया है तो मैं उसे कैसे पकड़ सकता हूँ।"

बस इसके बाद तो लड़की को कोई रोकने वाला ही नहीं था सो वह भागती हुई अपने घर आ गयी। घर आने पर उसने देखा कि चान का बेटा तो घर में शाही कपड़े पहने हुए बैठा हुआ है।

उसको देख कर चान का बेटा उठा और लड़की को गले से लगा लिया।"

यह सुन कर चान के बेटे के मुँह से निकला — "अरे यह तो उस लड़की ने बहुत अच्छा काम किया।"

यह कहानी सुना कर सिद्दी बोला — "ओ किस्मत बनाने वाले तुम तो फिर बोल पड़े।" कह कर वह उसका थैला फाड़ कर फिर से बाहर निकल कर भाग गया और जा कर अमीरी पेड़ पर बैठ गया।

सो यह थी सिद्दी कुर की नवीं कहानी
"दिल की चोरी"

5–10 एक आदमी और उसकी पत्नी[123]

सो इस तरह इस बार भी सिद्दी कुर चान के बेटे का थैला फाड़ कर भाग गया। सिद्दी कुर के थैला फाड़ कर भाग जाने के बाद चान का बेटा उसे लाने के लिये फिर से मौत के ठंडे जंगल[124] की ओर चल दिया और फिर अमीरी पेड़ के नीचे पहुँच गया और एक बार फिर उसको धमकी दी — "ओ लाश। या तो तुम इस पर से नीचे उतरो या फिर मैं तुम्हारा यह पेड़ काट दूँगा।"

सिद्दी कुर उसकी धमकी से डर कर पेड़ पर से उतर कर नीचे आ गया और उसके थैले में आ कर बन्द हो गया। चान के बेटे ने भी उस थैले के मुँह को रस्सी से बाँधा अपनी कभी न खत्म होने वाली केक में से कुछ केक खायी और सिद्दी को अपने कमर पर लाद कर चल दिया।

सिद्दी फिर बोला — "रास्ता लम्बा है तो समय गुजारने के लिये या तो मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ और या फिर तुम मुझे एक कहानी सुना दो। अगर तुम मुझे कहानी नहीं सुनाना चाहते तो अपना सिर ना में हिला कर मुझे बता दो तो फिर मैं तुम्हें कहानी सुना देता हूँ।"

---

[123] The Man and His Wife (Tale No 5-10) – a folktale from Kalmuk Tartar, Asia.

[124] Translated for the words "Cold Forest of Death".

चान के बेटे ने बिना कुछ बोले ना में अपना सिर हिला दिया तो सिद्दी कुर ने एक बार फिर अपनी कहानी कहनी शुरू की —

"बहुत बहुत साल पहले की बात है कि ओलमिलसौंग राज्य[125] में दो भाई रहते थे। उन दोनों की शादी हो गयी थी। बड़ा भाई और उसकी पत्नी बहुत ही ईर्ष्या वाले स्वभाव के लोग थे जबकि उनका छोटा भाई उनसे बिल्कुल उलटा था।

एक बार की बात है कि बड़ा भाई जो बहुत सारा पैसा इकट्ठा करना चाहता था उसने एक दावत का इन्तजाम किया और उस दावत में खाने के लिये बहुत सारे लोगों को बुलाया।

जब उसके छोटे भाई को इस बात का पता चला तो उसने सोचा कि हालाँकि उसने मुझसे ठीक से बरताव नहीं किया है तभी भी वह मुझसे अब ठीक से बरताव करेगा। क्योंकि उसने इतने सारे लोगों को अपने यहाँ दावत में बुलाया है तो उसको मुझे और मेरी पत्नी को भी बुलाना चाहिये था परन्तु उसने मुझे नहीं बुलाया।

उसने सोचा कि शायद मेरा भाई मुझे ब्रैन्डी[126] पीने के लिये कल सुबह बुलायेगा पर जब वह उसके लिये भी नहीं बुलाया गया तो उसको बहुत दुख हुआ। उसने सोचा कि उस रात जब मेरे भाई और भाभी ने ब्रैन्डी पी ली होगी तो मैं उसमें से कुछ चुरा लाऊँगा।

---

[125] Olmilsong Kingdom

[126] Brandy is a mild liqor

जब वह अपने भाई के कमरे में घुसा तो वहाँ वह अपनी पत्नी के साथ सो रहा था। पर जैसे ही यह अन्दर घुसा कि भाई की पत्नी उठ गयी और उठ कर रसोईघर में गयी। वहाँ उसने कुछ माँस पकाया और कुछ मीठा पकाया और उनको ले कर बाहर चली गयी।

छोटे भाई ने इस समय वहाँ से कुछ भी चुराने का विचार छोड़ दिया और सोचने लगा कि "इससे पहले कि मैं यहाँ से कुछ चुराऊँ मैं देखता हूँ कि इस सबका मतलब क्या है। यह कहाँ गयी है।"

वह उस स्त्री के पीछे पीछे बाहर चला गया। उसके पीछे चलते चलते वह एक पहाड़ पर पहुँच गया जहाँ मरे हुए लोगों को दफ़नाते थे। वहाँ एक हरे ढेर के ऊपर एक लाश के ऊपर एक बहुत ही सुन्दर सजा हुआ मकबरा बना हुआ था। असल में यह आदमी उस स्त्री का पुराना प्रेमी रह चुका था।

जब वह उससे कुछ दूरी पर ही थी तो उसने उसका नाम ले कर पुकारा और जब वह उसके पास आ गयी तो उसने उसके गले में बाँहें डाल दीं। और क्योंकि छोटा भाई पास में खड़ा था तो उसने वह सब देखा जो वहाँ हुआ।

बाद में स्त्री ने मरे हुए आदमी को मीठा खाना दिया जो उसने उसके लिये बनाया था क्योंकि लाश के दाँत नहीं खोले जा सके सो उसने उनको एक कैंची से अलग अलग किये और खाना उसके मुँह में ठूँस दिया।

अचानक ही वह कैंची पलट कर उस स्त्री की तरफ घूमी और उसने स्त्री की नाक का अगला हिस्सा काट लिया। उसी समय लाश के दाँत भी बन्द हो गये और उन्होंने स्त्री की जीभ का अगला हिस्सा काट लिया।

इसके बाद स्त्री ने अपना बरतन लिया और वापस घर चली गयी। छोटे भाई ने उसका घर तक पीछा किया और वापस आ कर उसी कमरे में छिप गया जहाँ उसका भाई सो रहा था। भाई की पत्नी भी वहाँ आ गयी और अपनी जगह आ कर लेट गयी।

उसके कुछ समय बाद वह आदमी यानी उसका बड़ा भाई हिला तो उसकी पत्नी चिल्लायी — "उफ़ कितने दुख की बात है। ऐसा कभी कहीं किसी ने देखा है?"

आदमी बोला — "अब क्या हुआ?"

पत्नी बोली — "तुमने मेरी जीभ का आगे का हिस्सा और नाक का अगला हिस्सा काट लिया। कोई स्त्री इन दोनों के बिना क्या कर सकती है। कल मैं जा कर चान को यह मामला बताती हूँ।"

यह सुन कर छोटा भाई वहाँ से बिना कुछ चुराये हुए ही वापस अपने घर भाग गया।

अगली सुबह स्त्री चान के पास गयी और उससे कहा — "कल की रात मेरे पति ने ने मेरे साथ बड़ा शर्मनाक व्यवहार किया है। आप उसे जो चाहें सजा दें। मैं खुद देखूँगी कि वह अपने इस बुरे काम की सजा भुगत रहा है।"

पर बेचारा पति यही कहता रहा कि मैं इस बारे में कुछ नहीं जानता। पर पत्नी की शिकायत क्योंकि ठीक थी इसलिये आदमी अपने बचाव में कुछ नहीं कह सका।

चान ने हुकुम दिया कि क्योंकि इसने इतना बुरा काम किया है तो इसको जला दिया जाये।

जब छोटे भाई ने वह सुना जो उसके भाई पर गुजर रही थी तो वह उससे मिलने गया और जा कर उसको रात का सारा हाल बताया।

इसको सुनाने के बाद वह चान के पास गया और उससे कहा कि असली अपराधी तो अभी भी ढूँढा जा सकता है। आप आदमी और उसकी पत्नी को यहाँ बुलवाइये मैं इसका सारा भेद खोलता हूँ।

सो उन दोनों को चान के सामने बुलवाया गया और तब छोटे भाई ने उसको अपने बड़े भाई की पत्नी का मुर्दे के पास जाने का पूरा हाल बताया।

पर चान उसकी बात का विश्वास ही न करे तो छोटे भाई ने कहा कि वे उस मुर्दे के मुँह में पत्नी की जीभ का कटा हुआ अगला हिस्सा देख सकते हैं और उसकी कटी नाक का हिस्सा आपको मिट्टी से सनी हुई पीतल की कैंची में लगा मिल जायेगा। उनको यहाँ मँगवाइये और फिर देखिये कि वे चीज़ें आपको मिलती हैं या नहीं।

चान ने अपने कुछ आदमी वहाँ भेजे तो वे चीज़ें उनको वहाँ मिल गयीं जहाँ उस आदमी के छोटे भाई ने उनको बतायी थीं।

चान बोला — "अब क्योंकि मामला ऐसा हो गया है तो इस स्त्री को लकड़ी के ढेर पर रख कर उस ढेर में आग लगा दो।"

और स्त्री को लकड़ी के ढेर पर रख कर उसमें आग लगा दी गयी।"

यह सुन कर चान के बेटे के मुँह से निकला — "यह स्त्री इसी काबिल थी।"

यह कहानी सुना कर सिद्दी बोला — "ओ किस्मत बनाने वाले तुम तो फिर बोल पड़े।" कह कर वह उसका थैला फाड़ कर फिर से बाहर निकल कर भाग गया और जा कर अमीरी पेड़ पर बैठ गया।

सो यह थी सिद्दी कुर की दसवीं कहानी
"एक आदमी और उसकी पत्नी"

5–11 एक लड़की सुवरन्दरी[127]

सो इस तरह इस बार भी सिद्दी कुर चान के बेटे का थैला फाड़ कर भाग गया। सिद्दी कुर के थैला फाड़ कर भाग जाने के बाद चान का बेटा उसे लाने के लिये फिर से मौत के ठंडे जंगल[128] की ओर चला और फिर अमीरी पेड़ के नीचे पहुँच गया और एक बार फिर उसको धमकी दी — "ओ लाश। या तो तुम इस पर से नीचे उतरो या फिर मैं तुम्हारा यह पेड़ काट दूँगा।"

सिद्दी कुर उसकी धमकी से डर कर पेड़ पर से उतर कर नीचे आ गया और उसके थैले में आ कर बन्द हो गया। चान के बेटे ने भी उस थैले के मुँह को रस्सी से बाँधा अपनी कभी न खत्म होने वाली केक में से कुछ केक खायी और सिद्दी कुर को अपने कमर पर लाद कर चल दिया।

सिद्दी कुर फिर बोला — "रास्ता लम्बा है तो समय गुजारने के लिये या तो मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ और या फिर तुम मुझे एक कहानी सुना दो। अगर तुम मुझे कहानी नहीं सुनाना चाहते तो अपना सिर ना में हिला कर मुझे बता दो तो फिर मैं तुम्हें कहानी सुना देता हूँ।"

---

[127] Of the Maiden Ssuwarandari (Tale No 5-11) – a folktale from Kalmuk Tartar, Asia.

[128] Translated for the words "Cold Forest of Death".

चान के बेटे ने बिना कुछ बोले ना में अपना सिर हिला दिया तो सिद्दी ने एक बार फिर अपनी कहानी कहनी शुरू की —

"बहुत दिन पहले की बात है कि एक राज्य के बीच में एक पुराना पगोडा खड़ा हुआ था। उसमें कोश्चिम बोधिसाधो[129] की मिट्टी की एक मूर्ति खड़ी हुई थी।

उस पगोडा के पास ही एक छोटा सा घर था जिसमें एक बहुत सुन्दर लड़की अपने बूढ़े माता पिता के साथ रहती थी। वहीं पास में ही एक नदी बहती थी जिसके मुँहाने के पास एक गरीब आदमी रहता था जो फल बेच कर अपना गुजारा करता था। ये फल वह एक नाव में रख कर नदी के सहारे लाया करता था।

एक बार ऐसा हुआ कि वह अपने घर लौट रहा था कि उसको पगोडा के पास रुकना पड़ा। जिस मकान में वे दोनों बूढ़े रहते थे उसके दरवाजे में से उसने सुना।

बुढ़िया अपने पति से कह रही थी — "हम लोग अब बहुत बूढ़े हो गये हैं। क्या यह ठीक नहीं होगा कि हम अपनी बेटी की शादी कर दें।"

बूढ़ा बोला — "हम लोग बहुत दिनों तक एक साथ खुशी खुशी रहे हैं। अब हमें अपनी बेटी का तलिस्मान करा देना चाहिये। कल

---

[129] Choschim Bodissadoh – a Mongolian idol

हम लोग बोधिसाधो की पूजा करेंगे और पता करेंगे कि हमको उसके लिये क्या करना चाहिये – इस दुनियाँ के लिये भी और आध्यात्मिक दुनियाँ के लिये भी। कल सुबह सवेरे ही हम लोग बुरचन[130] की पूजा करेंगे।"

गरीब आदमी ने जो यह सब सुन रहा था मन में सोचा "अब मुझे पता चल गया कि अब मुझे क्या करना है।" सो रात को वह पगोडा गया। मूर्ति की पीठ में एक झिरी बनायी और उसके अन्दर जा कर बैठ गया।

अगले दिन जब दोनों बूढ़े वहाँ आये उन्होंने अपना चढ़ावा उस मूर्ति के सामने रखा और बूढ़े ने जमीन तक सिर झुका कर उसको प्रणाम किया और बोला — "ओ बोधिसाधो इस लड़की को अपनी ज़िन्दगी को दुनियाँ के ढंग से बिताना चाहिये या फिर आध्यात्म में लगा देना चाहिये।

अगर उसको दुनियाँ की तरह अपनी ज़िन्दगी बितानी है तो आप हमें अभी या बाद में बताऐं सपने में बताऐं या फिर दर्शन दे कर बताऐं कि हम उसकी शादी किसके साथ करें।"

यह सुन कर फल बेचने वाला जो मूर्ति के अन्दर छिपा हुआ था बोला — "वह ज़्यादा अच्छा रहेगा यदि तुम इसकी शादी कर दो। इसलिये तुम इसकी उसी के साथ शादी कर दो जो सुबह को सबसे पहले तुम्हारे दरवाजे पर आये।"

---

[130] Burchan

बूढ़ा और बुढ़िया यह सुन कर बहुत खुश हुए और उन्होंने उनको जमीन तक बार बार झुक कर प्रणाम किया। उन्होंने मूर्ति की कई बार परिक्रमा भी लगायी और फिर अपने घर चले गये।

अगले दिन फल बेचने वाला सुबह सुबह मूर्ति से बाहर निकला और जा कर उन बूढ़े बुढ़िया के घर का दरवाजा खटखटाया। बुढ़िया बाहर आयी और जब उसने देखा कि बाहर तो एक आदमी खड़ा है तो वह घर में लौटी और अपने पति से बोली — "सुनिये जी बुरचन ने जो कहा था वह तो सच निकला। आदमी तो बाहर खड़ा है।"

बूढ़ा बोला — "ठीक है तुम उसको अन्दर बुलाओ।"

उस आदमी को घर के अन्दर बुला लिया गया। खाने पीने से उसकी खातिरदारी की गयी। उन्होंने उसको यह भी बताया कि मूर्ति ने उससे क्या कहा था तो इसने लड़की के साथ साथ तलिस्मान को भी ले लिया और उसको ले कर चल दिया।

जब वह रास्ते में चला जा रहा था तो उसने सोचा "मैंने अपनी चालाकी से इस बूढ़े जोड़े की बेटी को ले तो लिया अब मैं इसको अपनी नाव में बिठाऊँगा और रेत में कहीं छिपा दूँगा।"

सो उसने अपनी नाव को तो रेत में छिपा दिया और जा कर लोगों से बोला — "हालाँकि मैंने बहुत अच्छा ऐक्टिंग किया है फिर भी मेरा काम अभी पूरा नहीं हुआ है। अब मैं अपनी पूजा से और बहुत सारी चीज़ें हासिल करूँगा।"

यह कह कर उसने अपनी ज़ोका की प्रार्थना[131] की और उससे खाना और बहुत सारी चीज़ें लीं। फिर वह बोला — “कल मैं फिर से इधर उधर घूमूँगा। ज़ोका की प्रार्थना करूँगा और फिर से खाना ढूँढूँगा।”

इस बीच कुछ ऐसा हुआ कि चान का बेटा अपने दो साथियों के साथ अपने हाथों में तीर कमान लिये जा रहा था। वे तीनों एक चीते का पीछा कर रहे थे। पीछा करते करते वे अनजाने में वहॉ से गुजरे तो सुवरन्दरी के रेत के ढेर के पास जा पहुँचे तो उनमें से एक बोला “चलो इस ढेर में एक तीर मार कर देखते हैं।”

सो उन्होंने अपने अपने तीर उस ढेर में मारे। फिर वे अपने अपने तीर पर उसमें से निकालने गये तो उनको वे वहॉ मिले नहीं। उनके तीर उस ढेर में खो गये थे।

पर उनको उस रेत के ढेर में एक नाव मिल गयी। उन्होंने उस नाव को लड़की और तलिस्मान सहित रेत के ढेर से बाहर निकाल लिया।

उन्होंने उससे पूछा — “लड़की तुम कौन हो?”

लड़की बोली — “मैं लू[132] की बेटी हूँ।”

चान का बेटा बोला — “आओ मेरे साथ आओ और मेरी पत्नी बन जाओ।”

---

[131] Zoka prayers – a part of of the Calmuc ritual

[132] Lu – name of the father of the girl

लड़की बोली — “इस तरह से मैं यहाँ से नहीं जा सकती जब तक कि इस नाव में कोई दूसरा मेरी जगह न ले ले।”

सबने कहा “तो इसकी बजाय हम यहाँ चीता रख देते हैं।”

और जब चीता उस नाव में रख दिया गया तो चान के बेटे ने उस लड़की को उसके तलिस्मान के साथ अपने साथ ले लिया।

इस बीच भिखारी ने अपनी प्रार्थना खत्म की और सोचा “अगर मैं लड़की का तलिस्मान ले लूँ और लड़की को मार दूँ और फिर मैं उसका तलिस्मान बेच दूँ तो मैं बहुत अमीर हो जाऊँगा।”

यह सोच कर वह रेत के ढेर के पास गया रेत में से नाव निकाली और उसको अपने घर ले गया। उसने सोचा कि उसकी पत्नी अभी भी उस नाव के अन्दर है सो वह वहाँ जा कर अपनी पत्नी से बोला — “मैं रात भर ज़ोका की पूजा करूँगा।”

कह कर उसने अपना ऊपर पहनने वाला कपड़ा निकाल दिया और फिर नाव का ढक्कन उठाया और बोला — “ओ लड़की घबराने की जरूरत नहीं है।” पर वहाँ तो कोई लड़की नहीं थी बल्कि एक चीता था।

अगली सुबह जब कुछ लोग उस नाव में गये तो उन्होंने चीते के दाँतों और पंजों पर खून लगा पाया और भिखारी का शरीर चीर फाड़ किया हुआ पाया।

उधर चान की पत्नी ने तीन बेटों को जन्म दिया और बहुत अमीरी में रही।

पर चान के मन्त्रियों ने कहा कि यह बात ठीक नहीं है कि चान अपनी पत्नी को जमीन में से कहीं से निकाल कर लायें। हालाँकि चान की पत्नी ने चान के बेटों को जन्म दिया है फिर भी है तो वह एक नीच जाति में पैदा हुई।

जब चान के मन्त्रियों ने ऐसा कहा तो उसके बाद से चान की पत्नी बहुत दुखी हो गयी। उसने कहा "मैंने तीन बेटों को जन्म दिया है फिर भी मेरी कोई कद्र नहीं है। तो मैं अब अपने पिता के घर चली जाऊँगी।"

पूनम की रात[133] को उसने महल छोड़ दिया। दोपहर तक वह अपने माता पिता के पड़ोस में आ गयी। पहले वहाँ पर कुछ भी नहीं था पर अब उसने देखा कि वहाँ बहुत सारे मजदूर काम कर रहे थे और एक आदमी उनके खाने पीने का इन्तजाम कर रहा था।

उस आदमी ने लड़की से पूछा — "मैम आप कौन हैं?"

लड़की बोली — "अभी तो मैं यहाँ बहुत दूर से आयी हूँ पर मेरे माता पिता पहले इस पहाड़ पर रहते थे। मैं उनसे मिलने आयी हूँ।"

वह नौजवान बोला — "तो आप उनकी बेटी हैं।"

"जी हाँ मैं उनकी बेटी हूँ।"

नौजवान बोला — "मैं उनका बेटा हूँ। काफी दिन पहले मुझे बताया गया था कि मेरे एक बड़ी बहिन है। क्या आप वही हैं।

---

[133] Full Moon night

आप यहाँ बैठिये और हमारे साथ खाना खाइये। खाना खाने के बाद हम दोनों एक साथ उनके पास चलेंगे।"

जब चान की पत्नी उस पहाड़ की चोटी पर आयी थी तो उसने देखा कि उसके पड़ोस में जो पुराना पगोडा खड़ा था उसकी जगह अब वहाँ बहुत सारी शानदार इमारतें खड़ी थीं जिनकी सुनहरी मीनारें थी और उनमें सोने के घंटे लगे हुए थे। उसके माता पिता की झोंपड़ी अब एक आलीशान घर में बदल गयी थी।

उसके भाई ने कहा कि जबसे आप गयी हैं तबसे हमारे माता पिता तन्दुरुस्त और शान्ति से रहते हैं।

उस महल में बहुत सारे घोड़े थे खच्चर थे बहुत सारा कीमती फर्नीचर था। माता पिता सिल्क के बढ़िया गद्दों पर बैठे हुए थे। उन्होंने अपनी बेटी का स्वागत किया — "तुम अभी तक खुश और तन्दुरुस्त हो कि तुम हमारे मरने से पहले ही हमसे यहाँ मिलने आयी हो।"

इसके बाद जबसे वे लोग एक दूसरे से बिछड़े थे उस समय से अब तक के बारे में दोनों में एक दूसरे के बारे में बहुत सारी बातें हुईं। माता पिता बोले — "चलो अब ये सब बातें हम लोग चान और उसके मन्त्रियों को बता देते हैं।"

सो चान और उसके मन्त्रियों के लिये बहुत सारी भेंटें तैयार की गयीं और उसके बाद उनको घर में खाने के लिये बुलाया गया जिसमें उनके लिये सबसे अच्छा खाना बनवाया गया था।

पर चान बोला — "तुम लोग झूठ बोल रहे हो। मेरी पत्नी के तो कोई माता पिता ही नहीं हैं।"

यह कह कर चान अपने साथियों के साथ वापस चला गया। जाते समय उसकी पत्नी ने कहा कि "मैं एक रात अपने माता पिता के पास और रहूँगी फिर मैं तुम्हारे पास लौट कर आती हूँ।"

अगली सुबह चान की पत्नी जब उठी तो उसने अपने आपको एक तख्त पर सोता हुआ पाया जिस पर न कोई तकिया था न ही कोई चादर थी। उसके मुँह से निकला "अरे यह क्या। क्या मैं रात को रेशमी बिस्तर पर नहीं सोयी थी?"

कह कर वह उठी तो उसने देखा कि उसके माता पिता की झोंपड़ी तो वहाँ टूटी फूटी पड़ी थी। उसके माता पिता तो मर गये थे। उनकी तो हड्डियों तक का चूरा चूरा हो गया था। उनके सिर पत्थरों पर पड़े हुए थे।

यह देख कर वह बहुत ज़ोर से रो पड़ी। रोते रोते वह बोली "अब इस पगोडा की देखभाल मैं करूँगी।" पर उसने देखा कि पगोडा और बुरचन भी खंडहर हुए पड़े हैं।

वह बोली — "भगवान की इच्छा से मेरे माता पिता चले गये तो अब चान सन्तुष्ट हो गया होगा। अब मैं चान के घर वापस जा सकती हूँ।"

सो वह अपने पति के राज्य वापस चली गयी। जब वह वहाँ पहुँची तो बहुत सारे लोग उससे मिलने आये और उसके चारों तरफ

घूमते रहे। फिर वे बोले — “अरे यह तो चान की पत्नी है और यह तो कुलीन परिवार की बेटी है। इसने तो कुलीन बेटों को जन्म दिया है। यह तो खुद भी बहुत सुन्दर और आकर्षक है।”

ऐसा कहते हुए वे उसको चान के महल में ले गये।”

यह सुन कर चान के बेटे के मुँह से निकला — “यह कोई बहुत ही गुणी लड़की रही होगी।”

यह कहानी सुना कर सिद्दी कुर बोला — “ओ किस्मत बनाने वाले तुम तो फिर बोल पड़े।” कह कर वह उसका थैला फाड़ कर फिर से बाहर निकल कर भाग गया और जा कर अमीरी पेड़ पर बैठ गया।

सो यह थी सिद्दी कुर की ग्यारहवीं कहानी
“एक लड़की सुवरन्दरी ”[134]

[134] Here what happened to that wandering peaceful boy after hearing this story from Ssidi Kur is not known.

6 दो बिल्लियाँ[135]

पुराने समय में एक बुढ़िया रहती थी जो केवल अपनी झोंपड़ी में ही ज़्यादा रहती थी। उसकी वह झोंपड़ी अनपढ़ गॅवार के दिमाग से भी ज़्यादा अकेली थी और कंजूस लोगों के मकबरों से भी ज़्यादा ऑधेरी थी।

उसकी साथी केवल एक बिल्ली थी जिसकी शक्ल से ऐसा लगता था कि उसने कभी रोटी की झलक भी नहीं देखी थी और न ही अपने किसी दोस्त या अजनबी से उसका नाम ही सुना था।

उसके लिये बस इतना ही काफी था कि या तो कभी कभी उसको किसी चूहे की खुशबू आ जाती थी या फिर उसको फर्श पर उसके पंजों के निशान दिखायी दे जाते थे। या फिर जब उसके सितारे कुछ ठीक होते तो कोई चूहा उसके पंजों में पकड़ा जाता।

उस समय वह एक ऐसी भिखारिन हो जाती जैसे किसी को सोना मिल गया हो। उसके गाल चमकने लगते और उसके पुराने दुख खत्म हो कर नयी खुशी में बदल जाते।

उसकी यह दावत एक हफ्ता या उससे कुछ ज़्यादा दिन चलती। इस बीच वह कहती जब मेरा यह खत्म हो जायेगा तो क्या यह सच होगा या सपना। क्या मुझे यह अमीरी फिर कभी और मिल पायेगी।

---

135 The Two Cats (Tale No 6) – a folktale from Arabia, Asia.

पर क्योंकि बुढ़िया का महल उसके लिये तो अकाल घर था वह हमेशा ही शिकायत करती रहती और कुछ कुछ सुनहरे सपने देखती रहती।

एक दिन जब वह कुछ बहुत ही ज़्यादा गरीबी में थी तो ज़ोर लगा कर वह झोंपड़ी की चोटी पर जा पहुँची। वहाँ जा कर उसने देखा कि एक भयानक बिल्ली पड़ोसी की दीवार पर चढ़ रही है।

उसने यह भी देखा कि वह एक भयानक चीते की तरह से नाप तौल कर कदम रख रही है। उसके ऊपर तो इतना माँस चढ़ा था जिससे उसकी तो टाँग ही ऊपर नहीं उठ पा रही थी।

बुढ़िया की दोस्त ने यह भी देखा कि उसी की जाति का यह जानवर कितना मोटा और तन्दुरुस्त है।

वह बोली — "तुम्हारी शाही चाल आखिर तुमको यहाँ तक ले ही आयी। कहाँ से आ रही हो तुम। इतनी अच्छी शक्ल सूरत ले कर तुम यहाँ कहाँ से आयी हो।

तुमको देख कर तो ऐसा लग रहा है जैसे कि तुम खताई के खान[136] की दावत में से चली आ रही हो। तुम इतनी सुन्दर कहाँ से हो गयीं। और तुम्हारे अन्दर यह शान वाली ताकत भी कहाँ से आ गयी।"

---

[136] Khan of Khatai

दूसरी बिल्ली बोली — "मैं सुलतान के टुकड़ों पर पलने वाली हूँ। हर सुबह जब उनकी बहुत बड़ी मेज सजती है तो मैं महल में बड़ी हिम्मत के साथ जाती हूँ।

वहाँ अच्छा माँस और गेहूँ की केक में से जो कुछ भी मुझे अच्छा लगता है मैं उसमें से थोड़ा सा खाती हूँ। उसके बाद मैं वहाँ से चली जाती हूँ और आराम करती हूँ अगले दिन तक के लिये जब तक दूसरी सुबह मेज लगती है।"

बुढ़िया की बिल्ली ने उससे जानने की कोशिश की कि अच्छा माँस क्या होता है और गेहूँ के केक का स्वाद कैसा होता है। वह आगे दुखी स्वर में बोली — "जहाँ तक मेरा सवाल है मैंने तो ऐसी कोई चीज़ न देखी है न खायी है। मैंने तो अब तक बुढ़िया का केवल पतला सा खाना खाया है या फिर पतली सी चुहिया का माँस खाया है।"

दूसरी बिल्ली हँस कर बोली — "यह तो चिन्ता की बात है। मैं तो तुम्हें किसी मकड़े से ज़्यादा अलग नहीं कर पा रही हूँ। तुम्हारी शक्ल और बनावट तो ऐसी है कि सारी बिल्ली जाति को शरम आ जाये। अगर तुम ऐसी शक्ल और बनावट ले कर विदेश जाओगी तो हमको तो हमेशा ही शरम आनी चाहिये।

तुम्हारे पास बिल्ली जैसे कान और पूँछ तो है पर दूसरे मामलों में तुम मकड़े जैसी ही हो। अगर तुम सुलतान का महल देख लो उसके स्वाददार खाने की खुशबू भी सूँघ लो टूटी फूटी हड्डियाँ भी खा लो

तो तुम्हारी शक्ल निखर आये। तुमको नयी ज़िन्दगी मिल जाये। तुम जो अभी अदृश्य सी रहती हो फिर लोग तुम्हीं को देखने लगेंगे। "जब प्रेमिका की खुशबू प्रेमी के मकबरे के ऊपर से गुजरती है तो उसकी सूखी हुई हड्डियों में भी जान पड़ जाती है।"

यह सुन कर बुढ़िया की बिल्ली ने दूसरी बिल्ली से बड़ी नम्रता से कहा — "बहिन क्या पड़ोसी होने के नाते मेरा तुम्हारे ऊपर कोई अधिकार नहीं है? क्या हम लोग प्यार के बन्धन में नहीं बॅधे हुए? तुमको अपनी दोस्ती का सबूत देने के लिये क्या चाहिये? केवल यही कि बस एक दिन जब तुम सुलतान के महल जाओ तो मुझे भी साथ लेती जाओ।

हो सकता है तुम्हारी थोड़ी सी कृपा से मुझे बहुत ज़्यादा मिल जाये और तुम्हारे साथ रहने से मेरी इज़्ज़त भी बढ़ जाये। "किसी इज़्ज़तदार आदमी की दोस्ती से कभी हाथ मत खींचो और किसी चुने हुए आदमी की सहायता को मत छोड़ो।"

यह सब सुन कर सुलतान के महल का खाना खाने वाली ब्लिली का दिल भर आया और उसने वायदा किया कि वह अगली बार जब भी सुलतान के महल में जायेगी उसको भी साथ ले जायेगी।

बुढ़िया की बिल्ली तुरन्त ही नीचे भाग गयी और जा कर बुढ़िया को सब कुछ बताया तो बुढ़िया ने उसको सलाह दी — "मेरी प्यारी दोस्त देखो इस दुनियावी भाषा से जो तुमने सुनी है कोई धोखा नहीं खा जाना। अपना सन्तुष्टि का कोना नहीं छोड़ना।

लालची आदमी का प्याला हमेशा कब्र की धूल से ढका रहता है। इच्छा और आशाओं की ऑख मौत की सुई और किस्मत के धागे से कभी भी बन्द की जा सकती है।[137]

वह केवल सन्तोष है जो लोगों को धनी बनाता है। ओ लालची इस बात का ध्यान रखना जो दुनियॉ घूमता है जो अपनी किस्मत और हालत से असन्तुष्ट है वह न तो अपने भगवान की बड़ाई करता है और न उसको बड़ाई देता है।"

लेकिन दावत का रंगीन सपना उस बेचारी बिल्ली के दिमाग में इतनी मजबूती से बैठा हुआ था कि वह उसके आगे कुछ और सोच ही नहीं पा रही थी। बुढ़िया की दवा जैसी सलाह को उसने एक तरफ उठा कर रख दिया था।

सारी दुनियॉ की अच्छी सलाह एक ऐसी हवा की तरह है जो एक पिंजरे में बन्द है या फिर चलनी के उस पानी की तरह है जो उसमें रुकता ही नहीं जब वह किसी खरदिमाग को दी जाती है।

सो अगले दिन बुढ़िया की भूखी बिल्ली अपनी साथिन के साथ सुलतान के महल गयी। जैसा कि उसकी किस्मत में लिखा था कि लालची आदमी को निराशा होती है। इससे पहले कि यह बदकिस्मत वहॉ आती कि अपनी बदकिस्मती की वजह से उसकी बचपने की ऊॅची इच्छाओं पर पाला पड़ गया।

---

[137] Abandon not your corner of content, for the cup of the covetous is only to be filled by the dust of the grave, and the eye of cupidity and hope can only be closed by the needle of mortality and the thread of fate.

हुआ यह कि उससे पहले दिन बहुत सारी बिल्लियॉ दावत में आयी हुई थीं और उन्होंने आ कर इतना शोर मचाया कि शाही मेहमानों को बहुत तंग लिया।

सो गुस्सा हो कर सुलतान ने अपने टारटरी[138] के कुछ तीर कमान वालों को हुकुम दिया कि जो कोई बिल्ली उसके आसपास फी फटकने की हिम्मत करे या फिर पहला कौर खाने की कोशिश करे उसे तीर मार दिया जाये।

बुढ़िया की बिल्ली को इस बात का पता नहीं था सो जैसे ही खाने की खुशबू उसके पास पहुॅची वह चील की तरह से उड़ कर खाने की जगह जा पहुॅची। जैसे ही उसने एक कौर अपने मुॅह में रखा वैसे ही उसकी छाती में एक तीर आ कर घुस गया।

तुरन्त है वहॉ से खून की एक धार निकल पड़ी। वह मरने के डर से वहॉ से यह कहती हुई भागी "अगर मैं इस तीर कमान वाले से बच गयी तो मैं अपने चूहे और अपनी मालकिन की उस गन्दी सी छोटी सी झोंपड़ी से ही सन्तुष्ट रहूॅगी।

मुझे आदमी का वह शहद नहीं चाहिये जो मुझे काटे जाने के साथ मिले। शान्ति के साथ सन्तुष्टि ज़्यादा अच्छी है।

[138] Tartary – name of the place

7 धरमनाथ की कहानी[139]

यह तब की बात है जब एक बहुत ही ताकतवर राजा राजा गुद्दे सिंह राज्य करते थे। आजकल के हिसाब से वह एक बहुत ही अच्छा राजा समझे जाते थे। उन्हीं के जमाने में धरमनाथ नाम का एक पुजारी उनके राज्य में आया।

अपने हैसियत के गुणों के अनुसार ही उसने मांडवी के पास रन[140] में बने राजा के महल से कुछ दूरी पर अपने लिये एक छोटी सी सादी सी झोंपड़ी बनायी। उसके साथ उसका गोद लिया हुआ बेटा भी था जिसका नाम था गरीब नाथ।[141]

अपने घर से धरमनाथ अपने बेटे गरीब नाथ को शहर के लोगों से दान मॉगने के लिये भेजता था पर गरीब नाथ ने वहॉ के कई चक्कर लगाये पर किसी ने उसको कुछ नहीं दिया।

पर साथ में वह यह भी नहीं चाहता था कि उसका पिता यह जाने कि शहर में सामान की कितनी कमी थी सो हर बार जब भी वह वहॉ जाता था तो अपने बचाये हुए पैसों से कुछ खाना खरीद लेता था।

---

[139] Legend of Dhurrumnath (Tale No 7) – a folktale from India, Asia.
[My Note: The places which have been mentioned in this tale are in India in its Gujrat State, and the names are also Indian so it seems this story is from India.]
[140] Raja's residence at Runn (Runn of Kutchh) near Mandavi – in Gujrat
[141] Ghurreeb Nath was the son of the Priest Dhurrumnath

पर आखिर उसकी वह थोड़ी सी बचत कब तक चलती। छठे दिन उसको अपने पिता को बताना ही पड़ा कि वह उनको धोखा देता रहा है।

जब धरमनाथ को यह पता चला तो वह बहुत दुखी हुआ। उसने उस दिन उसने यह बद्‌दुआ दी कि राजा के सारे शहर खाली हो जायें और उजाड़ हो जायें। लोगों का कहना है कि कुछ ही दिनों में राजा के सारे शहर नष्ट भ्रष्ट हो गये।

धरमनाथ ने अपने बेटे को साथ लिया और वहॉ से देनोदूर[142] चला गया। वहॉ उसको एक जगह अच्छी लगी तो वहॉ उसने 12 साल के लिये तपस्या करनी चाही। उसने यह तप सिर पर खड़ा रह कर करने का सोचा।

जब उसने इस काम को करने का पक्का इरादा कर लिया तो उसने अपने बेटे को तो वहॉ से भेज दिया और खुद उस जंगल में अपने लिये वहॉ धूनी रमा ली। यह जगह भूॅज[143] से करीब 20 मील उत्तर पश्चिम दिशा में थी।

बारह साल तक तपस्वी रहने के बाद बहुत सारे देवदूत[144] धरमनाथ से मिलने के लिये आये।

उन्होंने उसको उठाने की कोशिश की तो वह बोला कि “अगर मैं उठ गया तो देश का वह हिस्सा जिस पर भी उसकी नजर सबसे

---

142 Denodur hill

143 In the book it is spelt as “Bhooj” but its spelling is “Bhoonj” or it may be modern Bhuj.

144 Translated for the word “Angels”

पहले पड़ेगी वह बंजर हो जायेगा। अगर वे गॉव होंगे तो वे वहॉ से गायब हो जायेंगे। अगर वे जंगल या खेत होंगे तो वे भी सब नष्ट हो जायेंगे।

तब उन देवदूतों ने उसको अपना सिर उत्तर पूर्व की तरफ करने के लिये कहा जिधर समुद्र था।

तब पुजारी जी अपनी पहली वाली स्थिति में आ गये और उनसे जिस दिशा में उनका चेहरा करने के लिये कहा गया जब उन्होंने उधर की तरफ को अपना चेहरा करके अपनी ऑखें खोलीं तो वहॉ से समुद्र ही चला गया और जो शाही जहाज़ वहॉ खड़े थे वे सब टूट फूट गये।

उनका सारा स्टाफ़ मारा गया और बस वहॉ बंजर जमीन का एक बड़ा से टुकड़ा पड़ा रह गया – खूब बड़ा सा रेगिस्तान जिसे आज रन कहते हैं।

अब धरमनाथ तो इतना ज़्यादा पवित्र हो चुका था कि उसका धरती पर रहना मुश्किल था सो वह तुरन्त ही अमर हो गया और दुनियॉ बनाने वाले उसे चलाने वाले और उसका नाश करने वाले ब्रह्म के रूप में समा गया।

अपने ऊपर अपने आप ही लादे हुए तपस्वी के तप ने देनोदूर पहाड़ी के चारों ओर तरफ रोशनी का एक दायरा[145] सा बना दिया। इससे वह किसी जोगी के पूरी तरह से रहने लायक जगह बन गयी।

---

145 Roshni Ka Ek Daayara is used for the word “Halo”

उन जोगियों की संख्या उतनी हो होगी जितने कि वहाँ बने हुए एक छोटे से मन्दिर में काम करने वालों की होगी।

यह मन्दिर अभी भी वहाँ है पहाड़ी की चोटी पर उसी जगह जहाँ धरमनाथ ने अपनी वह कठोर तपस्या की थी।

8 एक यात्री का कारनामा[146]

ऐसा कहा जाता है कि एक बार एक आदमी ऊँट पर चढ़ कर यात्रा करने निकला। यात्रा के दौरान वह एक ऐसी जगह आ पहुँचा जहाँ उसी कारवाँ के लोगों ने आगे बढ़ने से पहले आग जला रखी थी।

वहाँ पंखे जैसी हवा चल रही थी जिससे उस आग के अंगारे और जल रहे थे सो एक बार उससे एक लपट पैदा हो गयी। इससे चिनगारियाँ पैदा हो गयीं और वे जंगल की तरफ उड़ गयीं।

वहाँ कुछ सूखी लकड़ी पड़ी थीं वे चिनगारियाँ उनके ऊपर जा कर पड़ीं तो उनमें आग लग गयी। वह आग ऐसी दिखायी दे रही जैसे सारे मैदान में ट्यूलिप के फूल[147] खिल गये हों।

इस आग के बीच एक बहुत बड़ा साँप था जो आग की लपटों में घिरा पड़ा था। उसके वहाँ से बच कर भागने का कोई तरीका नहीं था। वह या तो मछली की तरह से भुन जाने वाला था या फिर तीतर की तरह से भुन कर मेज पर रखा जाने वाला हो रहा था कि उसकी आँखों से खून टपकने लगा।

---

[146] The Traveller's Adventure (Tale No 8) – a folktale from Arabia, Asia.

[147] Tulip flowers – see their picture above.

उसने देखा कि एक आदमी अपने ऊँट के साथ वहाँ रुका हुआ है तो उसने उससे प्रार्थना की — "क्या आप मेहरबानी करके मेरे ऊपर दया करेंगे। क्या आप मेरी वह गाँठ खोल देंगे जिससे कि मैं यहाँ बँधा हुआ हूँ।"

अब यह यात्री तो एक बहुत ही भला आदमी था और बहुत ही धार्मिक था। जब उसने साँप की शिकायत सुनी और उसकी इतनी खराब हालत देखी तो उसके दिमाग में आया कि "यह तो साँप है और यह तो आदमी का दुश्मन है पर क्योंकि इस समय यह परेशानी में है इसलिये मुझे इसकी सहायता करनी चाहिये। सहायता का फल तो हमेशा ही अच्छा होता है और उससे मुक्ति भी मिलती है।"

इस तरह विचार करके उसने एक थैला अपने भाले की नोक पर लटकाया और उसको साँप की तरफ बढ़ा दिया। साँप यह देख कर बहुत खुश हुआ कि अब वह इस आग से बच सकता है। जैसे ही थैला उसके पास तक आया तो वह उसके थैले में घुस गया। आदमी ने थैला वापस खींच लिया और वह आग से बच गया।

थैला बाहर खींच कर आदमी ने उसे थैले से बाहर निकाला और उससे कहा — "अब तुम जहाँ चाहो जा सकते हो पर अपने बचने के लिये भगवान को धन्यवाद देना मत भूलना। अब तुम जा कर आराम करो और आदमियों को तंग करना छोड़ दो क्योंकि जो ऐसा काम करते हैं वे बेईमान होते हैं। दूसरी बात – भगवान से डरो और किसी को कभी दुख मत पहुँचाओ यही असली मुक्ति है।"

साँप बोला — “ओ नौजवान भगवान तुम्हें शान्ति दे क्योंकि सच में मैं यहाँ से तब तक नहीं जाने वाला जब तक कि में तुम्हें और तुम्हारे इस ऊँट को काट न लूँ।”

आदमी चिल्लाया — “मगर ऐसा कैसे? क्या मैंने तुम्हारा कुछ भला नहीं किया? मेरी दया का ऐसा बदला क्यों? मैंने तो तुम्हारा भला करने की कोशिश की पर तुम मेरे साथ ऐसा अन्याय क्यों कर रहे हो?”

साँप बोला — “यह तो तुम ठीक कहते हो। तुमने मेरे ऊपर दया तो दिखायी है पर यह दया तुमने एक अयोग्य चीज़ पर दिखायी है। जब तुम जानते हो कि मैं लोगों को काटता हूँ तो इसके फलस्वरूप तुमको अपने आपको भी उसी नियम में रखना चाहिये था जिसमें एक योग्य आदमी को नुकसान पहुँचाने की सजा मिलती है।

इसके अलावा साँप और आदमी में बहुत पुरानी दुश्मनी है। और जो लोग आगे तक का देख पाते हैं उनके लिये अक्लमन्दी का नियम यही है कि वह दुश्मन के सिर पर वार करें।

अगर तुम्हें अपनी रक्षा करनी थी तो तुम्हें मुझे मर जाने देना चाहिये था पर मेरी तरफ दया दिखा कर तुमने अपनी सुरक्षा छोड़ दी। इसलिये अब यह जरूरी है कि मैं तुम्हें काट लूँ ताकि तुम्हारे साथ हुए इस काम को देख कर लोग तुमसे कुछ सीख लें।”

आदमी चिल्लाया — “ओ साँप तुम न्याय करने वालों की कोई भी टीम बुलालो और उनमें से किसी से भी पूछ कर मुझे बताओ कि

यह किसी भी धर्म की कौन सी किताब में लिखा है कि जिसने भी तुम्हारे साथ कोई अच्छाई की हो तुम उसके साथ बुरा करो। या ऐसा कहाँ होता है कि तुम अच्छाई का बदला बुराई से दो। या जिस किसी ने तुमको सुख दिया हो उसके बदले में तुम उसको दुख दो।"

सॉप बोला — "ऐसा आदमियों की दुनियाँ में होता है। मैं तो केवल तुम्हारे नियमों के ऊपर ही चल रहा हूँ। जो चीज़ मैंने तुमसे खरीदी है वही मैं तुम्हें बेच रहा हूँ। तुम एक पल के लिये वह चीज़ खरीद कर तो देखो जो तुम बरसों से बेच रहे हो।"

यात्री ने उसको समझाने की बहुत कोशिश की पर सॉप हमेशा यही कहता रहा — "मै तुम्हारे साथ उसी तरह से बरताव कर रहा हूँ जैसा कि तुम मेरे साथ करते हो।"

आदमी इस बात से इनकार करता रहा पर फिर बोला — "चलो ठीक है हम कुछ जजों को बुलाते हैं। अगर तुम अपनी बात साबित कर सके तो जैसा तुम कहोगे मैं वैसा ही करूँगा।"

यह सुन कर सॉप ने इधर उधर देखा तो देखा कि पास में ही कुछ दूरी पर एक गाय चर रही थी। वह आदमी से बोला — "चलो हम लोग इस सवाल के बारे में इस गाय से पूछते हैं।"

सो वे गाय के पास चले। जब वे गाय के पास पहुँचे तो सॉप ने अपना मुँह खोल कर उससे पूछा — "ओ गाय अगर किसी को किसी से कोई अच्छाई मिले तो उसको उसे वापस क्या देना चहिये।"

गाय बोली — “अगर तुम मुझसे आदमी की तरफ से पूछना चाहते हो तो अच्छाई का बदला हमेशा ही बुरा होता है। मैं तुम्हें अपनी बात बताती हूँ।

मैं एक बार बहुत समय के लिये एक किसान के पास थी। वहाँ मैं हर साल एक बच्चे को जन्म देती थी। उसके घर के लिये दूध और घी[148] देती थी। उसके बच्चों की ज़िन्दगी मेरे ही ऊपर निर्भर थी।

पर जब मैं बूढ़ी हो गयी और मेरे बच्चे होना बन्द हो गये तो उसने मुझे रखने से मना कर दिया और मुझे मरने के लिये जंगल में धकेल दिया। अपना खाना ढूँढने और आराम से घूमने के बाद मैं मोटी हो गयी तब मेरा पुराना मालिक मेरी यह हालत देख कर एक कसाई को साथ ले आया और उसने मुझे उसे बेच दिया। आज मैं काट दी जाऊँगी।”

साँप बोला — “तुमने सुना इस गाय ने क्या कहा। बस अब तुम मरने के लिये जल्दी से तैयार हो जाओ।”

आदमी बोला — “केवल एक आदमी की राय पर काम करना कोई अक्लमन्दी नहीं है। हमको किसी एक और की राय और लेनी चाहिये।”

[148] Ghee is the clarified butter

सॉप ने फिर चारों तरफ देखा तो देखा कि पास में ही एक पेड़ खड़ा है। उस पर एक भी पत्ता नहीं था। उसकी नंगी टहनियॉ आसमान तक जा रही थीं।

सॉप बोला — "चलो इस पेड़ से चल कर पूछते हैं।"

सो दोनों उस पेड़ के पास पहुॅचे। वहॉ जा कर सॉप बोला — "किसी की अच्छाई के बदले में उसको क्या देना चाहिये।"

पेड़ बोला — "आदमियों में ऐसा होता है कि भलाई का बदला बुराई और नुकसान से दिया जाता है। और मैं जो ऐसा सोचता हूॅ उसको साबित भी कर सकता हूॅ।

मैं एक पेड़ हूॅ जो इस दुखी हालत में इस तरह एक टॉग पर खड़ा हो कर बढ़ रहा हूॅ। एक समय था जब मैं फल फूल रहा था और हरा था। सबकी सेवा कर रहा था। जब कोई आदमी थका हारा गरमी का मारा इस तरफ से निकलता था वह मेरे साये में बैठता था। मेरी शाखाओं के नीचे सो जाया करता था।

जब उस आदमी की ऑखों से थकान का बोझ थोड़ा हटता तो वह ऊपर की तरफ मेरी शाखाओं की तरफ देखता और कहता — "तुम्हारी टहनियों के तो तीर बहुत अच्छे बनेंगे।" "तुम्हारी उस डाली का तो हल बहुत अच्छा बनेगा।" "इस पेड़ के तने के तो तख्ते बहुत अच्छे बनेंगे।

अगर उनके पास कोई कुल्हाड़ी या आरी होती तो वे मेरी शाखाओं में से कुछ को चुनते और उन्हें काट कर ले जाते। इस

तरह जिन लोगों को मैं आराम देता वे मुझे दुख दर्द दे कर जाते। जबकि मैं उनकी चिन्ताओं के समय में अपनी छाया दे कर उनको आराम देता वे मुझे जड़ से उखाड़ने की सोचते।"

सॉप बोला — "देखा तुमने। दो जज तो हो गये इसलिये अब तुम सोच लो तुम्हें क्या करना है वरना मैं तुम्हें काटने वाला हूं।"

आदमी बोला — "सॉप यह तो तुम ठीक कह रहे हो पर ज़िन्दगी के लिये प्यार बहुत ज़्यादा होता है और जब तक आदमी के शरीर में ताकत होती है दिल से उसका प्यार निकालना बहुत मुश्किल है।

मेहरबानी करके एक आखिरी जज और देख लें फिर वह जो कुछ भी कहेगा मैं उसे मान लूॅगा।"

अब यह बहुत अच्छा हुआ कि वहीं पास में एक लोमड़ा खड़ा हुआ था। वह इनकी बहस सुन रहा था। वह इनके पास आया। सॉप ने जब उसे पास खड़े देखा तो बोला — "यह देखो यह लोमड़ा है चलो इसी से पूछते हैं।"

पर इससे पहले कि आदमी कुछ बोलता लोमड़ा चिल्लाया — "क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि भलाई का बदला हमेशा ही बुराई होता है। पर तुमने इस सॉप के साथ ऐसी क्या अच्छाई की है जिसके लिये तुम्हें इस बुराई की सजा भुगतनी पड़ रही है।"

यह सुन कर आदमी तो कॉप गया फिर भी उसने सॉप को बचाने की घटना पूरी की पूरी उसको कह सुनायी।

लोमड़ा बोला — “तुम एक बहुत ही अक्लमन्द आदमी नजर आते हो फिर तुम मुझसे झूठ क्यों बोल रहे हो। एक अक्लमन्द आदमी झूठ कैसे बोल सकता है।”

साँप बोला — “लोमड़े भाई यह आदमी सच बोल रहा है। तुम इसका यह थैला देखो जिसमें रख कर इसने मुझे बचाया है।”

लोमड़ा आश्चर्यचकित होने का बहाना करते हुए बोला — “अरे इस बात पर तो मैं विश्वास कर ही नहीं सकता। तुम जैसे बड़े साँप इस छोटे से थैले में कैसे आ सकते हो।”

साँप बोला — “लामड़े भाई मैं इसके अन्दर आ सकता हूँ अगर तुमको इस बात पर विश्वास नहीं हो रहा तो मैं तुम्हें इस थैले में दोबारा घुस कर दिखा सकता हूँ।”

लोमड़ा बोला — “क्या सचमुच में। अगर तुम मुझे इस थैले में घुस कर दिखा दो तो मैं तुम्हारा विश्वास कर लूँगा और फिर तुम दोनों का झगड़ा सिलटा दूँगा।”

यह सुन कर यात्री ने अपने थैले का मुँह खोल दिया और साँप लोमड़े के अविश्वास पर कुछ गुस्सा सा होते हुए उस थैले में घुस गया।

जैसे ही वह अन्दर घुसा लोमड़ा चिल्लाया — “ओ नौजवान जब तुम अपने दुश्मन को पकड़ लो फिर उस पर दया दिखाने की कोई जरूरत नहीं है।

जब दुश्मन को हरा दो और वह तुम्हारे काबू में हो तो अक्लमन्दी इसी में है कि उसके ऊपर कभी कोई दया नहीं करनी चाहिये।"

यात्री ने उसका इशारा समझा थैले का मुँह बाँधा और एक पत्थर के ऊपर दे कर मार दिया। इससे साँप मर गया और उसने अपनी जाति के लोगों की जानें बचा लीं।

9 रुस्तम की सात कठिनाइयाँ[149]

फारस देश में बहुत शान्ति थी और खुशहाली थी पर उसका राजा कीकाऊस[150] को कभी आराम नहीं था। एक दिन उसके एक प्रिय गवैये ने उसे पड़ोसी राज्य माज़ेन्दरान[151] की सुन्दरताओं का हाल बताया।

उसमें बारहों महीने खिलने वाले गुलाबों का, उसमें चहचहाती बुलबुलों[152] का, उसके हरे भरे मैदानों का, उसके छायादार पेड़ों से भरे पहाड़ों का और ऐसे खुशबूदार फूलों से भरी उनकी चोटियों का जिनकी खुशबू सारी हवा में फैलती रहती है। और इन सबसे ऊपर वहाँ की सुन्दर लड़कियों का और वहाँ के बहादुर योद्धाओं का।

उसने राजा के सामने इन सबका हाल इतने अच्छे से बताया कि राजा की अक्ल पर परदा पड़ गया और उसने कहा कि वह जब तक चैन से नहीं बैठेगा जब तक वह इतने सुन्दर प्राकृतिक देश को अपने कब्जे में न कर ले।

उसके अक्लमन्द मन्त्रियों और सलाहकारों ने उसको ऐसा न करने की सलाह दी क्योंकि उस राज्य में इन सब सुन्दर चीज़ों के अलावा देव या राक्षस भी रहते थे जो उसकी रक्षा करते थे पर सब

---

[149] The Seven Stages of Roostem (Tale No 9) – a folktale from Persia, Asia.
[My Note: This story seems to come from Persia.]

[150] Ky-Kaaoos – the name of the King of Persia.

[151] Mazenderan – name of the neighboring kingdom

[152] Translated for the word "Nightingale"

बेकार। वे देव और राक्षस अपने सरदार देवेसफ़ेद[153] के नीचे काम करते थे और उन्होंने बहुत सारे दुश्मन सिपाहियों को हरा दिया था।

कीकाऊस अपने कुलीनों की बात सुन ही नहीं रहा था तो उन्होंने बड़ी नाउम्मीद हो कर बूढ़े ज़ाल को बुलवा भेजा। बूढ़ा ज़ाल रुस्तम का पिता था और सीस्तान का राजकुमार था।[154]

ज़ाल आया। उसने भी राजा को समझाने की बहुत कोशिश की कि वह उस राज्य पर चढ़ाई करने का विचार छोड़ दे पर सब बेकार क्योंकि राजा को अपने ऊपर घमंड बहुत था। उसने ज़ाल को यह कह कर चुप कर दिया — "दुनियॉ बनाने वाला मेरा दोस्त है और देवों का सरदार मेरा शिकार इसलिये मुझे कोई परेशानी नहीं होगी।"

इस बेकार की शान बघारने से ज़ाल सन्तुष्ट हो गया और वह उसका कोई भला नहीं कर सका। उसने बल्कि कीकाऊस की गैरहाजिरी में फारस का युवराज बनने से भी इनकार कर दिया लेकिन वायदा किया कि वह अपनी सलाह देता रहेगा।

राजा जीतने की आशा से उस राज्य पर हमला करने चल दिया पर माज़ैन्दरान[155] के राजकुमार ने अपनी फौजों को बुलाया और देवेसफ़ेद और उसके साथियों को भी बुलाया।

---

[153] Deev-e-Seffeed means "White Demon"

[154] They sent for the old Zaal, the father of Roostem and the Prince of Seestan.

[155] Mazendaran – name of the neighboring country

वे सब उसके बुलाने पर तुरन्त ही आ गये। बहुत ज़ोर की लड़ाई शुरू हो गयी। इस लड़ाई में फारस के लोग बुरी तरह से हार गये। कीकाऊस को बन्दी बना लिया गया और एक बहुत ही मजबूत किले में रख दिया गया। अरजैंग[156] की देखभाल में सौ देव उस किले की पहरेदारी करते थे।

अरजैंग से कहा गया था कि वह राजा कीकाऊस से रोज यह पूछे कि उसको वहाँ के गुलाब, बुलबुल, फूल, पेड़, हरे भरे मैदान, छायादार पहाड़, साफ नदियाँ, सुन्दर लड़कियाँ और माज़ैन्दरान के बहादुर लड़ने वाले अब कैसे लग रहे थे।

इस बुरी घटना की खबर बहुत जल्दी ही पूरे फारस में फैल गयी। बूढ़े ज़ाल की घुटन को तो कोई समझ ही नहीं पा रहा था कि वह राजा के इस बेवकूफी भरे जिद्दीपन से जो उस बदकिस्मत की बेइज़्ज़ती हुई थी उस पर वह कितना दुखी था।

उसने अपने बेटे रुस्तम को बुलवा भेजा और उसके आने पर उससे कहा — "बेटे तुम अपने अकेले हथियार और अपने बढ़िया घोड़े रैक्ष[157] के साथ जाओ और हमारे राजा को छुड़ा कर लाओ।"

रुस्तम तुरन्त ही जाने के लिये तैयार हो गया। वहाँ जाने के लिये दो रास्ते थे उसने छोटा वाला रास्ता पकड़ा हालाँकि लोगों का कहना था कि वह सबसे मुश्किल और खतरों से भरा रास्ता था।

---

[156] Arjeng – leader of the one hundred Dev who were appointed as the guards to take care of Ky-Kaaoos.

[157] Reksh – name of the horse of Roostem

पहले दिन की यात्रा की थकान के बाद रुस्तम रात को सोने के लिये लेट गया और रैक्ष को उसने बराबर वाले मैदान में चरने के लिये छोड़ दिया। जब वह वहाँ चर रहा था तो उसके ऊपर एक शेर ने हमला किया।

पर इस आश्चर्यजनक घोड़े ने कुछ देर की लड़ाई के बाद ही अपने आगे वाले खुरों से दुश्मन को जमीन पर पटक दिया और अपने दाँतों से उस शाही जानवर का गला पकड़ कर उसे मार दिया।

जब रुस्तम जागा तो यह सब देख कर उसे आश्चर्य भी बहुत हुआ और गुस्सा भी बहुत आया। वह चाहता था कि रैक्ष कभी इस तरह से बिना किसी की सहायता के अकेला ऐसा काम न करे।

उसने उस अक्लमन्द जानवर से पूछा — "अगर तुम इसमें मर जाते तो मैं अपना उद्देश्य कैसे पूरा करता?"

दूसरी बार रुस्तम प्यास से मर गया होता पर उसकी वह भगवान की प्रार्थना सुन ली गयी। एक हिरन का बच्चा उसके सामने उसको रास्ता दिखाने आ गया। उसके पीछे पीछे चल कर वह एक साफ फव्वारे के पास पहुँच गया।

वहाँ पहुँच कर उसने एक जंगली गधे का माँस खाया जिसको उसने अपने तीर से मारा था और फिर सो गया।

आधी रात में एक बहुत ही बड़ा साँप जिसकी लम्बाई **70** गज थी अपने बिल में से निकला और हमारे हीरो की तरफ बढ़ा जो घोड़े

के हिनहिनाने की आवाज से जाग गया था लेकिन क्योंकि साँप फिर अपने बिल में वापस चला गया था सो रुस्तम को कोई खतरा दिखायी नहीं दिया इससे गुस्सा हो कर रुस्तम अपने घोड़े ऊपर फिर बहुत नाराज हुआ।

साँप ने एक बार फिर उसको परेशान करने की कोशिश की पर वह फिर से उसी तरह से बच गया। लेकिन क्योंकि उसने इस बार भी अपने आपको छिपा लिया था तो रुस्तम का रैक्ष के प्रति धीरज छूट गया। उसने रैक्ष को अबकी बार मारने की धमकी दी कि अबकी बार उसने अगर उसको बेकार में ही जगाया तो वह उसे मार देगा।

वह वफादार घोड़ा अपने मालिक के गुस्से से डरता था पर वह उसको बहुत प्यार करता था। सो इस बार जब साँप फिर अपने बिल में से निकल कर आया तो बजाय हिनहिनाने के वह उससे खुद ही लड़ने लगा।

इससे जो शोर हुआ उससे रुस्तम की आँख खुल गयी और उसने भी साँप से लड़ना शुरू कर दिया। यह देख कर साँप फिर उसकी तरफ भागा तो रुस्तम ने उसे अनदेखा कर दिया पर उसके वफादार घोड़े ने उन दोनों के दुश्मन साँप को उसकी पीठ पर मारा तभी हमारे हीरो ने अपनी तलवार से उसका सिर काट डाला।

जब साँप मर गया तब रुस्तम को उसके बड़े साइज़ का पता चला तो उसने तो उसका साइज़ देख कर ही दाँतों तले उँगली दबा

ली – या अल्लाह **70** गज लम्बा साँप। अपनी जिस भक्ति की वजह से वह सब लोगों में अलग पहचाना जाता था उसी भक्ति से उसने अपने आपको एक बार फिर बचाने के लिये भगवान को धन्यवाद दिया।

अगले दिन रुस्तम एक फव्वारे के पास बैठा हुआ था कि उसने वहाँ एक बहुत सुन्दर लड़की देखी जो शराब पी रही थी। वह उसके पास गया और जब उसने उससे अपने साथ शराब पीने के लिये कहा तो वह मान गया। उसने उसको अपनी बाँहों में भी लिया जैसे कि वह कोई देवदूत हो।

अब हुआ यह कि बातों में बातों में हमारे फारस के हीरो ने यूनान के एक ऐसे देवता का नाम कहा जिसको वह बहुत पसन्द करता था। उस पवित्र नाम को लेते ही उस लड़की की शक्ल बदलने लगी और वह काली बदसूरत और अपंग हो गयी।

रुस्तम तो यह देख कर भौंचक्का रह गया। उसने उसे पकड़ लिया उसके हाथ बाँध दिये और उससे पूछा कि वह कौन है। उसने जवाब दिया "मैं एक जादूगरनी हूँ और एक बुरी आत्मा अहरमान[158] के लिये काम करती हूँ। इस समय मैं तुझे यहाँ मारने आयी हूँ। पर मेरी जान बख्श दे। मैं इतनी ताकतवर हूँ कि मैं तेरी सेवा भी कर सकती हूँ।"

[158] Evil Spirit Aharman

हीरो बोला — "मैं किसी भी बुरी आत्मा या उसके किसी नौकर से कोई भी किसी भी तरीके का समझौता नहीं कर सकता।" और उसने उसे दो हिस्सों में काट दिया।

उसने फिर से अपने बचाव के लिये भगवान को धन्यवाद दिया और आगे चल दिया।

अपने चौथे पड़ाव पर रुस्तम रास्ता भूल गया। घूमता घामता वह एक साफ नदी के पास आ पहुँचा। आराम करने के लिये वह वहाँ लेट गया। पास में ही अनाज का एक खेत था सो उसने अपना घोड़ा रैक्ष खाने पीने के लिये खोल दिया।

एक माली जो वहाँ की देखभाल करने वाला था उसने आ कर रुस्तम को जगाया और उससे गुस्से भरी आवाज में कहा कि उसको वहाँ इस तरह से व्यवहार करने के लिये सहना पड़ेगा क्योंकि जहाँ उसका घोड़ा इस समय चर रहा था वह खेत एक पहलवान या योद्धा[159] का था जिसका नाम औलाद था।

रुस्तम हमेशा से ही बहुत गुस्से वाला था और खास तरह से जब उसे कोई नींद से जगा देता हो तब तो उसको बहुत ज़्यादा गुस्सा आता था। सो वह उठा और उसने माली के कान उखाड़ लिये। उसकी नाक पर एक ज़ोर का घूँसा मारा जिससे उसकी नाक और दाँत दोनों टूट गये।

[159] Pehloovaan or a warrior whose name was Oulaad

फिर वह बोला — "ले मेरे गुस्से के ये निशान अपने मालिक के पास ले जा और उससे यहाँ आने के लिये कहना। उसका भी मैं यही हाल करूँगा।"

औलाद को जब यह बताया गया कि वहाँ क्या हुआ था वह गुस्से के मारे काँपने लगा और उस फारस के हीरो से लड़ने की तैयारी करने लगा। रुस्तम भी उसके आने की उम्मीद कर रहा था सो उसने भी अपना जिरहबख्तर[160] पहन लिया था और अपने घोड़े रैक्ष पर चढ़ गया।

जब औलाद ने उसको देखा तो वह तो उसकी शक्ल देख कर ही डर गया। वह हिम्मत ही नहीं कर सका कि वह उससे लड़े जब तक कि उसने अपने कुछ साथी नहीं बुला लिये।

वे लोग तुरन्त ही आ कर रुस्तम के पैरों पर पड़ गये पर जो डरपोक किस्म के लोग थे वे तो वहाँ से ऐसे उड़ गये जैसे हवा में भूसा उड़ जाता है। पर उनमें से बहुत सारे लोग मारे गये कुछ भाग गये जिनमें उनका सरदार भी था।

रुस्तम फिर अपनी पाँचवीं मुश्किल का सामना करने आया तो उसने औलाद पर अपना फन्दा डाल दिया और उसे बन्दी बना लिया।

औलाद ने अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये न केवल उसको इस बात की पूरी खबर दी कि राजा को कहाँ कैद करके रखा गया है

---

[160] A full dress made of iron to be worn in battles to protect one's body from others weapons.

और देवेसफ़ेद की कितनी ताकत है बल्कि उसको उसके उद्देश्य को पूरा करने के लिये सारी सहायता का देने का भी वायदा किया।

रुस्तम ने उसका यह प्रस्ताव मान लिया और इस प्रस्ताव ने उसकी बहुत सहायता की।

वहाँ से चले तो छठे दिन उन्होंने मज़ैन्दरान शहर देखा। इसी शहर के पास ही देवेसफ़ेद रहता था। वहाँ पहुँचने पर उनको दो सरदार अपने बहुत सारे नौकरों के साथ मिले जिनमें से एक सरदार की तो इतनी हिम्मत हो आयी कि वह रुस्तम पर चढ़ा चला आये और उसे उसकी कमर की पेटी से पकड़ ले। सरदार का यह गुस्सा बहुत तेज़ था।

हालाँकि रुस्तम ने अपने हथियार इस्तेमाल करने नहीं चाहे पर उसका हाथ पकड़ कर उसे उसने इतनी ज़ोर से मरोड़ दिया कि वह उसके शरीर से अलग हो गया जिसे उसने अपने साथियों की तरफ फेंक दिया। इससे वे हीरो की ताकत का अन्दाजा लगाते हुए डर गये और भाग गये।

इसके बाद रुस्तम अपने गाइड के साथ उस किले की तरफ चला जहाँ राजा को कैद किया गया था।

जो देव उनका पहरा दे रहे थे वे सब सोये हुए थे। कीकाऊस अकेला अपने एक कमरे में बैठा था जिसको उन्होंने जंजीरों से जमीन से जकड़ा हुआ था। उसने रुस्तम को पहचान लिया और

अपने आजाद करने वाले को अपने सीने से लगा कर बहुत ज़ोर से रो पड़ा।

रुस्तम ने उसकी जंजीरें तोड़नी शुरू कीं। इस शोर से देवों की आँख खुल गयी और उनका सरदार बीदाररैंग[161] रुस्तम को पकड़ने के लिये आगे बढ़ा पर उसकी शक्ल और उसकी धमकियों ने उसके ऊपर इतना असर डाला कि उसने यही अच्छा समझा कि वह अपनी सुरक्षा के बदले में राजा को उसके साथियों के साथ आजाद कर दे।

यह करके रुस्तम अपने आखिरी और सबसे बड़े खतरे से जूझने पहुँचा – देवेसफ़ेद से झगड़ने।

औलाद ने उसे बताया कि देव लोग रात में उसकी देखभाल करते हैं और खाते पीते हैं और दिन की गरमी में सो जाते हैं क्योंकि वे सूरज की किरनों से बहुत नफरत करते हैं।

जब रुस्तम आगे बढ़ा तो उसने देखा कि वहाँ तो बहुत बड़ी सेना खड़ी है। उसने सोचा कि अच्छा तो यह है कि उनके ऊपर हमला बोलने से पहले वह आराम करके थोड़ा ताजादम हो ले। सो वह आराम करने के लिये लेट गया और जल्दी ही गहरी नींद सो गया।

सुबह को जब वह उठा तो बिल्कुल ताजादम था। जैसे ही सूरज निकला और सब कुछ गरम होना शुरू हो गया वह देवों के

[161] Beedaar-Reng

कैम्प की तरफ चल दिया। चलते चलते वह अपनी गदा को ज़ोर ज़ोर से हिलाता हुआ चला जा रहा था।

उसकी गदा हिलने की आवाज ने देवेसफ़ेद के पहरेदारों को जगा दिया। वे लोग रुस्तम को रोकने के लिये झुंडों में इकट्ठा हो गये पर सब बेकार। केवल वे ही लोग बच सके जो लड़ाई के मैदान से भाग गये थे बाकी सबको उसने मार दिया।

इस फौज को भगा कर रुस्तम देवेसफ़ेद को ढूँढने चला। देवेसफ़ेद जिसको उसके आदमियों का क्या हुआ था इस बात का बिल्कुल भी पता नहीं था एक गुफा में सो रहा था। उसके अन्दर जाने का रास्ता बड़ा ॲधेरा सा था।

यह देख कर हमारे फारस का हीरो सोचने लगा कि वह उस गुफा में अन्दर जाये या नहीं। पर उसके उधर पहुँचने की आवाज से जो शोर मचा उससे दुश्मन की ऑख खुल गयी और वह अपना पूरा जिरहबख्तर पहन कर बाहर आ गया।

उसकी शक्ल बहुत भयानक लग रही थी पर रुस्तम ने अपने आपको भगवान के हवाले करके उसको एक बहुत ज़ोर का धक्का मारा जिसने देवेसफ़ेद की टॉग उसके शरीर से अलग कर दी।

अक्सर ऐसे मौकों पर योद्धा लोग लड़ाई बन्द कर देते थे पर इस लड़ाई का नतीजा कुछ और ही था। एक टॉग खोने पर देवेसफ़ेद को बहुत गुस्सा आया। उसने दुश्मन को अपनी बॉहों में दबोच लिया और उसको नीचे गिराने की कोशिश की।

कुछ देर तक तो यही पता नहीं चला कि कौन जीतेगा पर रुस्तम ने फिर अपनी पूरी कोशिश के साथ सारी ताकत लगा कर उसे नीचे गिरा दिया। उसने उसका एक सींग पकड़ा और अपना खंजर निकाल कर उसके सीने में भौंक दिया। देवेसफ़ेद तुरन्त ही मर गया।

रुस्तम ने तब गुफा के घुसने वाले दरवाजे के आसपास देखा तो पाया कि वहाँ जहाँ बहुत सारे देव अपनी मालिक की सहायता के लिये आ कर खड़े हो गये थे सब मर गये थे।

औलाद जो लड़ाई की जगह से कुछ दूरी पर खड़ा था अब थोड़ा पास आया और रुस्तम को बताया कि सारे देवों की ज़िन्दगी उनके सरदार की ज़िन्दगी पर निर्भर करती थी। जब वह सरदार मर गया तो जिसने भी इस समूह को बनाया था और जो इसकी रक्षा करता था उसका जादू टूट गया और इस तरह से ये सब मर गये।

सात दिनों की परेशानी और खतरे के बाद अब रुस्तम को माज़ैन्दरान को अपने सामने झुकाने में कोई खास मुश्किल नहीं थी। उस देश के राजा को मार दिया गया और औलाद की वफादारी के इनाम में उसको वहाँ का राजा बना दिया गया।

कीकाऊस के हथियारों की सफलता ने उसको अब बहुत ताकतवर बना दिया था। अब उसका हुकुम केवल आदमी ही नहीं बल्कि देव भी मानते थे। देवों से उसने अपने लिये क्रिस्टल पन्ने

और लाल के महल[162] बनवाये जब तक वे यह सब करते करते थक नहीं गये।

उन्होंने सोचा कि अब उसको मार दिया जाये। इस काम के बारे में उन्होंने शैतान से सलाह ली तो उस शैतान ने एक देव दिज़खीम[163] को कहा कि वह कीकाऊस के पास जाये और उसके दिमाग में तारों को जानने की विद्या[164] के लिये रुचि पैदा करे।

साथ में वह उससे यह वायदा भी करे कि वह उसको तारों को इतने पास से दिखायेगा जिसको किसी आदमी की ऑखों ने कभी नहीं देखा था।

उस देव ने अपने मालिक की बात इतने अच्छे तरीके से पूरी की कि राजा तो इसके लिये बिल्कुल पागल सा हो गया। शैतान ने फिर दिज़खीम से कहा कि वह कुछ बच्चे गिद्धों को ऐसे तैयार करे कि वे एक सिंहासन को ऊपर की तरफ ले जायें।

इसको ऐसे किया जाये कि कुछ भालों को सिंहासन के चारों तरफ लगा दिया जाये। फिर उनकी नोकों पर मॉस ऐसे लगा दिया जाये जिससे उसको गिद्ध देख सकें। और ये गिद्ध सिंहासन के नीचे की तरफ बॅधे होने चाहिये।

जब ये मॉस खाने वाली चिड़ियें ऊपर मॉस को देखेंगी तो ऊपर को उड़ेंगी जिससे सिंहासन भी ऊपर उठ जायेगा।

---

[162] Palaces of crystal, emerald and ruby

[163] Dizjkheem – the name of one Dev

[164] Translated for the word “Astronomy”

हालॉकि राजा उस पर बैठ कर बहुत थोड़ी देर के लिये ऊपर उड़ा पर गिद्ध थक गये। मॉस तक पहुँचने में अपने आपको असफल पा कर उन्होंने उसे छोड़ने की कोशिश की इससे राजा का सिंहासन डोल गया और इधर उधर झूमने लगा।

इससे कीकाऊस उस पर से सीधा नीचे गिर पड़ेगा और अगर वह उससे चिपका नहीं रहेगा तो गिर कर मर जायेगा। गिद्ध अपने आपको क्योंकि सिंहासन से अलग नहीं कर पाये तो वे इस कोशिश में इधर उधर भागे और कीकाऊस को चीन के किसी जंगल में गिरा दिया।

राजा की फौजें राजा को ढूँढने और बचाने के लिये हर दिशा में भागीं और जब वह उनको नहीं मिला तो उन्होंने सोचा कि शायद उसको फिर से देवों ने पकड़ लिया है।

पर फिर किसी तरह से जब वह उनको मिल गया तो उन्होंने उसको फिर से सिंहासन पर बिठा दिया।

हमने ऐसा सुना है कि रुस्तम ने अपनी बेवकूफी को ढकने के लिये यह कहा "क्या तुमने धरती पर अपने मामले इतनी अच्छी तरह से सिलटा लिये हैं कि अब तुमको अपना हाथ साफ करने के लिये स्वर्ग जाने की जरूरत है?"

10 एक आदमी जो कभी नहीं हॅसा[165]

एक बार की बात है कि एक आदमी था जो बहुत अमीर था। उसके पास बहुत सारे मकान थे। बहुत सारी धन सम्पत्ति थी नौकर चाकर थे और बहुत सारी चीज़ें थीं। एक दिन वह दुनियाँ छोड कर अल्लाह के पास चला गया। अपने पीछे वह एक छोटा बेटा छोड़ गया था।

जब उसका वह बेटा बड़ा हो गया तो खाने पीने का और गाना सुनने का शौकीन हो गया। वह भेंटें देने में बहुत ही दिलफेंक था सो वह लोगों को खूब दिल खोल कर देता था। धीरे धीरे देते देते खर्च करके उसने अपने पिता की सारी दौलत खत्म कर दी।

अब वह काले दास दासियों को और दूसरी चीज़ों को बेचने का काम करता था। इसके बाद वह मजदूरी करने लगा। कई सालों तक वह मजदूरी करता रहा।

एक बार वह एक दीवार के नीचे बैठा हुआ इन्तजार कर रहा था कि कब कोई आये और उसे मजदूरी के लिये ले जाये। कि एक आकर्षक आदमी बहुत अच्छे कपड़े पहने हुए वहाँ आता है और उसको सैल्यूट करता है। तो इस नौजवान ने उससे पूछा — "ओ चाचा क्या मैं इससे पहले से आपको जानता हूँ?"

[165] The Man Who Never Laughed (Tale No 10) – a folktale from Arabia, Asia.

आदमी बोला — "बेटे मैं तुझे बिल्कुल नहीं जानता पर मैं तेरे चेहरे पर अमीरी की झलक देख रहा हूँ। हालाँकि अब तू इस हाल में जरूर है।"

नौजवान ने कहा — "चाचा जी जिस किसी की किस्मत में जो लिखा रहता है वह तो हो कर ही रहता है। पर ओ अच्छे दिखायी देने वाले चाचा जी क्या आपके पास कोई ऐसा काम है जिसमें आप मुझे नौकरी दे दें?"

आदमी बोला — "मेरे बेटे। मेरे पास एक घर में **10** शेख रहते हैं और मेरे पास हम सबकी सेवा करने के लिये कोई नहीं है। अगर तू हमारी सेवा करेगा तो तुझको तेरे हिस्से का पैसा और सुविधाऐं मिल जायेंगी। हो सकता है कि हमारी वजह से तेरी अमीरी भी तुझे वापस मिल जाये।"

नौजवान बोला — "मुझे मंजूर है। आप जो कहेंगे मैं वही करूँगा।"

यह सुन कर शेख ने उससे कहा — "मगर मेरी एक शर्त है।"

नौजवान ने पूछा — "और वह शर्त क्या है चाचा जी।"

शेख बोला — "तू हमारे भेदों की इज़्ज़त करेगा और उनको छिपा कर रखेगा जो कुछ भी तू हमको करता हुआ देखे। जैसे अगर तू हमको रोता हुआ देखे तो यह सोच कर कि "इनके रोने की कोई वजह होगी।" तू हमसे यह नहीं पूछेगा कि हम क्यों रो रहे हैं।"

नौजवान बोला — “ठीक है।”

शेख बोला — “तो फिर ठीक है बेटे तू चल हमारे साथ और अल्लाह पर भरोसा रख।”

नौजवान शेख के पीछे पीछे चल दिया जब तक कि शेख नहाने के घर तक नहीं पहुँचा। फिर उसने अपने नौकर को लिनन का एक बहुत ही सुन्दर कपड़ा उसके पहनने के लिये लाने के लिये कहा।

जब नौकर वे कपड़े ले आया तो उसने नौजवान को वे कपड़े पहनाये और अपने साथियों के पास अपने घर ले गया।

जब नौजवान उस घर में घुसा तो उसने देखा कि वह तो एक बहुत ही बड़ा घर था। उसमें बहुत सारे कमरे थे जिनके दरवाजे एक दूसरे की तरफ खुलते थे। कुछ छोटे छोटे कमरे भी थे जिनमें पानी के फव्वारे लगे हुए थे। उनके ऊपर चिड़ियें उड़ रही थीं।

उसमें चारों तरफ खिड़कियाँ थीं जो बाहर की तरफ को खुलती थीं। उस बड़े घर में एक बागीचा भी था।

शेख उसको एक कमरे में ले गया तो उसने उस कमरे को संगमरमर के रंगीन पत्थरों से सजा हुआ देखा। उसकी छत नीले रंग और चमकदार सोने की थी। उसमें सिल्क के कालीन बिछे हुए थे। उसने देखा कि वहाँ 10 शेख एक दूसरे की तरफ मुँह किये बैठे हुए थे।

उसने देखा कि वे वहाँ सब दुख वाले कपड़े पहने बैठे थे दुखी थे रो रहे थे।

यह दृश्य देख कर नौजवान तो आश्चर्य में पड़ गया। वह उस शेख से जो उसको ले कर आया था कुछ पूछने ही वाला था कि उसको शेख की बतायी शर्त याद आयी तो वह वह सवाल पूछते पूछते रह गया।

तब शेख ने उसे एक सन्दूकची दी जिसमें **30** हजार सोने के सिक्के थे और कहा — "यह लो मेरे बेटे। इस सन्दूकची में से तुम जैसे भी ठीक समझो हमारे ऊपर और अपने ऊपर भी खर्च करो। हमारे लिये वफादार रहना और हर उस चीज़ की देखभाल करना जिसके लिये मैं तुमसे कहूँ।"

नौजवान बोला — "मैंने सुना और वैसा ही होगा जैसा आपने कहा।"

उस समय के बाद से उसने उस सन्दूकची में से ही सबके ऊपर खर्च करना शुरू कर दिया। वह दिन रात उसमें से खर्च करता रहा। एक दिन उन दस शेखों में से एक शेख मर गया। इस पर उसके साथी उसको ले गये उसको नहलाया धुलाया कपड़े पहनाये और घर के पीछे वाले में बागीचे में दफ़ना दिया।

मौत यहीं नहीं रुकी बल्कि एक के बाद एक को आती रही जब तक कि उनमें से केवल एक शेख नहीं रह गया। यह वही शेख था जो उसको अपने घर ले कर आया था।

अब उस उतने बड़े मकान में केवल वे ही दोनों रहते थे। तीसरा और कोई नहीं था। इस तरह वे दोनों कई साल तक अकेले रहते रहे।

अब एक दिन यह शेख भी बीमार पड़ गया तो नौजवान को उसकी ज़िन्दगी की चिन्ता होने लगी। वह उसके लिये दुखी भी बहुत हुआ तो उसने उस शेख से बहुत ही इज़्ज़त के साथ पूछा — "चाचा जी। मैंने आपकी इतने सालों तक सेवा की और इन **12** सालों में कभी भी आपका हुकुम नहीं टाला बल्कि अपनी पूरी ताकत के साथ आपकी वफादारी के साथ सेवा की है।"

शेख बोला — "यह सच है बेटा कि तूने हम सबकी तब तक बहुत वफादारी से सेवा की है जब तक कि बाकी के शेख अल्लाह को प्यारे नहीं हो गये। एक दिन तो हम सभी को मरना है।"

नौजवान बोला — "अब आपकी हालत बहुत खराब है। मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप मुझे यह बतायें कि आप लगातार क्यों रोते थे क्यों चिल्लाते थे क्यों दुखी थे।"

शेख बोला — "बेटा इस बात से तेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। तू मुझसे उस काम को करने के लिये मत कह जिसे मैं कर नहीं सकता। मैंने अल्लाह से यह मॉगा है कि मैं अपने दुख से किसी दूसरे को दुखी नहीं करूँगा।

अब अगर तू उस सबसे सुरक्षित रहना चाहता है जिसमें हम सब गिर चुके थे तो तू कभी उस दरवाजे को नहीं खोलना।"

कह कर उसने एक दरवाजे की तरफ इशारा करके उससे बचके रहने के लिये कहा।

वह आगे बोला — "और अगर तू इस बात को जानना ही चाहता है कि हम ऐसी हालत में कैसे पहुँचे तो उस दरवाजे को खोल लेना तब तू हमारे इस तरह के व्यवहार की वजह जान जायेगा।

पर इसके बाद की बात में तुझे पहले ही बता दूँ कि यह करके तू बहुत पछतायेगा पर उस समय तेरे उस पछताने से होगा कुछ नहीं।"

इसके बाद शेख की बीमारी बढ़ गयी और वह मर गया। नौजवान ने उसे अपने हाथों से नहलाया धुलाया कपड़े पहनाये और उसके साथियों के पास ही उसको दफ़ना दिया।

अब वह वहाँ इतनी बड़ी जगह में अकेला रह गया उस सारी जायदाद और धन सम्पत्ति के साथ। वह अब इस सबका अकेला मालिक था पर शेखों के व्यवहार की वजह न जानने की वजह से बहुत बेचैन था।

एक दिन जब वह शेख की कही बात पर विचार कर रहा था कि उसको वह दरवाजा खोल कर नहीं देखना चाहिये तो उसको लगा कि उसको वह दरवाजा खोल कर देखना ही चाहिये। सो वह उस तरफ चल दिया।

चलते चलते वह एक ऐसे दरवाजे के पास पहुँच गया जो देखने में बहुत ही शानदार था पर उस पर मकड़ी के जाले बुने पड़े थे।

उसमें लोहे के चार ताले लगे हुए थे। जब उसने उसको देखा तो उसको शेख की चेतावनी याद आयी और वह वहाँ से उसको बिना खोले ही वापस चला आया पर उसकी आत्मा उसको खोलने के लिये बेचैन रही। वह उसको किसी तरह से सात दिन तक रोके रहा।

पर आठवें दिन उसकी आत्मा जीत गयी। उसने इरादा कर लिया कि वह यह दरवाजा खोल कर ही रहेगा कि "देखता हूँ कि उसको खोलने का नतीजा क्या होता है क्योंकि अल्लाह ने जो मेरी किस्मत में लिखा है वह तो हो कर ही रहेगा। और बिना उसकी मरजी के तो कोई घटना घट नहीं सकती।"

यह सोच कर वह उठा और उसने दरवाजे के ताले तोड़ने के बाद दरवाजा खोल दिया। दरवाजा खोलने पर उसको एक तंग रास्ता दिखायी दिया जिस पर वह तीन घंटे तक चलता रहा।

चलते चलते वह एक चौड़ी सी नदी के किनारे आ गया। यह देख कर तो नौजवान आश्चर्य में पड़ गया। वह उसके किनारे किनारे ही अपने दाँये बाँये देखते देखते चलने लगा।

कि इतने में ही ऊपर आसमान से एक गरुड़ उतरा उसको अपने पंजों में उठाया और उसको ले कर धरती और आसमान के बीच उड़ता हुआ समुद्र में एक टापू पर चला गया और वहाँ ले जा कर उसे उतार दिया। उतारने के बाद वह वहाँ से चला गया।

यह सब देख कर तो वह नौजवान परेशान हो गया। उसकी यही समझ में नहीं आया कि ऐसी हालत में वह कहाँ जाये।

एक दिन वह बैठा हुआ था कि समुद्र की सतह पर एक जहाज़ दिखायी दिया जैसे आसमान में सितारा दिखायी देता है। यह देख कर नौजवान का दिल उस जहाज़ पर अटक गया कि शायद वह जहाज़ उसको वहाँ से निकाल ले जाये।

जब तक वह उसको दिखायी देता रहा वह उसको देखता रहा ताकि वह उसकी आँखों से ओझल न हो जाये। जब वह उसके पास आ गया तो उसने देखा कि वह हाथी दाँत और ऐबोनी की लकड़ी[166] का बना हुआ था। उसकी पतवारें चन्दन और अलोय की लकड़ी की बनी हुई थीं। और वह सारे का सारा जहाज़ सोने की परत से ढका हुआ था।

उसमे 10 लड़कियाँ थीं जो चाँद की तरह सुन्दर थीं। जब उन्होंने उसको देखा तो उसको अपने जहाज़ पर चढ़ाया और यह कहते हुए उसके हाथ चूमे "तू तो राजा है ओ दुलहे।"

उसके बाद एक लड़की जो साफ आसमान में सूरज की तरह चमक रही थी उसकी तरफ बढ़ी। उसके हाथ में एक सिल्क का रूमाल भी था जिसमें एक शाही पोशाक थी और एक सोने का मुकुट था जिसमें कई तरह के जैसिन्थ[167] लगे हुए थे।

---

[166] Ivory is the teeth of elephant and Ebony wood is a black very hard wood

[167] Jacinth is an orange red variety of Zircon – a precious stone.

उसकी तरफ बढ़ कर उसने उसको वे शाही कपड़े पहनाये मुकुट पहनाया और उसकी बॉह पकड़ कर उसे अपने साथ जहाज़ के अन्दर ले चलीं। वहॉ कई रंगों के सिल्क के कालीन बिछे हुए थे। तब उन्होंने जहाज़ की पाल खोल दी और जहाज़ समुद्र की गहरायी की तरफ चल दिया।

नौजवान बोला — "जब मैं उनके साथ आगे बढ़ा तो मुझे पक्का यकीन था कि यह सपना था। मुझे यह नहीं मालूम था कि वे मुझे ले कर कहॉ जा रही थीं। जब उनको जमीन दिखायी दी तो मैंने देखा कि वहॉ तो बहुत सारे सिपाही खड़े हुए हैं। अल्लाह ही जानता है कि वे वहॉ कितने थे। उन सबने अपनी अपनी वर्दी पहन रखी थी।

वे मेरे सामने पॉच निशान लगे घोड़े ले कर आये जिनकी जीन सोने की थी और उन पर बहुत सारे तरीके के मोती और दूसरे तरह के कीमती जवाहरात लगे हुए थे। मैंने उन घोड़ों में से एक घोड़ा लिया और उस पर सवार हो गया। बाकी के चार घोड़े मेरे साथ साथ आगे चले।

जब मैं उस घोड़े पर चढ़ गया तो बहुत सारे झंडे भी मेरे साथ साथ चले। ढोल मॅजीरे भी बजने शुरू हो गये। उस समय सिपाही लोग दो हिस्सों में बॅट गये। उनका एक हिस्सा मेरी बॉयी ओर चल रहा था और दूसरा हिस्सा मेरे दॉयी ओर। मैंने अपने हाथ हिला कर देखा कि मैं जाग रहा था या सो रहा था।

मैं आगे बढ़ने से रुका नहीं। मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि यह सब जो कुछ मेरे पास था वह सच था। मुझे लगा कि मेरे सपने कहीं आपस में गड्ड मड्ड हो गये हैं।

फिर हम एक हरे भरे घास के मैदान में आ गये जहॉ कई महल और बागीचे थे। पेड़ थे घास थी फूल थे चिड़ियें अल्लाह की शान में गा रही थीं।

उन महलों और बागीचों में से निकल कर अब फिर एक फौज आयी जैसे कोई भारी बरसात हो रही हो। उससे सारा मैदान भर गया। जब वे सिपाही मेरे पास तक आये तो उन्होंने मेरी जयजयकार बोली। उनमें से एक राजा अकेला अपने घोड़े पर सवार मेरी तरफ बढ़ा। उसके साथ उसके कुछ मुख्य औफीसर चल रहे थे।"

जब राजा उस नौजवान के पास तक आया तो वह अपने घोड़े से उतरा। उसको घोड़े से उतरते देख कर नौजवान भी अपने घोड़े से उतर पड़ा। दोनों एक दूसरे से बड़े अदब से मिले। मिलने के बाद वे फिर अपने अपने घोड़ों पर चढ़ कर चल दिये।

राजा ने नौजवान से कहा — "आप हमारे साथ आइये क्योंकि आप हमारे मेहमान हैं।" सो नौजवान उसके साथ साथ चला। वे आपस में बात करते जा रहे थे कि शाही नौकर जो उन लोगों के पीछे आ रहे थे अब उनके आगे आ गये और उनको राजा के महल की तरफ ले चले।

वहाँ पहुँच कर उन लोगों को उतारा गया। सब लोग राजा और नौजवान के साथ एक साथ अन्दर घुसे। नौजवान का हाथ राजा के हाथ में था। उसने नौजवान को सोने का सिंहासन पर बिठाया और खुद भी उसी के पास में बैठ गया।

फिर राजा ने अपने चेहरे पर से परदा[168] हटाया तो नौजवान तो यह देख कर भौंचक रह गया कि वह तो एक बहुत सुन्दर लड़की थी जैसे साफ आसमान में चमकता हुआ सूरज होता है। उसकी सुन्दरता में कोई कमी नहीं निकाली जा सकती थी। नौजवान ने उसके ऊपर अमीरी के निशान देखे और उसकी सुन्दरता देख कर तो वह दंग ही रह गया।

लड़की बोली — "ओ नौजवान मैं यहाँ इस देश की रानी हूँ। और ये जो सारे सिपाही तुमने देखे हैं – यानी इनमें से हर एक सिपाही एक स्त्री है। उनमें से कोई भी आदमी नहीं है।

हमारे बीच जो आदमी हैं वे खेत जोतते हैं बीज बोते हैं और पैदावार काटते हैं। वे केवल जमीन की देखभाल में लगे हैं इमारतें बनाने में लगे हैं और शहरों की मरम्मत करने में लगे हैं। लोगों का व्यापार सँभालने में लगे हैं। पर स्त्रियाँ यहाँ गवर्नर लगी हैं मजिस्ट्रेट लगी हैं और सिपाही लगी हुई हैं।

नौजवान को तो इस बात पर बहुत ही आश्चर्य हुआ।

[168] Translated for the word "Litham". Litham is a veil to cover the lower face. This is mostly used by Bedouin men and is common in Arabic literature too.

जब वे ये बातें कर रहे थे तो वहाँ वजीर आया। लो वह भी एक सफेद बाल वाली स्त्री थी जिसके पीछे पीछे कई लोग चले आ रहे थे जो बहुत शान वाले लग रहे थे।

रानी ने उससे कहा — "हमारे लिये काज़ी और गवाह ले कर आओ।"

वह बुढ़िया उनको बुलाने के लिये चली गयी। रानी ने नौजवान से बात करते हुए और खुश करते हुए उसके डर को दूर हटाते हुए कहा — "क्या तुम मुझसे सन्तुष्ट हो ताकि तुम मुझे अपनी पत्नी बना सको।"

यह सुन कर वह नौजवान उठा और रानी के आगे वाली जमीन को चूमना चाहा पर रानी ने उसे ऐसा करने के लिये मना कर दिया तो नौजवान बोला — "ओ मेरी रानी मैं तो तुम्हारे नीचे जो नौकर काम करते हैं उनसे भी नीचा नौकर हूँ।"

इस पर रानी बोली — "ये जिन्हें तुम देख रहे हो ये मेरे नौकर नहीं हैं। और सिपाही खजाना और यह सब पैसा यह सब अब तुम्हारी मरजी पर है। तुम इनको जैसे चाहो वैसे इस्तेमाल करो। इनको जो कुछ देना चाहो इनको वैसा ही दो।"

फिर उसने एक बन्द दरवाजे की तरफ इशारा करते हुए कहा — "यह सब तुम्हारा ही है पर यह दरवाजा नहीं खोलना क्योंकि अगर तुम इसे खोलोगे तो तुम इसको खोल कर पछताओगे। और उस समय पछताने से कुछ काम नहीं बनेगा।"

उसने अपनी बात खत्म भी नहीं की थी कि वजीर एक काज़ी और गवाहों को ले कर वहाँ आ पहुँची। उसने देखा कि वे सब तो बुढ़ियाँ थीं। उनके बाल उनके कन्धों पर बिखरे हुए थे। उनकी शक्ल से भी लगता था कि वे सब किसी कुलीन घर की स्त्रियाँ थीं।

जब वे रानी के सामने आ कर खड़ी हुईं तो रानी ने उनको हुकुम दिया कि वह उनकी शादी के शादीनामे की रस्म करा दे। उसने उस स्त्री रानी और नौजवान की शादी करा दी।

लड़की ने फिर एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया जिसमें उसके सारे सिपाहियों को बुलाया गया था। जब सब लोग खा पी चुके तब वे सब अपने अपने घर चले गये और नौजवान उस लड़की का पति बन कर महल में आ गया।

वह वहाँ सात साल तक बहुत खुश खुश रहा।

पर एक बार फिर उसके दिमाग में आया कि वह उस दरवाजे को खोल कर देख ले जिसको उसकी पत्नी ने उसे खोल कर देखने के लिये मना किया था कि उसके पीछे क्या है।

उसने सोचा कि जरूर ही उस दरवाजे के पीछे यहाँ से भी बड़ा खजाना और यहाँ से भी अच्छे घास के मैदान होंगे तभी तो उसने मुझे उस दरवाजे को खोलने के लिये मना किया है।

सो वह उठा और उसने जा कर वह दरवाजा खोल दिया। और लो उसके अन्दर तो वह बड़ी वाली चिड़िया थी जो उसको नदी के

किनारे से पकड़ कर यहाँ ले कर आयी थी और उसे इस टापू पर ला कर छोड़ दिया था।

जैसे ही उसने नौजवान को देखा वह बोली — "मैं उसका स्वागत नहीं करती जिसका चेहरा कभी खुश न रहे।"

सो जब नौजवान ने उसे देखा और उसके ये शब्द सुने वह वहाँ से भाग लिया। पर चिड़िया ने उसे अपने पंजों में उठा लिया और वहाँ से चलती बनी।

वह धरती और आसमान के बीच में करीब एक घंटे तक उड़ती रही और फिर उसको वहीं ला कर खड़ा कर दिया जहाँ से वह उसको ले कर आयी थी, यानी नदी के किनारे, और उसको वहाँ छोड़ कर वहाँ से चली गयी।

वह उस जगह बैठ गया और सोचने लगा कि उसने कितनी अमीरी और बहुतायत देखी है। कितनी उसको इज़्ज़त मिली है कि कितने सिपाही लोग उसके सामने चलते थे। यह सब सोच सोच कर वह रो पड़ा। वह वहाँ बहुत ज़ोर ज़ोर से रोया।

वह वहीं उसी बड़ी नदी के किनारे पर दो महीने तक रहा जहाँ वह बड़ी चिड़िया उसको छोड़ गयी थी इस आशा में कि शायद वह चिड़िया फिर कभी वापस आये और वह अपनी पत्नी के पास लौट कर जा सके।

पर एक दिन रात को जब वह जागा हुआ था दुखी हो रहा था और कुछ कुछ सोच रहा था कोई बोला। उसने इस आदमी की केवल आवाज सुनी पर वह उसको दिखायी कहीं नहीं दिया।

"खुशियाँ कितनी बड़ी थीं। तुम यहाँ से लौटने के लिये बहुत दूर आ गये हो इसलिये अब तुम आगे बहुत सारे दुख देखोगे।"

जब नौजवान ने यह सुना तो वह उस रानी से मिलने के लिये बेचैन हो उठा और उस अमीरी में रहने के लिये भी जिसमें वह रह रहा था।

इसके बाद वह उस बड़े घर में घुसा जिसमें शेख रहते थे। तब उसको पता चला कि उन शेखों ने भी शायद ऐसा ही कुछ अनुभव किया होगा जैसा कि अभी उसके साथ हुआ है। और वही उनके रोने की वजह रही होगी। उसने उनको माफ किया।

दुख और चिन्ता से घिरा हुआ वह अपने कमरे में घुसा। वहाँ पहुँच कर भी उसका रोना और दुख मनाना कम नहीं हुआ। जब तक वह मरा तब तक उसने खाना पीना खुशबू इस्तेमाल करना हँसना सब कुछ छोड़ दिया था।

मरने के बाद वह भी शेखों के बराबर में दफ़न कर दिया गया।

11 लोमड़ा और भेड़िया[169]

एक बार की बात है कि एक लोमड़ा और एक भेड़िया दोनों एक ही मॉद में रहते थे। इस तरह वे दोनों काफी समय तक एक साथ रहे। पर भेड़िया लोमड़े को हमेशा दुखी करता रहता था।

पर एक दिन ऐसा हुआ कि लोमड़े ने भेड़िये को सलाह दी कि वह अपनी चालकियॉ छोड़ कर सीधा आदमी बन जाये जिससे कि वह दूसरों को नुकसान न पहुॅचाये।

उसने कहा कि अगर तुम अपनी शरारतें करते ही रहोगे तो अल्लाह तुम्हारी ताकत ऐडम के बेटे को दे देगा क्योंकि उसके पास बहुत सारी ताकतें हैं। वह आसमान से चिड़िया पकड़ सकता है। वह समुद्र से मछलियॉ पकड़ सकता है और यह सब उसके पास जो बढ़िया बढ़िया चीज़ें हैं उनसे कर सकता है।

इसलिये बराबरी के नियम से जीना सीखो। अपनी बुरी आदतें और दूसरों के साथ बुराई करना छोड़ दो इससे तुम्हें सुख मिलेगा।"

खैर भेड़िये ने उसकी कोई सलाह नहीं सुनी और उलटे उसको बड़ा खराब जवाब दिया — "तुम्हें इन सब बातों पर मुझे भाषण देने की कोई जरूरत नहीं है।"

---

[169] The Fox and the Wolf (Tale No 11) – a folktale from Arabia, Asia.
[My Note : I am sorry that this tale has been written in a very incoherent manner.]

उसके बाद उसने लोमड़े को एक ऐसा धक्का मारा जिससे वह बेहोश हो कर नीचे गिर पड़ा। जब वह होश में आया तो वह भेड़िये के चहरे की तरफ देख कर मुस्कुराया और फिर अपने कहे पर माफी मॉगते हुए उसने ये दो लाइनें कहीं —

"अगर तुम्हारे लिये मेरे प्यार में कोई खोट है या फिर मैंने कोई शर्मनाक काम किया है तो मैं उसके लिये माफी मॉगता हूॅ। और तुम्हारी दया किसी बुरे काम करने वाले के पास चली जायेगी जिसको माफी की जरूरत होगी।"

भेड़िये ने उसका माफीनामा स्वीकार कर लिया और उससे बुरा व्यवहार करना बन्द कर दिया। फिर उसने लोमड़े से कहा — "तुम उस चीज़ के बारे में बात नहीं करो जिससे तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं है। कहीं ऐसा न हो कि फिर उसके बदले में तुम्हें कोई ऐसी बात सुननी पड़ जाये जो तुमको अच्छी न लगे।"

लोमड़ा बोला — मैंने सुना और मैं मानता हूॅ। मैं वह बात नहीं कहूॅगा जो तुमको खुश नहीं करती। क्योंकि सन्तों ने कहा है "किसी को उस बात पर कोई खबर मत दो जिसके बारे में तुमसे पूछा न जाये। और उस बात का जवाब भी मत दो जब तक कि तुमको उस पर बोलने के लिये न कहा जाये।

जिनका तुमसे कोई सम्बन्ध नहीं है उनको छोड़ दो और केवल उनकी तरफ ध्यान दो जो तुमसे सम्बन्धित हैं। किसी बुरी बात पर

भी कोई सलाह मत दो क्योंकि वे तुम्हारे लिये बुरे के जवाब में बुरा ही ले कर आयेंगीं।"

जब भेड़िये ने उसका यह कहना सुना तो वह लोमड़े की तरफ देख कर मुस्कुराया और सोचने लगा कि उसके साथ कोई चालाकी खेली जाये। उसने सोचा कि लोमड़े को मार देना चहिये।

जहाँ तक लोमड़े का सवाल था वह भेड़िये के बुरे व्यवहार को सहता रहा और सोचता रहा "जो किसी को धोखा देता है वह उसके विनाश की वजह बनता है। क्योंकि ऐसा कहा गया है कि जो आदमी बददिमाग होता है उसको दुख मिलता है और जो अज्ञानी होते हैं वे पछताते हैं। जो डरता है वही सुरक्षित रहता है।

किसी में अगर सब चीज़ें ठीक अनुपात में हों और वह ठीक से व्यवहार करे तो वही अच्छा रहता है। यही कुलीनता की पहचान है। ऐसे खराब लोगों के साथ नफरत भरा व्यवहार करना चाहिये तो निश्चित रूप से उस आदमी को हटाया जा सकता है।"

यह सोच कर लोमड़ा भेड़िये से बोला — "अल्लाह अपने उस आदमी को माफ करता है और उसीसे खुश होता है जो पाप करता है। मैं तो बहुत कमजोर सा गुलाम हूँ और मैंने जुर्रत की कि मैंने तुम्हें सलाह दी।

अगर मुझे इस दर्द का पता होता जो तुम्हारे धक्का मारने से मुझे मिला तो मुझे यह भी पता होता कि हाथी भी इस दर्द के सामने

नहीं ठहर सकता और न इसे सह सकता। पर मैं उस धक्के के दर्द की शिकायत नहीं कर रहा क्योंकि मुझे उससे बहुत ख़ुशी हुई है।

क्योंकि अगर मुझ पर उसका बहुत ज़्यादा असर पड़ा होता तो भी वह ख़ुशी ही होता और सन्त का कहना है कि "गुरू की दी हुई मार शुरू में तो दुख देती है पर बाद में साफ शहद से भी मीठी होती है।"

भेड़िया फिर बोला — "मैं तुम्हारी गलती माफ करता हूँ और तुम्हारी बुरी आदतों को भी नहीं सोचता। पर तुम मेरी ताकत से बचे रहना और अपने आपको मेरा गुलाम समझना क्योंकि तुमने तो देखा ही है कि मैंने उनके साथ कैसा सख्त व्यवहार किया है जिन्होंने भी मुझको तंग करने की कोशिश की है।"

सो लोमड़े ने उसको यह कहते हुए लेट कर प्रणाम किया — "अल्लाह तुम्हारी उम्र बढ़ाये और तुम हर उसको अच्छी तरह से डॉट सको जो तुम्हारा अपमान करे।"

और वह भेड़िये से डरता रहा और वहॉ से चला आया।

इस सबके बाद लोमड़ा एक बार एक अंगूर के बागीचे में गया। वहॉ उसने देखा कि उस बागीचे की दीवार के पास एक गड्ढा ख़ुदा हुआ है। उसको कुछ शक सा हुआ। उसने अपने मन में सोचा दीवार के पास इस गड्ढा बनाने की जरूर ही कोई तो वजह होगी। क्योंकि यह कहा गया है कि जो कोई जमीन में कोई छेद देखता है और उसे बन्द नहीं करता और उसकी तरफ बढ़ने में सावधानी नहीं

बरतता तो वह या तो नष्ट हो जाता है या फिर खतरे में पड़ जाता है।

यह तो सबको मालूम है कि कुछ लोग अपने बागीचों में लोमड़ों की शक्ल बना कर रखते हैं और उसके सामने एक प्लेट में अंगूर भी रखते हैं ताकि लोमड़ा उसको देख सके और उसकी तरफ आये और फिर नष्ट हो जाये।

मुझे यकीन है कि यह गड्ढा जाल में फॅसने के लिये ही बनाया गया है। और यह भी कहा जाता है कि जो आदमी सावधानी बरतता रहता है वह आधा अक्लमन्द होता है। इस सावधानी बरतने का मतलब यह है कि मुझे इस गड्ढे को पहले जॉचना होगा कि कहीं यह गड्ढा मुझे मेरे नाश की तरफ न ले जाये। बहादुरी का मतलब यह नहीं है कि मैं अपना नाश करा लूँ।

सो वह इसके पास तक गया और सावधानी से उसके चारों ओर चक्कार काटा। चक्कर काटने पर उसे पता चला कि वह गड्ढा तो बहुत गहरा है जिसे बागीचे के मालिक ने उन जंगली जानवरों को पकड़ने के लिये खोदा है जो आ कर उसकी अंगूर की बेलों को बरबाद कर जाते हैं।

उसने देखा कि वह गड्ढा किसी चीज़ से ढका हुआ है सो वह यह कहते हुए वहॉ से पीछे हट गया कि "हे अल्लाह अच्छा हुआ कि मैंने इसको पहले से ही सावधानी से देख लिया वरना तो मैं तो खुद ही इसमें गिर जाता।

काश मेरा दुश्मन भेड़िया जिसने मेरी ज़िन्दगी दूभर कर रखी है इसमें गिर जाये। उसके बाद तो फिर मैं अकेला ही खुश रहूँगा। हो सकता है कि फिर यह बागीचा भी मेरा हो जाये और मैं सुरक्षित रूप से रह पाऊँ।"

बस यह सोच कर उसने अपना सिर हिलाया खूब ज़ोर से हँसा और फिर खूब ज़ोर से गाया — "अगर मैंने इस कुँए में अभी झाँक कर एक भेड़िया देखा होता जिसने मुझे बहुत तंग किया हुआ है और कड़वाहट पिलायी है तो मेरी जान बच जाती और भेड़िया मर जाता। फिर तो वह अंगूर के इस बागीचे में भी न आता और मुझे मेरा शिकार मिल गया होता।"

अपना यह गाना खत्म करने के बाद वह जल्दी जल्दी वहाँ से भाग लिया और भेड़िये के पास आया और उससे बोला —

"अल्लाह ने तुम्हारे लिये एक बागीचे में जाने का रास्ता बहुत आसान कर दिया है अब तुम वहाँ बिना कोई मेहनत किये जा सकते हो। यह केवल तुम्हारी खुशकिस्मती से ही मुमकिन हुआ है ताकि तुम उसका आनन्द ले सको।

इसलिये अल्लाह ने तुम्हें जिस चीज़ को देने का इरादा किया है उसका रास्ता भी उसने तुम्हारे लिये आसान कर दिया है और वह चीज़ भी तुमको उसने बहुतायत में दी है।"

यह सुन कर भेड़िया बोला — "यह जो तुमने अभी कहा है इसका क्या सबूत है।"

लोमड़ा बोला — "मैं अभी अंगूर के बागीचे की तरफ गया था तो मुझे वहाँ जा कर पता चला कि उस बागीचे का मालिक मर गया है सो मैं उस बागीचे में घुस गया तो मैंने वहाँ पेड़ों पर चमकते हुए फल लटकते हुए देखे।"

भेड़िये को लोमड़े की बात पर कोई शक नहीं हुआ। वह वहाँ जाने की उत्सुकता में उठ खड़ा हुआ और लोमड़े के साथ उस गड्ढे की तरफ चल दिया। उसका लालच उसको धोखा दे गया। लोमड़ा उसके पीछे रुक गया और ऐसे गिर पड़ा जैसे कि वह मर गया हो। मौके के अनुसार उसने यह गाया —

"क्या तुमको लैला[170] से बात करने का कभी लालच नहीं हुआ? यह लालचीपना ही है जो आदमी का दिमाग खराब कर देता है।"

जब भेड़िया गड्ढे के पास तक आया तो लोमड़ा उससे बोला — "अब तुम बागीचे में घुस सकते हो क्योंकि अब तुम बागीचे की दीवार तोड़ने की तकलीफ से बच गये। अब फल देना तो अल्लाह के हाथ में है।"

सो भेड़िया बागीचे में अन्दर जाने के लिये आगे बढ़ा और जब वह गड्ढे के ढक्कन के बीच में आया तो वह उस गड्ढे में गिर पड़ा। यह देख कर लोमड़ा तो खुशी से पागल हो गया।

---

[170] Leyla

अब उसकी चिन्ता और दुख सब खत्म हो गया था। उसने खुशी से गाया — "खुशकिस्मती ने मेरा मामला हल कर दिया है। इतने दिनों तक मैं इतनी परेशानी सहता रहा और अब उसने मुझे वह दिया है जो मैं चाहता था और वह हटा लिया है जिससे मैं डरता था।

इसलिये अब मैं उसके किये हुए वे सारे जुर्म माफ कर दूँगा जो उसने अब तक मेरे साथ किये हैं। यहाँ तक कि वह अन्याय भी जो उसने मेरे बाल सफेद होने पर किया था। अब भेड़िये के लिये कोई बचने का तरीका नहीं है। उसको तो मरना ही है। और बस फिर वह बागीचा मेरा हो जायेगा और मेरा अब कोई बेवकूफ साथी भी नहीं होगा।"

इसके बाद उसने गड्ढे में झाँका तो देखा कि भेड़िया तो वहाँ रो रहा था दुखी हो रहा था पछता रहा था। लोमड़ा भी उसके साथ रोने लगा। भेड़िये ने अपना सिर उठा कर लोमड़े की तरफ देखा और बोला — "क्या तुम्हारी मेरे साथ यही सहानुभूति है कि तुम मेरे साथ रोओ ओ अबू अल हुसैन[171]।"

लोमड़ा बोला — "जिसने तुम्हें इस गड्ढे में गिराया है उसकी कसम ऐसी कोई बात नहीं है। पर मैं तो तुम्हारी पुरानी ज़िन्दगी के बारे में सोच रहा हूँ कि तुम आज से पहले इस गड्ढे में क्यों नहीं गिर गये।

---

[171] Abu-l-Hoseyn

अगर तुम आज से पहले यानी मुझसे मिलने से भी पहले इसमें गिर गये होते तो मैं पहले से ही आराम से रह रहा होता। पर तुमने तो अपने निश्चित समय से भी ज़्यादा समय ले लिया।"

इस पर भेड़िया बोला — "ओ बुरा काम करने वाले। जाओ तुम अब मेरी मॉ के पास जाओ और उसे जा कर बताओ कि मेरे साथ क्या घटा है। हो सकता है कि वह मेरे यहॉ से निकल आने का कोई रास्ता सोच सके।"

लेकिन लोमड़ा बोला — "तुम्हारे बहुत ज़्यादा लालचीपने और उत्सुकता ने तुमको इस नाश की हालत में डाला है। अब तुम क्योंकि एक गड्ढे में गिर पड़े हो तो यहॉ से तुम कभी बच नहीं सकते।

ओ अज्ञानी भेड़िये तुमको तो यह पता ही नहीं है कि एक कहावत लिखने वाला कहता है "जो फल के बारे में नहीं सोचता वह खतरे से सुरक्षित नहीं रहता।"

भेड़िया बोला — "ओ अबू अल हुसैन। इस तरह से तो तुम मेरे लिये न तो कोई सहानुभूति दिखा रहे हो और न ही मेरी दोस्ती की कोई इच्छा कर रहे हो और न ही तुम मेरी ताकत से डर रहे हो।

जो कुछ भी मैंने तुम्हारे साथ किया है उसको भूल जाओ क्योंकि जो कुछ करना जिसकी ताकत में है वह न करके वह दूसरे को अगर माफ कर देता है उसको अल्लाह की कृपा मिलती है।

इसके बारे में एक कवि ने कहा है — "हमेशा अच्छा बीज बोओ चाहे तुम उसे किसी बुरी जमीन में ही क्यों न बोओ क्योंकि तभी भी वह फल देता है। यकीनन चाहे वह बहुत देर तक जमीन में क्यों न पड़ा रहे पर उसका फल तो उसी को मिलेगा जिसने उसे बोया है।"

लोमड़ा बोला — "ओ सबसे ज़्यादा अज्ञानी शिकार के जानवर और धरती के सबसे ज़्यादा बड़े बेवकूफ जंगली जानवर। क्या तुम अपने जिद्दीपने का घमंड का व्यवहार भूल गये हो। क्या तुम अपने साथियों के साथ अपना सम्बन्ध बनाये रखने का तरीका भी भूल गये हो?"

तुम उस कवि के कहने को नहीं मानते जो यह कहता है — "डराओ नहीं अगर तुम्हारे अन्दर ताकत है तो तुम करो। क्योंकि डराने वाला हमेशा बदले के खतरे में रहता है।

तुम्हारी ऑखें तो बन्द रहेंगी पर उसकी ऑखें हमेशा खुली रहेंगी जिसको तुमने दुखी किया है। वह हमेशा ही तुम्हारा बुरा सोचता रहेगा। अल्लाह की ऑखें तो कभी बन्द ही नहीं होतीं वे तो हमेशा ही खुली रहती हैं।"

भेड़िया बोला — "ओ अबू अल हुसैन। मेरी पुरानी गलतियों के लिये तुम मुझसे गुस्सा मत हो क्योंकि जो लोग दिल के अच्छे होते हैं और दया करते हैं वे अपनी उन्नति के लिये दूसरों को माफ कर देते हैं। किसी कवि ने कितना अच्छा कहा है —

“अगर तुम करने लायक हो तो किसी का भला जल्दी से जल्दी कर दो क्योंकि हर समय तो तुम लोगों का भला कर भी नहीं सकते।”

इस तरह भेड़िया लोमड़े से अपने को गड्ढे से बाहर निकालने के लिये विनती करता रहा और फिर बोला — “मुझे ऐसा लगता है कि शायद तुम्हारे पास मुझे इस नाश से बचाने का कोई तरीका नहीं है।”

इस पर लोमड़ा बोला — “ओ चालाक, ओ बदमाश, ओ दूसरों को दुख पहुँचाने वाले भेड़िये। तुम तो यहाँ से आजाद होने का सोचो भी नहीं क्योंकि यही तुम्हारे बुरे व्यवहार का नतीजा है।”

फिर उसने हँसते हुए अपना जबड़ा हिलाते हुए ये दो कविताऐं पढ़ीं — “अब मुझे तंग करने की कोशिश भी मत करना क्योंकि अब तुम अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाओगे। जो तुम मुझसे चाहते हो वह नामुमकिन है। तुमने जो बोया है वही काटो और दुखी हो।”

भेड़िया बोला — “ओ शिकार वाले जानवरों में भले जानवर। जहाँ तक मेरा अन्दाज है कि तुम सारे जानवरों में सबसे ज़्यादा वफादार हो क्योंकि तुम मुझे इस गड्ढे में यहाँ ऐसे नहीं छोड़ सकते।”

वह फिर बहुत रोया और बोला — “ओ लोमड़े जिसके मेरे ऊपर बहुत सारे उपकार हैं और जिसने बहुत कुछ दिया है जिसे मैं

गिन भी नहीं सकता। मेरे ऊपर जब भी कभी कोई बदकिस्मती आयी भी तो तुम हमेशा मेरी सहायता के लिये तैयार रहे। मेरी अब भी सहायता करो ओ लोमड़े।”

लोमड़ा बोला — “ओ बेवकूफ दुश्मन। तुम अपनी निर्दयता घमंड और जिद्दीपना छोड़ कर इतनी मुलायमियत और भलाई पर कैसे उतर आये। मैं तो तुम्हारे साथ इसलिये रहा कि क्योंकि मैं तो तुमसे तुम्हारे दबाव से डरता था।

और हर समय बिना किसी मेहरबानी की आशा के तुम्हारी बड़ाई करता रहता था पर अब डर तुम रहे हो क्योंकि सजा तुमको मिलने वाली है।” और फिर उसने नीचे लिखी दो लाइनें गायीं —

“ओ तू जो हमेशा निर्दयी रहा है अब तू अपने असली स्वभाव में आया है। अब तू अपने उस दर्द का स्वाद चख जिस शर्मनाक मुसीबत में तू फॅसा है। अब तू उन भेड़ियों के साथ रह जिनको मारा जा चुका है।”

भेड़िये ने फिर से उसकी विनती करते हुए कहा — “ओ भले आदमी तुम तो दुश्मनों की भाषा मत बोलो और न तुम उसकी ऑखों से देखो। इससे पहले कि मेरी आजादी का समय निकल जाये कम से कम इस समय तो तुम एक साथी होने का फर्ज निभाओ।

उठो मेरे लिये एक रस्सी ले कर आओ। उसका एक सिरा तो उस पेड़ से बॉध दो और उसका दूसरा सिरा यहॉ मेरे पास फेंक दो ताकि मैं उसे पकड़ सकूॅ। हो सकता है कि मैं अपने इस हाल से बच

कर निकल जाऊँ और फिर मैं अपना सारा खजाना जो भी मेरे पास है तुम्हें दे दूँ।"

लोमड़ा बोला — "तुमने बातचीत का यह सिलसिला बहुत लम्बा खींच दिया है। इससे तुम वहाँ से आजाद नहीं हो सकोगे। मुझसे तुम यहाँ से आजादी दिलाने की आशा मत रखना।

तुम तो अपने उस बुरे व्यवहार को और चालबाजियों को याद करो जो तुमने मेरे साथ की हैं और अब देखो कि तुम पत्थर मारे जाने के कितने करीब हो।

तुम तो अब केवल इस बारे में सोचो कि तुम्हारी आत्मा अब तुम्हारे इस शरीर को और इस दुनियाँ को छोड़ कर जाने वाली है। फिर तुम्हारा तो बिल्कुल ही नाश हो जायेगा। तुम किसी बुरी जगह में जा कर रहोगे।"

भेड़िया फिर बोला — "ओ अबू अल हुसैन। दोस्ती वापस करने की तैयारी करो। इतने निर्दयी भी न बनो। जान लो कि जो किसी आत्मा को नाश होने से बचाता है इसका मतलब है कि वह उसको ज़िन्दगी देता है जैसे उसने सारे संसार को ज़िन्दगी दे दी हो।

बुरे रास्ते पर मत चलो क्योंकि अक्लमन्द लोग उसे बुरा कहते हैं। और बुराई का इससे ज़्यादा सबूत और क्या हो सकता है कि मैं इस गड्ढे में हूँ और मरे जैसा दर्द महसूस कर रहा हूँ। और इस नाश को देखते हुए तुम इस लायक हो कि तुम मुझे इस खराब हालत से बाहर निकाल सकते हो जिसमें कि मैं पड़ गया हूँ।"

पर लोमड़ा बोला — "ओ जंगली संगदिल। मैं तो तेरे अच्छे कामों की तेरे बुरे स्वभाव से तुलना करता हूँ जैसे कि बाज़ और तीतर ने किया।"

भेड़िया बोला — "बाज़ और तीतर ने क्या किया।"

लोमड़ा बोला — "एक दिन मैं एक बागीचे में अंगूर खाने गया तो मैंने देखा कि एक बाज़ ने एक तीतर को दबोच लिया पर जब बाज़ ने तीतर को पकड़ तो लिया पर तीतर उसके पंजों से छूट गया और अपने घोंसले में चला गया। वहाँ जा कर वह छिप कर बैठ गया।

इस पर बाज़ ने उसका पीछा किया और बोला — "ओ बेवकूफ मैंने तुझे रेगिस्तान में भूखा देखा तुझ पर तरस खा कर मैंने तेरे लिये कुछ दाना इकट्ठा किया तुझको पकड़ा ताकि तू कुछ खा सके पर तू तो मेरे पास से ही उड़ गया।

मेरी तो समझ में ही नहीं आया कि तू उड़ा क्यों जबकि तुझे मरने की कोई जरूरत नहीं थी। आ जा बाहर आ और अपना दाना ले ले जो मैं तेरे लिये ले कर आया हूँ। इसे खा ले ताकि यह तुझे ताकत दे।"

तीतर ने जब यह सुना तो उसने बाज़ का विश्वास किया और अपने घोंसले में से बाहर निकल आया। जैसे ही तीतर बाहर आया तो बाज़ ने अपने पंजे उसके शरीर में घुसा दिये और उस पर कब्जा कर लिया।

उसके बाद तीतर बोला — “क्या तुम मुझे रेगिस्तान से यही खिलाने के लिये यहाँ ले कर आये थे कि “ले इसे खा ले जो मैं तेरे लिये ले कर आया हूँ ताकि यह तुझे ताकत दे।”

तूने मुझसे झूठ बोला है। भगवान करे अब तू मेरे जिस माँस को खाये वह तेरे लिये जहर बन जाये।”

फिर वैसा ही हुआ। जब बाज़ ने उसे खा लिया तो उसके पंख गिर पड़े उसकी ताकत जाती रही और कुछ ही देर में वह मर गया।”

लोमड़ा फिर बोला — “सो ओ भेड़िये तुम यह जान लो कि जो अपने भाई के लिये गड्ढा खोदता है वह उसमें खुद ही जल्दी गिर जाता है। और तुम मेरे साथ वैसा ही व्यवहार कर रहे हो।”

भेड़िया बोला — “ज़रा रुको। अपना यह भाषण मुझे देना बन्द करो और कहानियाँ सुना कर मेरे पुराने स्वभाव को मत जगाओ। मेरे लिये इतना ही काफी है कि मैं इस खराब हालत में पड़ा हूँ। और क्योंकि मैं ऐसी परेशानी में पड़ा हूँ कि इस समय दोस्त की तो बात ही छोड़ो मेरा तो दुश्मन भी मुझ पर तरस खायेगा।

कोई ऐसी तरकीब सोचो जिससे मैं यहाँ से बाहर निकल सकूँ और फिर बाहर निकलने में मेरी सहायता करो। अगर इस समय तुमको यह सब कुछ करने में मुश्किल लगती है तो कम से कम यही समझ कर यह कर लो कि सच्चे दोस्त ही अपने सच्चे दोस्त के लिये

यह सब सहते हैं। वे ही उनके लिये मुश्किल से मुश्किल काम करते हैं।

लोगों का कहना है कि अच्छा दोस्त भाई से भी ज़्यादा अच्छा होता है। अगर तुम मुझे किसी तरह से यहाँ से बाहर निकाल दो तो मैं तुम्हारे लिये इतनी सारी चीज़ें इकट्ठी कर दूँगा जितनी कि तुमको सारी ज़िन्दगी के लिये काफी होंगी। फिर मैं तुम्हें ऐसी तरकीबें बताऊँगा जिससे तुम किसी भी बागीचे में पहुँच सकोगे और फलों के पेड़ों से फल तोड़ सकोगे सो अब तुम खुश हो जाओ।"

लोमड़ा हँसते हुए बोला — "विद्वान लोगों ने तुम्हारे जैसे अज्ञानी लोगों के बारे में कितना अच्छा बोला है।"

भेड़िये ने तुरन्त पूछा — "और उन्होंने क्या बोला है।"

लोमड़ा बोला — "उन्होंने यह देखा है कि जो लोग शरीर और विचारों से अक्खड़ और रूखे होते हैं उनको अक्ल कम होती है और वे अज्ञानता के ज़्यादा करीब होते हैं।

तुम्हारी जानकारी के लिये ओ बेवकूफ यह सच है जो तुमने अभी कहा कि सच्चा दोस्त वही होता है जो अपने दोस्त की आजादी के लिये मुसीबत उठाता है पर तुमने तो अपनी अज्ञानता और बेवकूफी मुझे जता दी है क्योंकि मैं तुम्हारे जैसे धोखेबाज का वफादार दोस्त कैसे बन सकता हूँ।

क्या कभी तुमने मुझे अपना वफादार दोस्त समझा है जबकि मैं तुम्हारा दुश्मन तुम्हारी बदकिस्मती में खुश हो रहा हूँ। ये शब्द तो

तीरों से लगे घावों से भी ज़्यादा दर्द देने वाले हैं अगर तुम समझो तो।

और जैसा कि तुम कह रहे हो कि तुम मुझे वे तरीके सिखाओगे जिनसे मैं कई बागीचों में जा सकूँगा और फलों से भरे पेड़ों से फल तोड़ सकूँगा। ओ धोखा देने वाले यह कैसे हो सकता है। तुमको तो खुद अपने आपको भी ऐसी कोई तरकीब नहीं मालूम जिससे तुम खुद अपने नाश की जगह से बच जाओ। जब तुम अपने आपका ही भला नहीं कर सकते तो मैं भी तुम्हारी सलाह कैसे मान सकता हूँ।

अगर तुमको अपने आपको कुछ तरकीबें आती हैं तो तुम उनके सहारे से अपने आपको ही इस बदनसीबी से क्यों नहीं बचा लेते। उसके लिये मैं भी अल्लाह से प्रार्थना करता हूँ कि वह तुमको यहाँ से बाहर निकलने में सहायता न करे।

ओ बेवकूफ अगर तुम कोई तरकीब जानते तो इससे पहले कि तुम दूसरों को सलाह देते तुम अपने आप को ही मारे जाने से बचा लेते। पर तुम तो उस इन्सान की तरह हो जिसको बीमारी लग गयी हो और उसके पास वैसी ही बीमारी लगा कोई दूसरा आदमी आया हो और वह उससे कहे कि "क्या मैं तुम्हारी बीमारी ठीक कर दूँ।"

फिर वह पहला आदमी उससे यह कहे — "तुम पहले अपने आपसे ही उसका इलाज करना शुरू क्यों नहीं करते।" और उसको छोड़ कर वहाँ से चला जाये। सो भेड़िये तुम उसी तरह के लोगों में

आते हो। इसलिये जहाँ हो वहीं रहो और जो तुम्हारे ऊपर बीत रहा है उसी को सहने की कोशिश करो।"

जब भेड़िये ने लोमड़े के ये शब्द सुने तो वह जान गया कि लोमड़े के दिल में उसके लिये कोई अच्छी भावना नहीं है। वह बहुत देर तक रोता रहा।

वह बोला — "मैं हमेशा ही अपनी तरफ से लापरवाह रहा पर अबकी बार अगर अल्लह मुझे इस हालत से बचा दे तो मैं यकीनन उससे अपने बुरे व्यवहार के लिये पछतावा करूँगा जो मुझसे कमज़ोर रहा होगा।

मैं हमेशा ऊन पहनूँगा और पहाड़ में पर चढ़ूँगा। अल्लाह के गुण गाऊँगा और हमेशा उसकी सजा से डरूँगा। मैं दूसरे जंगली जानवरों से अपने आपको बिल्कुल ही अलग कर लूँगा। मैं हमेशा उन लोगों को खाना खिलाऊँगा जो धर्म और गरीबों की मदद करेंगे।"

यह कह कर वह फिर रोने लगा जिसे देख कर लोमड़े का दिल पसीज गया और उसके लिये दया से भर गया। उसके ये शब्द उसके बुरे व्यवहार और घमंड के पछतावे के सूचक थे सो उसको उस पर दया आ गयी।

वह खुशी से उछल पड़ा और गड्ढे के किनारे पर आ कर बैठ गया। उसने अपने पीछे वाले पैर जमीन में अड़ा कर उन पर बैठ गया। अपनी पूँछ उसने गड्ढे में डाल दी।

यह देख कर भेड़िया उठा और अपने पंजे ऊपर की तरफ फैला कर लोमड़े की पूँछ की तरफ किये और उसकी पूँछ पकड़ कर अपनी तरफ खींच लिया। लोमड़ा नीचे गड्ढे में गिर पड़ा।

अब भेड़िया लोमड़े से बोला — "ओ बेदर्द लोमड़े। तुम मेरी बदकिस्मती पर क्यों खुश हो रहे थे। अब तुम मेरे साथी हो गये हो मेरे काबू में हो। मेरे साथ मेरे गड्ढे में हो सो अब तुम्हारी सजा भी जल्दी ही शुरू हो गयी है।

सन्तों का कहना है कि "कोई भी अगर अपने भाई को खराब तरीके से मार कर अपना पेट भरता है तो उसको भी वैसा ही भुगतना पड़ेगा।"

और किसी कवि ने तो यह बहुत ही अच्छा कहा है "जब किसी की किस्मत चमकती है और दूसरों के पास से निकल जाती है तो जो हमारे ऊपर हॅसते हैं उनसे कहो कि ओ खुशियॉ मनाने वालो जागो तुम भी इसी तरह से भुगतोगे जैसे कि हमने भुगता है।

इससे पहले कि तुम मेरा मरना देखो अब मुझे तुम्हें मारने की तैयारी करनी चाहिये।"

लोमड़े ने सोचा "अब तो मैं इस निर्दयी के फन्दे में फॅस गया। इस हालत में मुझे अपनी चालाकी और धोखाधड़ी से काम लेना चाहिये। ऐसा कहा गया है कि स्त्री अपने गहने खुशी के दिनों में पहनने के लिये बनवाती है।

पर एक कहावत यह भी है कि "ओ आँसू मैंने तुझे बचा कर नहीं रखा है। मैं अपने दुख के समय तुझे काम में लाऊँगी।" और अगर मैं अपनी इस मुसीबत के समय इस जंगली जानवर के साथ अपनी तरकीबें काम में नहीं लाऊँगा तो मैं तो यकीनन ही मर जाऊँगा।

किसी कवि ने कितना अच्छा कहा है "अपनी धोखाधड़ी की सहायता ले क्योंकि तू एक ऐसे समय में रहता है जिसमें लोग जंगल के शेर हैं। अपने चारों तरफ भाले लगा कर रख ताकि तू ज़िन्दा रह सके। फल चुन। पर अगर वे दूर लगे हों तो केवल पत्तों से ही काम चला ले।"

सो यह सोच कर लोमड़ा भेड़िये से बोला — "ओ बहादुर ताकतवर जंगली जानवर तुम मुझे मारने में जल्दी मत करो। अगर तुम थोड़ा रुक जाओगे और उस पर विचार करोगे जो मैं तुमसे अभी कहने जा रहा हूँ तब तुम्हें पता चलेगा कि मैंने क्या सोच रखा है।

और अगर तुम मुझे जल्दी मार दोगे तो तुम्हें मुझे इस तरह से मारने में कोई फायदा नहीं होगा बल्कि हम दोनों फिर यहीं एक साथ ही मरेंगे।"

भेड़िया बोला — "ओ धोखेबाज। तुम किस तरीके से अपनी और मेरी सुरक्षा की आशा करते हो कि मैं तुम्हें देर से मारूँ। पहले तुम मुझे अपना विचार बताओ।"

लोमड़ा बोला — “मेरा विचार ऐसा है कि उसमें तुम्हें मेरी सहायता करनी पड़ेगी। क्योंकि जब मैंने तुम्हारे वायदे सुने तुम्हारे पुराने पापों का पछतावा सुना पछतावा न करने का अफसोस सुना और अच्छे काम करने का इरादा सुना।

और सुना कि अबसे तुम अपने साथियों के साथ कोई बुरा व्यवहार नहीं करोगे अंगूर और दूसरे फल खाना पसन्द करोगे नम्रता से बात करोगे अपने नाखून काट दोगे अपने कुत्ते वाले दाँत तोड़ दोगे हमेशा ऊन पहनोगे।

अगर अल्लाह तुमको इस हालत में तुम्हारी सहायता करेगा तो तुम अल्लाह को बलि भी दोगे।

तो मेरे दिल में तुम्हारे लिये दया आ गयी। हालाँकि उससे पहले मैं तुमको मारने की सोच रहा था। पर उसके बाद मुझे लगा कि मुझे तुम्हें बचाना चाहिये तो मैंने अपनी पूँछ गड्ढे में डाल दी ताकि तुम मजबूती से उसे पकड़ लो और उसको पकड़ कर गड्ढे से बाहर आ जाओ पर तुमने ऐसा कोई विचार नहीं दिखाया।

तुम अभी भी बहुत सख्त और मारने पीटने वाला व्यवहार करते हो। न ही तुमने नम्रतापूर्वक बाहर निकलने की कोई इच्छा दिखायी। बल्कि तुमने तो मेरी पूँछ पकड़ कर मुझे इस तरह गड्ढे में खींचा कि मुझे लगा कि मेरी तो जान ही निकल गयी और मैंने सोचा कि मैं तुम्हारे साथ ही मर गया। और अब मैं और तुम इस गड्ढे से कभी नहीं निकल पायेंगे।

पर अभी भी एक तरकीब है। अगर तुम उस तरकीब से राजी हो जो मैं अभी तुम्हें बताने जा रहा हूँ तो हम दोनों यहाँ से बच जायेंगे। उसके बाद यह तुम्हारे ऊपर निर्भर करेगा कि तुम अपना कहा करते हो या नहीं और फिर मैं तुम्हारा साथी बन जाऊँगा।"

भेड़िया बोला — "और तुम्हारी वह तरकीब क्या है जिसको मुझे मानना है?"

लोमड़ा बोला — "तुम अपने आपको सीधा खड़ा कर लो और मैं तुम्हारे सिर पर चढ़ कर जमीन पर पहुँच जाऊँगा। और जब मैं वहाँ पहुँच जाऊँगा तो मैं तुम्हारे लिये कोई ऐसी चीज़ ले कर आऊँगा जिसे तुम पकड़ कर ऊपर आ सको।"

पर भेड़िया बोला — "मुझे तुम्हारी बातों पर भरोसा नहीं है। क्योंकि सन्तों का कहना है कि जब वह आदमी उस पर भरोसा करता है जिससे उसको उस समय नफरत करनी चाहिये तो वह जरूर ही गलती पर है।

और यह भी कहा गया है कि वह जो ऐसे बेभरोसे वाले आदमी पर भरोसा करता है वह जरूर धोखा खाता है। और जो इस बात की कोशिश भी करता है तो वह पछताता है। किसी कवि ने यह भी कितना अच्छा कहा है —

"तुम्हारी राय बुराई से अलग नहीं होनी चाहिये क्योंकि बुरी राय अक्लमन्दों की सबसे ज़्यादा मजबूत विशेषता है। जो लोग

भला करते हैं या फिर किसी के बारे में ठीक राय रखते हैं उन्हें कोई भी चीज़ किसी भी खतरे में नहीं डाल सकती।

एक दूसरे कवि ने कहा है — "हमेशा किसी के बारे में भी कोई बुरी राय मत बताओ ताकि तुम सुरक्षित रह सको। जो आदमी सावधानी से रहता है उसके ऊपर मुसीबतें कम आती हैं। अपने दुश्मन से मुस्कुराते हुए खुशी खुशी मिलो पर उससे लड़ने के लिये हमेशा ही तैयार रहो।

और एक बात और — "तुम्हारा सबसे बड़ा दुश्मन तो तुम्हारे सबसे पास है जिस पर तुम विश्वास करते हो। ऐसे आदमियों से और उनके दोस्तों से बच कर रहो। किस्मत के बारे में अच्छा सोचना कमजोरी है। उसके बारे में बुरा सोचो और उससे डर कर उसकी इज़्ज़त करो।"

लोमड़ा बोला — "यकीनन हर एक के बारे में बुरा सोचना ठीक नहीं है पर किसी के बारे में ठीक राय रखना बढ़िया आदमी की निशानी है। इसका नतीजा होता है कि तुम खतरों से बच जाते हो।

यह तुम्हारे लायक है कि तुम इन हालात में से अपने बच कर भाग जाने के लिये तरकीब सोचते हो तुमको ऐसा ही करना चाहिये और यह तो और भी ज़्यादा अच्छा होगा अगर हम दोनों ही बजाय मर जाने के यहॉ से बच कर निकल जायें।

इसलिये मेरे बारे में अपने बुरी राय छोड़ दो और बुरे विचार छोड दो। अगर तुम मेरे बारे में ठीक से सोचोगे तो मैं तुम्हारा दो में से एक काम तो कर ही दूँगा।

या तो मैं तुम्हारे लिये केई ऐसी चीज़ ला दूँगा जिसको पकड़ कर तुम इस गड्ढे से बाहर आ जाओ या फिर मैं तुम्हारे साथ वैसा ही करूँगा जैसा कि तुम मेरे बारे में सोचते हो यानी मैं तुमको यहीं छोड़ दूँगा और मैं बच कर भाग जाऊँगा।

पर मैं ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि मैं तुम्हारी जैसी हालत में पड़ कर अपने आपको सुरक्षित महसूस नहीं कर सकता। वह मेरे लिये सजा होगी। एक कहावत में ऐसा कहा गया है कि "सच बोलना तो अच्छी बात है लेकिन नमकहरामी तो सब में होती है।"

यह तो अच्छा है कि तुम मुझ पर भरोसा रखते हो और मैं भी बदकिस्मतियों से अनजान नहीं हूँ। इसलिये जल्दी करो और हमारे भाग जाने की तरकीब पर काम करो। क्योंकि तुम्हारे लिये यह सारा मामला सोचने और बहस करने के लिये बहुत गहरा है।"

भेड़िया बोला — "हालाँकि मैं तुम्हारे सच बोलने पर कोई भरोसा नहीं करता। मुझे मालूम है कि तुम्हारे दिल में क्या है। जबसे तुमने मेरा पछताना सुना है तबसे तुम्हें मेरे ऊपर भरोसा हो गया है और तुम मेरी आजादी चाहते हो।

मैंने भी सोचा कि अगर वह सच कह रहा है तो लगता है कि उसने अपनी बुराइयों में रद्दो बदल कर ली है। और अगर यह झूठ

बोल रहा है तो इसका अल्लाह इसको सजा देगा। इसलिये मैं अब तुम्हारी बात मान लेता हूँ। और अगर तुम अब मेरे साथ ठीक से व्यवहार करोगे तो तुम्हारी बेवफाई ही तुम्हारे नाश की वजह बनेगी।"

कह कर भेड़िया गड्ढे में अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और लोमड़े को अपने कन्धों पर चढ़ा लिया। अब उसका सिर जमीन तक पहुँच रहा था। वह तुरन्त ही उछल कर जमीन पर कूद गया पर वहाँ वह कुछ देर तक बेहोश सा पड़ा रहा।

भेड़िया बोला — "ओ मेरे दोस्त लोमड़े। न तो मुझे भूलना और न ही मुझे आजाद कराने में देर करना।"

यह सुन कर लोमड़ा बहुत ज़ोर से हँस पड़ा और बोला — "मैंने तो तुम्हें धोखा दे दिया। यह तो बस मैंने तुमसे केवल मजाक किया था। अपने आपको तुम्हारे काबू में से निकाला था। क्योंकि जब मैंने तुम्हारा पछतावे का स्वीकार करना सुना तो मुझे बहुत खुशी हुई और मैं नाचने लगा।

उस नाचने में मेरी पूँछ गड्ढे में चली गयी और तुमने उसे खींच लिया। मैं तुम्हारे पास आ गिरा। फिर अल्लाह ने मुझे तुमसे आजाद कराया। तो तुम क्या सोचते हो कि जब तुम बुराई के साथ हो तो भी मैं तुमको मारने में सहायता न करूँ।

सुनो, कल मैंने एक सपना देखा कि मैं तुम्हारी शादी में नाच रहा हूँ। मैंने यह सपना एक सपने का मतलब बताने वाले को सुनाया तो

उसने मुझसे कहा कि "तुम एक बहुत ही डरावने खतरे में पड़ने वाले हो लेकिन फिर बच जाओगे।

इसलिये मुझे पता था कि मेरा तुम्हारे हाथों में पड़ना और फिर उसमें से बच निकलना उसी सपने का नतीजा है।

ओ बेवकूफ तुम्हें तो यह पता है कि मैं तुम्हारा दुश्मन हूँ तो तुम अपनी ज़रा सी भी समझ से यह आशा कैसे करते हो कि मैं तुम्हें यहाँ से निकाल दूँगा। खास करके जब जबकि तुमने मेरी इतनी सख्त भाषा सुनी है।

और फिर मैं तुम्हें आजाद कराने की कोशिश ही क्यों करूँगा जबकि विद्वान लोगों ने कहा है कि जब किसी पापी को मार दो तो लोगों का भला होता है और धरती की सफाई हो जाती है।

क्या मैं डरा नहीं था जब मैंने देखा कि मैं तुम्हारे साथ बेवफाई कर रहा हूँ। यह दुख तो उस दुख से भी ज़्यादा था जो नमकहरामी करने में होता है। तुम्हारी आजादी के बारे में मैं सोचूँगा।"

जब भेड़िये ने लोमड़े के ये शब्द सुने उसने पछतावे में आ कर अपना पंजा काट लिया। फिर वह बड़ी मुलायमियत से बोला।

उसने बड़ी नीची आवाज में उससे कहा — "सचमुच तुम लोमड़े लोग जबान के बहुत मीठे होते हो और मजाक करने में चतुर होते हो। यह तो तुम लोगों की मजाकिया आदत है। पर हर समय खेल और मजाक अच्छा नहीं होता।"

लोमड़ा बोला — "ओ बेवकूफ। मजाक की भी कोई हद होती है जिसको कि उसका करने वाला पार नहीं करता। तुम यह मत सोचना कि अल्लाह मुझे तुमको फिर से दे देगा जबकि एक बार उसने मुझे तुमसे आजाद कर दिया है।"

भेड़िया बोला — "तुम ही एक हो जो मुझे यहाँ से आजाद कराने के बारे में सोच सकते हो क्योंकि हम लोग पुराने भाईचारे और दोस्ती से जुड़े हैं जो अभी भी हमारे अन्दर है। और अगर तुम मुझे आजाद करा दोगे तो मैं तुमको बहुत कुछ दूँगा।"

इस पर लोमड़ा बोला — "सन्तों ने कहा है "जो आदमी अज्ञानी और नीच हो उसको दोस्त मत बनाओ क्योंकि उसकी वजह से तुम्हें इज़्ज़त नहीं मिलेगी बल्कि हमेशा तुमको उसकी वजह से नीचा ही देखना पड़ेगा।

किसी झूठ बोलने वाले को भी अपना भाई मत बनाओ क्योंकि अगर तुम कुछ अच्छा करोगे तो वह उसको झूठ बोल कर छिपाने की कोशिश करेगा और अगर तुम कुछ बुरा करोगे तो उसे वह फैलायेगा।"

इसके अलावा सन्तों ने यह भी कहा है "सिवाय मौत के हर चीज़ के लिये कोई न कोई तरकीब होती है और भ्रष्टाचार[172] के अलावा सब चीज़ें ठीक की जा सकती हैं। किस्मत के अलावा हर चीज़ दूर भगायी जा सकती है।

---

[172] Translated for the word "Corruption"

और जिस चीज़ को बदले में देने के लिये तुम कह रहे हो जिसे तुमसे लेने का मेरा फर्ज बनता है तो इस बात के लिये मैं तुम्हारा उस सॉपिन से मुकाबला करता हूँ जो हावी[173] से बच कर भाग रही थी।

जब एक आदमी ने उसको इतनी डरी हुई हालत में भागते देखा तो उससे पूछा — "ओ सॉपिन। तुझे क्या हुआ?"

सॉपिन बोली — "मैं हावी से डर कर भाग रही हूँ क्योंकि वह मेरे पीछे पड़ा हुआ है। अगर तुम मुझे उससे बचा लो और अपने अन्दर कहीं छिपा लो तो इसके लिये मैं तुम्हारा बहुत अच्छा बदला चुकाऊँगी और तुम्हारे साथ हर तरह का दया का व्यवहार करूँगी।"

सो इस इनाम को पाने के लिये और अपनी अच्छाई करने के बदले में कुछ पाने के लिये उस आदमी ने उसको उठा लिया और अपनी जेब में रख लिया।

जब हावी आया और अपने रास्ते चला गया तो जिससे वह डरती थी वह तो वहाँ से चला गया तो आदमी ने उससे कहा — "मेरे तुझे उससे इस बचाने की कीमत कहाँ है जिससे तू इतनी डर रही थी।"

यह सुन कर सॉपिन बोली — "तो अब तुम यह बताओ कि मैं तुहारे शरीर के किस किस हिस्से में काटूँ। क्योंकि इतना तो तुम जानते ही हो कि इससे ज़्यादा हम तुम्हें और कुछ नहीं दे सकते

[173] Haawee – maybe hunter or somebody similar

हैं।" यह कह कर उसने उसके शरीर पर एक जगह काट लिया जिससे वह मर गया।

और ओ बेवकूफ। मैं तुम्हारा मुकाबला उस आदमी से करता हूँ जिसने सॉपिन को बचाया था।

क्या तुमने एक कवि का लिखा हुआ नहीं सुना — "उस आदमी पर कभी विश्वास मत करो जिसके दिल में तुम्हारे लिये गुस्सा भरा हुआ है और न कभी यही सोचना कि उसके दिल से तुम्हारे लिये गुस्सा खत्म हो गया है। सॉप जो देखने में बहुत चिकने लगते हैं शानदार चाल से चलते हैं पर जहर छिपाये रहते हैं।"

भेड़िया बोला — "ओ बढ़िया और सुन्दर दिखने वाले जानवर। न तो तुम मेरी हालत से अनजान बनो और न उस डर से जो मेरी वजह से लोगों के दिल में है और जिसकी वजह से वे मेरी इज़्ज़त करते हैं।

तुम तो जानते ही हो कि मैं मजबूत से मजबूत रूप से सुरक्षित जगहों में चला जाता हूँ और बेलों को नोच देता हूँ इसलिये अब तुम वैसा ही करो जैसा कि मैं तुमसे कहता हूँ और मेरी उसी तरह से सेवा करो जैसे कि कोई नौकर अपने मालिक की करता है।

ओ अज्ञानी बेवकूफ। जो कोई ऐसी चीज़ पाना चाहता है जो बहुत ऊँची है तो मुझे तुम्हारी बेवकूफी पर और तुम्हारे इस रूखे व्यवहार पर आश्चर्य है जिसमें तुम मुझसे अपनी सेवा करने के लिये कह रहे हो जैसे मैं कोई तुम्हारा गुलाम हूँ।

पर तुम जल्दी ही देखोगे कि तुम खुद कहॉ जा कर गिरते हो – पत्थरों पर जहॉ तुम्हारा सिर फूट जायेगा और जहॉ तुम्हारे कुत्ते जैसे दॉत टूट जायेंगें।"

लोमड़ा इस तरह कहते हुए एक ऊॅचे ढेर पर बैठ गया जहॉ से वह गड्ढे को अच्छी तरह देख सकता था। वहॉ बैठ कर वह बागीचे वालों से इतने ज़ोर से बोला कि बागीचे में काम करने वालों का ध्यान उसकी तरफ खिंच गया और वे उसके और उस गड्ढे के पास आ गये।

जब तक वे गड्ढे के पास तक आये वह उनके पास वहीं जमा बैठा रहा और जैसे ही वे गड्ढे के पास तक आये वह वहॉ से उठ कर भाग लिया।

उसके जाने के बाद उन लोगों ने गड्ढे में झॉका तो उसमें उनको भेड़िया बैठा दिखायी दिया। बस तुरन्त ही उन्होंने उसको पत्थर मार मार कर मार दिया। फिर उसके ऊपर लकड़ियॉ फेंक दीं और उसको भालों से कोंच कर वहॉ से चले गये।

जब सब लोग वहॉ से चले गये तो लोमड़ा वहॉ आया और गड्ढे के ऊपर खड़े हो कर भेड़िये की तरफ देखा। वह मर चुका था तो उसने खुशी से ये लाइनें पढ़ीं —

"किस्मत ने भेड़िये की जान ले ली और उसे ले गयी – खुशियों से बहुत दूर, अल्लाह करे उसकी आत्मा नष्ट हो जाये। अबोस

तिरहान। तुमने कितना समय लिया मुझे नष्ट करने में पर अब ये परेशानियाँ तुम्हारे अपने ऊपर ही आ कर पड़ गयीं।

तुम इस गड्ढे में गिर पड़े हो अब इसमें और कोई नहीं उतरेगा और अगर उतरेगा तो उसको इसमें मौत के थपेड़े खाने पड़ेंगे।"

इसके बाद लोमड़ा उस अंगूर के बागीचे में अकेला आनन्द से रहा – कोई खतरा नहीं कोई परेशानी नहीं।

12 गड़रिया और जोगी[174]

कुछ ऐसा कहा जाता है कि भारत के कच्छ प्रान्त में एक राजा राज करता था जिसका नाम लाखी[175] था। उसी के राज्य में एक जोगी भी रहता था। वह एक बहुत ही अक्लमन्द आदमी था और जड़ी बूटियों से बहुत अच्छी दवाऐं बनाता था।

कई साल से वह एक खास घास की तलाश में था जिसकी जड़ें अगर जलायी जातीं और उस आग में एक आदमी डाला जाता तो उसका सारा शरीर सोना बन जाता।

उस शरीर के सारे हिस्से उसमें से शरीर को बिना कोई नुकसान पहुँचाये निकाले जा सकते थे जिससे वह शरीर फिर से जानदार हो सकता था।

एक बार ऐसा हुआ कि एक बार यह जोगी बकरों के एक झुंड के पीछे पीछे जा रहा था कि उसने देखा कि एक बकरी वही घास खा रही है जिसकी उसको बरसों से तलाश थी।

उसने उसको तुरन्त ही वहॉ से जड़ सहित उखाड़ लिया और उस गड़रिये से कहा कि वह उसके लिये आग जलाने के लिये लकड़ियॉ इकट्ठी कर दे। जब उसने लकड़ियॉ इकट्ठी कर दीं तो उसने उसमें आग जलायी। उस आग में वह घास फेंक दी गयी।

---

[174] The Shepherd and the Jogie (Tale No 12) – a folktale from India, Asia.

[175] Lakeh – the name of the King

जोगी ने सोचा कि वह अपना पहला प्रयोग इस गड़रिये पर ही करेगा सो लालची होने की वजह से उसने उससे कहा कि वह उस आग के चारों तरफ कुछ चक्कर काटे।

अब उस आदमी को इसमें कुछ गड़बड़ चाल लगी तो वह मौके की तलाश में रहा। और जैसे ही उसको मौका मिला उसने जोगी को पकड़ कर उस आग में डाल दिया और उसको जल जाने दिया।

अगले दिन जब वह उस जगह पर लौटा तो उसके आश्चर्य की तो हद ही नहीं रही। उसके सामने तो लाश नहीं बल्कि सोने की एक आदमी की मूर्ति पड़ी हुई थी। उसने तुरन्त ही उस मूर्ति के शरीर का एक हिस्सा काट लिया और उसे छिपा दिया।

अगले दिन वह वहॉ फिर से आया उसका दूसरा हिस्सा लेने के लिये तो इस बार तो उसका आश्चर्य बहुत ही बढ़ गया जब उसने देखा कि उस शरीर का जो हिस्सा उसने पहले दिन जहॉ से काटा था वहॉ एक और नया हिस्सा निकल आया है।

अब क्या था गड़रिया तो बहुत जल्दी ही बहुत धनवान हो गया। उसने अपने धनवान होने का भेद राजा लाखी को बताया तो वह भी उसी तरीके से सोना इकट्ठा करके बहुत धनवान हो गया। अब वह रोज सवा लाख रुपया गरीबों को दान देता था।

13 बेवफा वजीर[176]

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके एक ही बेटा था। उसने उसकी शादी एक दूसरे राजा की बेटी के साथ पक्की कर दी थी। पर वह राजकुमारी जिसके साथ उसकी शादी पक्की की थी बहुत सुन्दर थी।

अब राजकुमारी के चाचा का एक लड़का था जो उससे शादी करना चाहता था सो उसको मना कर दिया गया था। इसलिये राजकुमारी के पिता ने राजकुमार के पिता के वजीर को बहुत सारी भेंटें भेजीं ताकि या तो वह उसे मार दे और या फिर उसे ऐसे उकसाये कि वह उस राजकुमारी से शादी का इरादा ही छोड़ दे। वजीर इस बात पर राजी हो गया।

तब राजकुमारी के पिता ने उस राजकुमार को बुलवाया जिसके साथ उसने अपनी बेटी की शादी पक्की की थी ताकि वह उसकी उस राजकुमारी से उसकी जान पहचान करवा दे जिसको उसकी पत्नी बनना था।

सो राजकुमार के पिता ने उसको अपने नीच वजीर के साथ उसको राजकुमारी के पिता के पास भेज दिया। साथ में उनके उसने बहुत सारी भेंटें और एक हजार घुड़सवार कर दिये।

---

176 The Perifidious Vizier (Tale No 13) – a folktale from Arab, Asia.

जब वे लोग रेगिस्तान में से हो कर जा रहे थे तो वजीर को याद आया कि वहीं पास में ही पानी का एक सोता था जिसका नाम ऐज़हारा[177] था। उस सोते के बारे में उसने सुना था कि जो कोई उसका पानी पीता था तो अगर वह कोई आदमी होता था तो वह स्त्री में बदल जाता था।

सो उसके दिमाग में एक शरारत सूझी और उसने सब सिपाहियों को उस तरफ चलने के लिये कहा और राजकुमार को भी अपने साथ उधर चलने के लिये उकसाया।

जब वे उस सोते पर आ गये तो राजा का बेटा अपने घोड़े से उतरा सोते पर गया हाथ धोये और उससे पानी पिया। लो उस सोते का पानी पीते ही वह तो एक स्त्री बन गया। यह देख कर तो वह रो पड़ा और बेहोश हो गया।

वजीर ने उससे पूछा — "क्या हुआ राजकुमार?"

राजकुमार ने उसे बताया कि उसे क्या हुआ था। यह सुन कर वजीर ने भी उसको यह दिखाया कि वह बहुत दुखी था। राजा ने वजीर को इस घटना की सूचना देने के लिये अपने पिता के पास वापस भेजा।

उसने यह तय कर लिया था कि जब तक वह अपने हालात बदल नहीं लेगा यानी या तो वह ठीक नहीं हो जायेगा और या फिर

[177] Ez-zahara named spring of water

मर नहीं जायेगा वह न तो अब राजकुमारी के घर जायेगा और न ही वह अपने घर जायेगा।

वह उस फव्वारे के पास बिना खाये पिये तीन दिन तीन रात रहा। चौथी रात को उसके पास एक घुड़सवार आया जिसके सिर पर ताज था। ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी राजा का बेटा हो।

उसने राजकुमार से पूछा — "ओ नौजवान तुम्हें यहाँ कौन ले कर आया?"

राजकुमार ने उसे अपनी सारी कहानी बता दी। जब घुड़सवार ने उसकी कहानी सुनी तो उसको उसके ऊपर दया आ गयी। वह बोला — "यह तुम्हारे पिता का नीच वजीर है जिसने तुमको यहाँ इस मुसीबत में ला कर छोड़ा है क्योंकि इस सोते के बारे केवल एक आदमी ही जानता है।"

फिर उसने उसको उसके घोड़े पर सवार होने के लिये कहा तो राजकुमार अपने घोड़े पर चढ़ गया। घुड़सवार ने राजकुमार से कहा — "तुम मेरे साथ मेरे घर चलो। आज की रात तुम हमारे मेहमान हो।"

राजकुमार ने पूछा — "इससे पहले कि मैं आपके साथ जाऊँ क्या आप मुझे बतायेंगे कि आप कौन हैं?"

घुड़सवार बोला — "मैं जिन्नों के राजा का बेटा हूँ और तुम आदमियों के राजा के बेटे हो। अब तुम अपना मन ठीक रखो और

खुश खुश उन चीज़ों को देखो जिनसे तुम्हारा दुख और तुम्हारी चिन्ता दूर हो क्योंकि इससे मुझे भी राहत मिलेगी।"

इस तरह सुबह होने पर राजकुमार अपने सिपाहियों को वहीं छोड़ कर उस आदमी के साथ चल दिया। वे लोग आधी रात तक चलते रहे। तब जिन्नों के राजा के बेटे ने राजकुमार से कहा — "क्या तुम्हें मालूम है कि इस समय में हम यहाँ कितनी दूर आ गये हैं?"

"नहीं मुझे नहीं मालूम।"

जिन्न राजकुमार ने कहा — "हम लोगों ने जब कोई बराबर चलता रहे उस हिसाब से एक साल की यात्रा पूरी कर ली है।"

आदमी राजकुमार को इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह तुरन्त ही बोला — "तो अब मैं अपने परिवार के पास लौटूँगा कैसे?"

जिन्न राजकुमार बोला — "यह तुम्हारी समस्या नहीं है। यह मेरा काम है। जब तुम अपनी इस बदकिस्मती से बाहर आ जाओगे तब तुम पलक झपकने से पहले ही अपने घर पहुँच जाओगे। जब तुम ठीक हो जाओगे तब मेरे लिये यह काम और आसान हो जायेगा।"

आदमी राजकुमार ने जब उसकी यह बात सुनी तो वह तो खुशी के मारे झूम उठा। उसको लगा कि यह सब उसका सपना था। वह

बोला — "अल्लाह उसको ऊँचा रखे जिसकी वजह से नीच लोग ठीक हो जाते हैं और धनवान हो जाते हैं।"

वे सुबह तक और आगे चलते रहे कि वे एक बहुत ही चमकीली तेज़ रोशनी वाली जगह आ गये जहाँ बहुत ऊँचे ऊँचे पेड़ लगे हुए थे चिड़ियें चहचहा रही थीं बहुत सुन्दर सुन्दर बागीचे थे और उनमें सुन्दर सुन्दर महल थे।

वहाँ पहुँच कर पहले जिन्न राजकुमार अपने घोड़े से नीचे उतरा फिर उसने आदमी राजकुमार से उसके घोड़े से नीचे उतरने के लिये कहा। आदमी राजकुमार जब अपने घोड़े से नीचे उतर गया तो जिन्न राजकुमार उसे हाथ पकड़ कर एक महल में ले गया।

वहाँ जा कर उसने देखा कि एक बहुत बड़ा और शानदार राजा बैठा हुआ है। वह वहाँ उनके साथ सारा दिन रहा खाया पिया जब तक रात हुई। तब जिन्न राजकुमार उठा और आदमी राजकुमार के साथ घोड़े पर चढ़ कर वहाँ से चल दिया तो वे रात भर सफर करके सुबह को एक दूसरी जगह पहुँच गये।

अबकी बार वे एक काली जमीन पर आ गये जिस पर कोई नहीं रहता था। उस पर काले रंग के पत्थर की बहुत सारी चट्टानें थीं। उसको देख कर ऐसा लग रहा था जैसे वह नरक का कोई हिस्सा हो।

यह देख कर आदमी राजकुमार ने जिन्न राजकुमार से पूछा — "इस जमीन का नाम क्या है?"

जिन्न राजकुमार बोला — "इसे "साँवली जमीन"[178] कहते हैं। यह जिन्नों के एक राजा की जमीन है उस राजा का नाम है "ज़ुलजीनाहैन"[179]। इस राजा के ऊपर कोई हमला नहीं बोल सकता और न ही इसके राज्य में उसकी इजाज़त के बिना कोई घुस सकता है। इसलिये जब तक मैं उससे अपने घुसने की इजाज़त ले कर आता हूँ तुम तब तक यहीं ठहर कर मेरा इन्तजार करो।"

सो आदमी राजकुमार वहीं रुक गया और जिन्न राजकुमार उसको वहीं छोड़ कर कुछ देर के लिये वहाँ से चला गया। कुछ देर बाद वह लौटा वे फिर से वहाँ से चल दिये और एक सोते के पास आये जो एक काले पहाड़ से निकल रहा था।

वहाँ पहुँच कर जिन्न राज्कुमार ने आदमी राजकुमार को वहाँ उतर जाने के लिये कहा। आदमी राजकुमार अपने घोड़े से नीचे उतरा तो जिन्न राजकुमार ने उससे कहा कि वह उस सोते में से पानी पी ले।

आदमी राजकुमार ने वह पानी पी लिया तो लो आश्चर्य वह तो तुरन्त ही आदमी बन गया जैसा कि वह पहले था। उस अल्लाह की ताकत की जय हो। यह देख कर तो वह बहुत खुश हो गया पर बहुत ज़्यादा नहीं। उसने जिन्न राजकुमार से पूछा — "ओ मेरे भाई। इस सोते का क्या नाम है?"

---

[178] Translated for the words "Dusky Land"

[179] Zu-l-Jenaaheyn

जिन्न राजकुमार बोला — "इसका नाम है "स्त्री का सोता"[180]। इस सोते में से कोई स्त्री पानी नहीं पीती क्योंकि नहीं तो वह आदमी बन जाती है। अल्लाह के गुण गाओ और उसका धन्यवाद करो कि तुम इस पानी को पी कर फिर से आदमी बन गये। अब अपने घोड़े पर चढ़ जाओ।"

सो राजा के बेटे ने नीचे लेट कर अल्लाह को धन्यवाद दिया और फिर अपने घोड़े पर चढ़ गया। फिर वे सारा दिन सफर करते रहे जब तक वह जिन्न के घर तक आये। राजा के बेटे ने वहाँ बहुत आराम से अपनी रात गुजारी। फिर सारा दिन उन लोगों ने वहाँ खाया पिया।

जिन्न राजकुमार ने आदमी राजकुमार से पूछा — "क्या तुम अपने परिवार के पास आज रात को ही पहुँच जाना चाहते हो?"

आदमी राजकुमार बोला — "हाँ।"

सो जिन्न राजकुमार ने अपने पिता के एक गुलाम को वहाँ बुलाया जिसका नाम राजिज़[181] था और उससे कहा — "इस आदमी को यहाँ से अपने कन्धे पर बिठा कर ले जाओ और सुबह होने से पहले पहले इसको इसके ससुर और पत्नी के घर पहुँचा दो।"

गुलाम बोला — "मैंने सुना और मैं आपका हुकुम मानता हूँ। मैं दिल और प्रेम से वही करूँगा जो आप चाहते हैं।"

---

[180] Translated for the words "Spring of the Women"

[181] Raajiz

उसके बाद वह गुलाम कुछ पल के लिये वहाँ से गायब हो गया और फिर "ऐफ़ीत"[182] के रूप में प्रगट हुआ। जब आदमी राजकुमार ने उसको देखा तो उसके दिमाग ने काम करना बन्द कर दिया और वह उसको देखता का देखता ही रह गया।

पर जिन्न राजकुमार ने उससे कहा — "अब तुम्हारे ऊपर कोई मुसीबत नहीं आयेगी। तुम अपने घोड़े पर सवार हो जाओ और फिर इसके कन्धे पर चढ़ जाओ।

जब वह उस गुलाम के कन्धे पर बैठ गया तो जिन्न राजकुमार ने आदमी राजकुमार से कहा कि वह अपनी आँखें बन्द कर ले। उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं तो वह गुलाम आसमान और धरती के बीच में उड़ता गया।

आदमी राजकुमार उस समय अपने घोड़े के ऊपर बेहोश सा पड़ा रहा। रात के तीसरे प्रहर में वह अपने ससुर और पत्नी के महल की छत पर आ गया था।

ऐफ़ीत बोला — "अब आप उतरें।"

वह नीचे उतरा तो ऐफ़ीत फिर बोला — "अब आप अपनी आँखें खोल लें क्योंकि अब आप अपने ससुर और पत्नी के महल की छत पर आ गये हैं।"

यह कह कर उसने आदमी राजकुमार को वहाँ छोड़ा और चला गया।

---

[182] Efreet

जैसे ही दिन निकल आया और राजकुमार को होश सा आ गया तो वह महल की छत से नीचे उतरा। जब उसके ससुर ने उसको छत से नीचे उतरते देखा तो वह उससे मिलने के लिये उठ कर आया। उसको आश्चर्य हो रहा था कि वह महल की छत पर से कैसे आ रहा था।

उसने उससे पूछा — "हम लोग दूसरे लोगों को दरवाजे से अन्दर आते देखते हैं पर तुम तो आसमान से आये हो। ऐसा कैसे?"

राजकुमार बोला — "जैसा अल्लाह चाहता है वैसा ही होता है।"

जब सूरज आसमान में चढ़ आया तो उसके ससुर ने अपने वजीर से बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम करने के लिये कहा। शादी बड़े धूमधाम से मनायी गयी। राजकुमार वहाँ दो महीने तक रहा उसके बाद वह अपनी पत्नी को साथ ले कर अपने पिता के घर चला गया।

पर उस लड़की का चचेरा भाई तो बेचारा जलन से ही मर गया।

Published Books by Sushma Gupta

To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस

2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन

3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन

4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन

5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन

6 रैवन की लोक कथाऐं — प्रभात प्रकाशन

7 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट
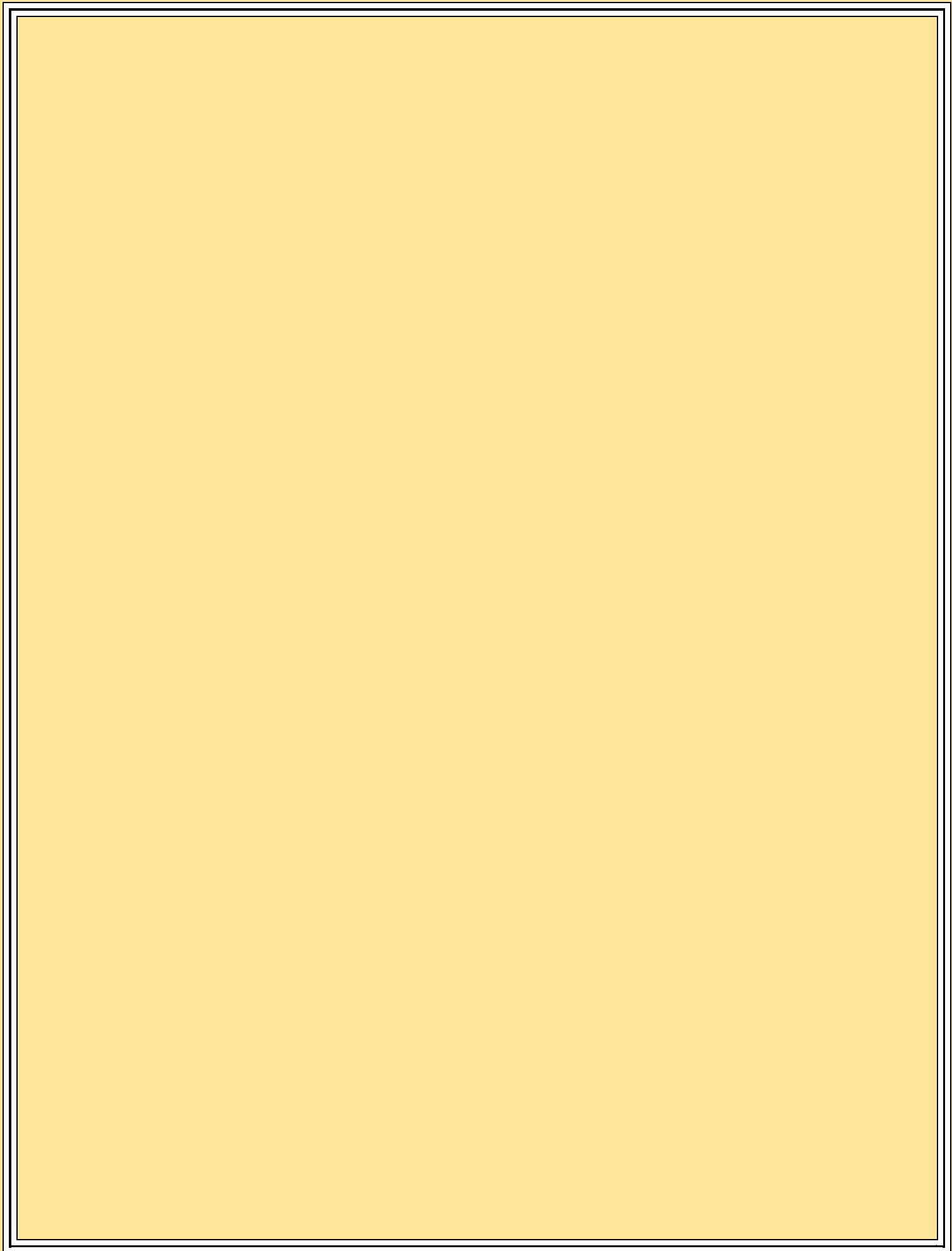
लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में —

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. 1901. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **1901**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी **2019**

2. Serbian Folklore. Tr by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. 1874. 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंग्रेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी **2019**

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal. By Rev Lal Behari Dey. 1889. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं —**1889**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। जनवरी **2019**

5. Russian Folk-Tales. By Alexander Nikolayevich Afanasief. 1889. 64 tales.
Tr by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **1916**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी **2019**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian. By Verra de Blumenthal. 1903. 9 tales.
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **1903**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी **2019**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales. Collected and Edited by Nelson Mandela. 2002. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2002**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी **2019**

8. Fourteen Hundred Cowries. By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. 1962. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियॉ – फूजा अबायोमी। **1962**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी **2019**

9. Il Pentamerone. By Giovanni Battiste Basile. 1893. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियोवानी बतिस्ते बासिले। **1893**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी **2019**

10. Tales of the Punjab. By Flora Annie Steel. 1894. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **1894**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी **2019**। दो भाग

11. Folk-tales of Kashmir. By James Hinton Knowles. 1887. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **1887**। हिन्दी अनुवाद — सुषमा गुप्ता। जून **2019**। चार भाग

12. African Folktales. By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. 1998. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **1998**। हिन्दी अनुवाद — सुषमा गुप्ता। जून **2019**

13. Orphan Girl and Other Stories. By Offodile Buchi. 2001. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियाँ – ओफ़ोडिल बूची। **2001**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जून **2019**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories. By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. 1947. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **1947**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जून **2019**

15. Folktales of Southern Nigeria. By Elphinston Dayrell. London : Longmans. 1910. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **1910**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जून **2019**

16. Folk-lore and Legends : Oriental. By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. 1889. 13 tales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **1889**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जून **2019**

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on June, 2019

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् 1943 में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। 1976 में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में 10 वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में 3 साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में 1 साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से 1993 में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर 4 साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन 2018 तक इनकी 2000 से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
जून 2019